ॐ

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

महा-महोत्सव गीताञ्जलि

सङ्कलन एवं सम्पादन

पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली

पण्डित संजय शास्त्री, तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ़

सह-सम्पादन

मङ्गलार्थी सुलभ जैन, झाँसी

मङ्गलार्थी केविन शाह, मुम्बई

प्रकाशन सहयोग

श्रीमती सुनीता, प्रेमचन्द बजाज

तन्मय, ज्ञाता बजाज

बजाज पैलेस कोटा

श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा

प्रकाशक :

तीर्थधाम मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट

सासनी - 204216, हाथरस (उत्तरप्रदेश) भारत

प्रथम संस्करण : 2000 प्रतियाँ
[मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में आयोजित, श्री आदिनाथ जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर (दिनाङ्क 16 से 23 दिसम्बर 2010) प्रकाशित]

ISBN No. :

न्योछावर राशि : रुपये 15.00

Available At -

— **TEERTHDHAM MANGALAYATAN,**
Aligarh-Agra Road, Sasni-204216, Hathras (U.P.)
Website : www.mangalayatan.com; e-mail : info@mangalayatan.com

— **Pandit Todarmal Smarak Bhawan,**
A-4, Bapu Nagar, Jaipur-302015 (Raj.)

— **SHRI HITEN A. SHETH,**
Shree Kundkund-kahan Parmarthik Trust
302, Krishna-Kunj, Plot No. 30,
Navyug CHS Ltd., V.L. Mehta Marg,
Vile Parle (W), Mumbai - 400056
e-mail : vitragva@vsnl.com / shethhiten@rediffmail.com

— **Shri Kundkund Kahan Jain Sahitya Kendra,**
Songarh (Guj.)

टाइप सेटिंग :
मङ्गलायतन ग्राफिक्स, अलीगढ़

मुद्रक :
देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर

प्रकाशकीय

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में नवनिर्मित श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर के पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर पञ्च कल्याणक महोत्सव सम्बन्धी गीतों का सङ्कलन महा-महोत्सव गीताञ्जलि प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत सङ्कलन में देव-शास्त्र-गुरु भक्ति सम्बन्धी गीत तथा वैराग्य एवं आध्यात्मिक गीतों का सङ्कलन करके भी इस प्रकाशन को अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत सङ्कलन में पण्डित अभयकुमार जैन द्वारा सङ्कलित भक्ति सरोवर, महा-महोत्सव गीताञ्जलि में संग्रहीत भक्ति गीतों के साथ-साथ श्री प्रत्युष एवं डॉ. विनोद जैन, छिन्दवाड़ा द्वारा रचित गीतों को तथा पण्डित संजयकुमार शास्त्री द्वारा रचित गीतों को भी स्थान दिया गया है। इसके लिए हम सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन को सुन्दररूप में सँवारने का कार्य हमारे आदिनाथ विद्यानिकेतन के मङ्गलार्थी छात्र सुलभ जैन, झाँसी तथा

केविन शाह मुम्बई ने किया है। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की मङ्गल कामना करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशनकर्ता के रूप में **श्रीमती सुनीता, प्रेमचन्द बजाज; तन्मय, ज्ञाता बजाज, बजाज पैलेस कोटा, श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा** के आभारी हैं।

सभी साधर्मीजन इस पुस्तक के माध्यम से भक्तिगीतों का रसास्वादन करते हुए अपनी परिणति को प्रशस्त बनाकर निजस्वभाव सन्मुख होवें – यही भावना है।

पवन जैन
तीर्थधाम मङ्गलायतन

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण खण्ड		
१)	श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय....	१
२)	जो मङ्गल चार जगत में....	२
३)	वीतरागी देव तुम्हारे	३
४)	मन्त्र जपो नवकार....	४
५)	मन्त्र णमोकार हमें प्राणों....	५
६)	पञ्च परम परमेष्ठी देखे...	६
७)	वन्दन सतगुरु चरणन....	७
८)	ए आतम है तुझको नमन....	८
९)	मन के विकार नासो....	९
१०)	ज्ञान की ज्योति जलाते....	१०
११)	भावे भजो भावे...	११
१२)	जिनवर सत्य है....	१२
१३)	चौबीसी वन्दना...	१३
१४)	मैं महापुण्य उदय से.....	१५
१५)	जय अरिहन्ता	१६
१६)	मंगल अर्हंत मंगल सिद्धा........	१७
१७)	निज आत्मा में देखो.....	१८
१८)	अहो चैतन्य आनंदमय.....	१९
१९)	जहाँ रागद्वेष से रहित.......	२०
२०)	घड़ि-घड़ि पल-पल	२०
२१)	आप्त आगम गुरूवर	२१
२२)	अभिनंदन-वंदन होऽऽऽ........	२२
२३)	तेरी पूजा ओ........	२३
२४)	ॐ मंगलम्	२४
२५)	आनंद मंगल आज हमारे	२५
देवभक्ति खण्ड		
१)	हे प्रभो चरणों में तेरे....	२६
२)	रोम-रोम से निकले......	२७
३)	रोम-रोम पुलकित हो........	२८
४)	भविक तुम वन्दुह....	२९
५)	आज हम जिनराज......	३०
६)	निरखी-निरखी मनहर........	३१
७)	मेरे मन मन्दिर में आन........	३२
८)	चाह मुझे है दर्शन की........	३३
९)	निरखो अङ्ग-अङ्ग........	३३
१०)	मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे......	३४
११)	भक्ति के उठे सरगम......	३५
१२)	दिन-रात स्वामी तेरे......	३५
१३)	कोई इत आओ जी......	३६
१४)	तुम्हारे दर्श बिन स्वामी	३७
१५)	तिहारे ध्यान की मूरत......	३८
१६)	पार लगा पार लगा......	३९
१७)	आये आये रे जिनन्दा......	३९
१८)	आओ जिनमन्दिर में आओ......	४०
१९)	दरबार तुम्हारा मनहर है......	४१
२०)	प्रभु हम सब का एक......	४२
२१)	थांकी उत्तम क्षमा पै......	४२
२२)	नाथ तुम्हारी पूजा में सब......	४३
२३)	एक तुम्हीं आधार को......	४३
२४)	प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ......	४४
२५)	वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर	४५
२६)	नेमि जिनेश्वर...	४५
२७)	तुम्हारी मूरत पे हमने......	४६
२८)	प्रभु शांति छवि तेरी अंतर......	४६
२९)	जाके सुमरन जापसों.....	४७
३०)	जपि माला जिनवर.....	४८
३१)	भवि देखि छबी भगवान......	४८
३२)	प्रभु दर्शन कर	४९
३३)	तेरी सुन्दर मूरत देख.......	४९
३४)	मनहर तेरी मूरतियाँ.....	५०

क्रम	विषय	पृष्ठ
शास्त्र भक्ति खण्ड		
१)	जिनवर चरण भक्ति वर,....	५१
२)	महिमा है, अगम जिनागम	५२
३)	सांची तो गंगा यह	५२
४)	जिन बैन सुनत मोरी	५३
५)	चरणों में आ पड़ा हूँ	५३
६)	केवलिकन्ये, वाङ्गमय गंग....	५४
७)	धन्य-धन्य जिनवाणी माता....	५४
८)	धन्य-धन्य वीतराग वाणी....	५६
९)	नमो देवि वागेश्वरी....	५७
१०)	वे प्राणी सुज्ञानी जिन....	५९
११)	भ्रात जिनवाणी सम....	५९
१२)	जिनवाणी सुन लो रे....	६०
१३)	हे जिनवाणी माता तुमको....	६०
१४)	जिनवाणी माता दर्शन....	६१
१५)	जिनवाणी माता रत्नत्रय....	६२
१६)	नित पीज्यो धी धारी....	६२
१७)	शान्ति सुधा बरसाये....	६३
१८)	वीर-हिमाचल तैं निकसी....	६४
१९)	आत्मा ही समयसार,....	६५
२०)	पञ्च परम गुरूओं ने....	६६
२१)	माँ जिनवाणी बसो हृदय...	६७
२२)	मीठे रस से भरी......	६८
गुरुभक्ति खण्ड		
१)	श्री मुनि राजत समता.....	६९
२)	म्हारा परम दिगम्बर.....	७०
३)	परम गुरु बरसत.....	७०
४)	मैं परम दिगम्बर.....	७१
५)	धन-धन जैनी साधु.....	७१
६)	धन्य मुनीश्वर आतम.....	७२
७)	नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ.....	७३
८)	हे परम दिगम्बर यती.....	७४
९)	हे परम दिगम्बर यती.....	७५
१०)	गुरुओं के उपकार को.....	७६
११)	जिन रागद्वेषत्यागा.....	७६
१२)	ऐसे साधु सुगुरु...	७७
महामहोत्सव खण्ड		
१)	ये महा-महोत्सव.....	७८
२)	प्रतिष्ठा महोत्सव मनाओ.....	८०
३)	अलीगढ़ शहर में...	८१
४)	कल्याणक आयाजी...	८२
५)	भगवान की माताजी का...	८२
६)	पंचकल्याणक आऐ, ...	८३
गर्भकल्याणक खण्ड		
१)	इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ मेरे.....	८४
२)	गर्भ कल्याणक आ गया...	८५
३)	जल भरि-भरि लाओ...	८५
४)	सुनो जी ने माँ ने...	८६
५)	मात ताहि सेवके...	८७
६)	सोलह सोलह सपने...	८८
७)	रत्नों की वर्षा कराए...	८९
८)	माता को मीठी-मीठी धुन...	८९
९)	मङ्गलायतन में पञ्च...	९०
१०)	सोती थी मरुदेवी माता...	९१
११)	सोलह-सोलह स्वपन...	९३
१२)	स्वर्ग लोक से आई रे,...	९४
१३)	इन्द्र की आज्ञा.......	९५
जन्मकल्याणक खण्ड		
१)	आया जन्मकल्याणक........	९६
२)	पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा...........	९६
३)	कुण्डलपुर वारे कुण्डलपुर...	९७
४)	नाचे रे इन्दर देव रे...	९८
५)	दिन आयो दिन आयो...	९८
६)	आज तो बधाई राजा...	१००
७)	बधाई आज मिल गाओ...	१००
८)	अमृत से गगरी भरो...	१०१
९)	सुरपति ने अपने शीश...	१०२
१०)	झुलाय दइयो पलना...	१०३

क्रम	विषय	पृष्ठ
११)	मणियों के पलने में...	१०४
१२)	मेरा पलने में झूले ललना...	१०४
१३)	चन्दन के पलना में...	१०५
१४)	त्रिशला देवी के...	१०६
१५)	आज आदीश्वर जन्मे हैं....	१०७
१६)	आज नगरी में जन्मे...........	१०८
१७)	बधाई गाओ रे!...	१०९
१८)	इन्द्र नाचे तेरी भक्ति...........	११०
१९)	छोटी-2 बइयाँ...........	१११
२०)	आनंद अंतर आज न...........	११२
२१)	म्हारे आंगण आज आई......	११३
२२)	छायो छायो छायो...........	११४
२३)	आनन्द अवसर आज...	११५
२४)	रत्नों की वर्षा ...	११६
२५)	जन्मोत्सव प्रभु	११७
२६)	नीला नीला गगन है.......	११८
२७)	त्रिशाला नन्दन	११८
२८)	प्यारी नगरी में	११९

तपकल्याणक खण्ड

क्रम	विषय	पृष्ठ
१)	निर्ग्रन्थों का मार्ग.....	१२०
२)	चले ससुराल...	१२१
३)	जन-जन को अचरज...	१२१
४)	रोम-रोम में नेमिकुंवर...	१२२
५)	गिरनारी पर तपकल्याणक...	१२३
६)	वे मुनिवर कब मिलि.....	१२३
७)	ऐसे मुविर देखे वन में...	१२४
८)	आनन्द अवसर आयो...	१२४
९)	अब विषयों में नाहि रमेंगे...	१२५
१०)	विषयों की तृष्णा को...	१२५
११)	प्रभो आपकी अनुपम...	१२६
१२)	वेश दिगम्बर धार...	१२७
१३)	प्रभु बैठे आदि कुमार.........	१२८
१४)	संसार लगने लगा..........	१२९
१५)	श्री नेमीकुंवर गिरनारी......	१३०
१६)	मङ्गल बेला आज.............	१३१
१७)	वैराग्य भावों के...........	१३२

ज्ञानकल्याणक खण्ड

क्रम	विषय	पृष्ठ
१)	घर-घर आनन्द छायो.......	१३३
२)	समवसरण स्तवन	१३४
३)	समवसरण स्तुति	१३५
४)	ओंकारमयी वाणी तेरी...	१४७
५)	अरहन्त वन्दना......	१४८
६)	सुनकर वाणी जिनवर...	१४८
७)	धन्य-धन्य है घड़ी आज...	१४९
८)	कर लो जिनवर का.....	१४९
९)	आदि जिनन्दा-2	१५०
१०)	गागर अमृत की भर......	१५१
११)	ऋषभ पधारे भैय्या.....	१५२
१२)	श्री आदीश्वर भक्ति...	१५३
१३)	अनन्त चतुष्टयवंत हुये......	१५४
१४)	श्री अरहंत छवि......	१५५
१५)	हे जिन तेरो सुजस...........	१५५
१६)	निरखत जिनचन्द्र-वदन......	१५६
१७)	सर्वज्ञता का धाम......	१५७
१८)	जय श्री ऋषभ.......	१५८
१९)	तेरी शीतल-शीतल....	१५८

मोक्षकल्याणक खण्ड

क्रम	विषय	पृष्ठ
१)	देखो जी आदीश्वर स्वामी...	१५९
२)	अशरीरी सिद्ध भगवान...	१६०

प्रासङ्गिक खण्ड

क्रम	विषय	पृष्ठ
१)	धन्य धन्य आज घड़ी	१६१
२)	अपना ही रङ्ग मोहे....	१६२
३)	रङ्ग मां..........	१६३
४)	गा रे भैया, गा रे भैया......	१६४
५)	जय जिन-शासन.......	१६५
६)	आयो आयो रे हमारो	१६६
७)	आओ रे आओ रे	१६६
८)	लहर-लहर लहराये..........	१६७

क्रम	विषय	पृष्ठ
९)	चाल म्हारा भयाला तू.....	१६७
१०)	शिखर पे कलश	१६८
११)	करलो इन्द्रध्वज	१६९
१२)	इन्द्रध्वज मण्डल.....	१६९
१३)	गगन मण्डल में.......	१७०
१४)	भावना रथ पर............	१७१
१५)	ये शाश्वत सुख का...	१७२
१६)	देवों और मानवों में...	१७२
१७)	मुनिवर आज मेरी...	१७४
१८)	धन्य-धन्य हे गौतम गुरु...	१७४
१९)	सावन की पहली	१७५
२०)	जीयरा... जीयरा...	१७६
२१)	अभिनन्दन.........	१७७
२२)	शासन ध्वज लहराओ	१७८
२३)	विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा	१७९
२४)	मेरा ज्ञान उपवन	१८०
२५)	आज मैं परम पदारथ.........	१८०
२६)	अहो भगवंत का दर्श......	१८१
२७)	रंग बरसेगा	१८२
२८)	श्री जिनवर पद	१८२
२९)	ऊँचे-ऊँचे शिखरों	१८३
३०)	हम आनन्दित	१८४
३१)	हम करें ध्वज............	१८४
३२)	मानुष जनम	१८५
३३)	लहरायेगा-लहरायेगा........	१८६
३४)	कितना सुन्दर.......	१८७

वैराग्य/उपदेश भक्ति खण्ड

क्रम	विषय	पृष्ठ
१)	वीर प्रभु का है कहना...	१८८
२)	सुन रे जिया ...	१८८
३)	जिया कब ...	१८९
४)	मोहे भावे न भैया...	१९०
५)	ओ जाग रे चेतन जाग...	१९०
६)	सोते-सोते में निकल गयी...	१९१
७)	सजधज के जिस दिन...	१९२
८)	देख तेरी पर्याय की हालत...	१९२
९)	अपूर्व अवसर...	१९३
१०)	वीर प्रभु के ये बोल	१९७
११)	करले आतम ज्ञान	१९८
१२)	आत्मा हूँ आत्मा हूँ	१९९
१३)	जैनधर्म है हमको प्यारा....	२००
१४)	ज्ञाता दृष्टा राही हूँ.....	२००
१५)	करलो आतम-ज्ञान......	२०१
१६)	सन्त साधु बनके....	२०२
१७)	चन्द क्षण जीवन	२०३
१८)	जब तेरी डोली	२०४
१९)	तू जाग रे चेतन प्राणी.......	२०५
२०)	देखो तो दिखाई देता है	२०६
२१)	जीव तू अप्पा लगता है	२०७
२२)	अपनो शुद्धातम.....	२०८
२३)	प्रेम जब अनन्त हो गया,	२०८
२४)	उठो रे सुज्ञानी जीव.......	२०९
२५)	चेतन है तू......	२१०
२६)	चलो रे भाई.......	२११
२७)	तू ही शुद्ध है.....	२१२
२८)	अरहंत सुमर मन बावरे.......	२१३
२९)	लगी ला नाभिनंदनसों.......	२१३
३०)	मैं ज्ञायक हूँ.........	२१४
३१)	अविनाशी आत्म महल.....	२१५

१

मङ्गलाचरण खण्ड

(१) श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय....

श्री अरहन्त सदा मङ्गलमय मुक्तिमार्ग का करे प्रकाश,
मङ्गलमय श्री सिद्धप्रभु जो, निजस्वरूप में करे विलास;
शुद्धात्म के मङ्गलसाधक, साधु पुरुष की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥ 1॥

मङ्गलमय चैतन्यस्वरों में परिणति की मङ्गलमय लय हो,
पुण्य-पाप की दुःखमय ज्वाला, निजआश्रय से त्वरित विलय हो;
देव-शास्त्र-गुरु को वंदन कर, मुक्ति वधू का त्वरित वरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥ 2॥

मङ्गलमय पाँचों कल्याणक मङ्गलमय जिनका जीवन है,
मङ्गलमय वाणी सुखकारी शाश्वत सुख की भव्य सदन है;
मङ्गलमय सतधर्म तीर्थ-कर्ता की मुझको सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥ 3॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान-चरणमय मुक्तिमार्ग मङ्गलदायक है,
सर्व पापमल का क्षय करके, शाश्वत सुख का उत्पादक है;
मङ्गल गुण-पर्यायमयी चैतन्यराज की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस, जब मङ्गलमय मङ्गलाचरण हो॥ 4॥

(२) जो मङ्गल चार जगत में....

जो मङ्गल चार जगत में हैं, हम गीत उन्हीं के गाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिन-चरणों में हम सादर शीश झुकाते हैं॥ टेक॥

जहाँ राग-द्वेष की गन्ध नहीं, बस अपने ही से ही नाता है,
जहाँ दर्शन-ज्ञान-अनन्तवीर्य सुख का सागर लहराता है।
जो दोष अठारह रहित हुए हम मस्तक उन्हें नवाते हैं
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीष झुकाते हैं॥ 1॥

जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित नित सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते जो अजर-अमर अविनाशी हैं।
जो हम सबके आदर्श सदा, हम उनको ही नित ध्याते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीष झुकाते हैं॥ 2॥

जो परम दिगम्बर वनवासी गुरु रत्नत्रय के धारी हैं,
आरम्भ-परिग्रह के त्यागी जो निज चैतन्य विहारी हैं।
चलते-फिरते सिद्धों से गुरु-चरणों में शीश झुकाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीष झुकाते हैं॥ 3॥

प्राणों से प्यारा धर्म हमें केवली भगवान का कहा हुआ,
चैतन्यराज की महिमामय यह वीतराग रस भरा हुआ।
इसको धारण करनेवाले भव-सागर से तिर जाते हैं,
मङ्गलमय श्री जिनचरणों में हम सादर शीष झुकाते हैं॥ 4॥

(३) वीतरागी देव तुम्हारे

वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ,
मार्ग बताया है जो जग को कह न सके कोई और यहाँ।
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥ टेक॥

है सब द्रव्य स्वतन्त्र जगत में कोई न किसी का काम करें,
अपने-अपने स्वचतुष्टय में सभी द्रव्य विश्राम करें।
अपनी-अपनी सहज गुफा में रहते पर से मौन यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥ 1॥

भाव शुभाशुभ का भी कर्ता, बनता जो दीवाना है,
ज्ञायक भाव शुभाशुभ से भी भिन्न न उसने जाना है।
अपने से अनजान तुझे भगवान बताते देव यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥ 2॥

पुण्य-पाप भी पर आश्रित है, उसमें धर्म नहीं होता,
ज्ञान भावमय निज परिणति से बन्धन कर्म नहीं होता।
निज आश्रय से ही मुक्ति है कहते श्री जिनदेव यहाँ,
वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ॥ 3॥

धन्य नैन तुम दरस लखि, धनि मस्तक लखि पाँय,
श्रवन धन्य वानी सनै, रसना धनि गुन गाय।

(४) मन्त्र जपो नवकार....

मन्त्र जपो नवकार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार;
पञ्चप्रभु को वन्दन कर लो, परमेष्ठी सुखकार ॥ टेक ॥

अरहन्तों का दर्शन करके, शुद्धातम का परिचय कर लो;
शिवसुख साधनहार, मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥ 1 ॥

सब सिद्धों का ध्यान लगालो, सिद्ध समान स्वयं को ध्यालो;
मङ्गलमय सुखकार मनुवा, मन्त्रो जपो नवकार ॥ 2 ॥

आचार्यों को शीश नवाओ, निर्ग्रन्थों का पथ अपनाओ;
मुक्ति मार्ग आराध मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥ 3 ॥

उपाध्याय से शिक्षा लेकर, द्वादशाङ्ग को शीश नवाकर; ५
जिनवाणी उर धार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥ 4 ॥

सर्व साधु को वन्दन कर लो, रत्नत्रय आराधन कर लो;
जन्म मरण क्षयकार मनुवा, मन्त्र जपो नवकार ॥ 5 ॥

आसन्न भव्य हो तुम तो भव्यता तुम्हारे जागे,
ऐसा पुरुषार्थ करो तुम निज की मति लागे।
भव सागर सूख रहा है आँखों से अपनी देखो,
सिद्धत्व तुम्हारा आया उसको अन्तर में लेखो।

(५) मन्त्र णमोकार हमें प्राणों....

मन्त्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा
यही वो जहाज जिसने लाखों को तारा
मन्त्र णमोकार....
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ऐसो पञ्च णमोकारो, सव्वपावप्पपणासणो
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मङ्गलं॥
मन्त्र णमोकार...

अरिहन्तों को नमन हमारे, अशुभ कर्म अरि हनन करे
५ सिद्धों के सुमिरण से आतम सिद्धक्षेत्र को गमन करे
भव भव में... ओ... नहीं भ्रमें दुबारा
मन्त्र णमोकार...

आचार्यों को आचार्यों तक, निर्मल निज आचार्य धरे
उपाध्याय का ध्यान करें हम, संवर का सत्कार करें
सर्व साधु को... ओ... नमन हमारा
मन्त्र णमोकार...

इसी मन्त्र से नागनागिनी, पद्मावती धरणेन्द्र हुए;
सेठ सुदर्शन को सूली से, मुक्ति मिली राजेन्द्र हुए;
अंजन चोर का... ओ... कष्ट निवारा,
मन्त्र णमोकार...

(६) पञ्च परम परमेष्ठी देखे...

पञ्च परम परमेष्ठी देखे, हृदय हर्षित होता है,
आनन्द उल्लसित होता है, हो... सम्यग्दर्शन होता है ॥ टेक ॥

दर्शन-ज्ञान-सुख वीर्यस्वरूपी, गुण अनन्त के धारी हैं,
जग को मुक्ति मार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं,
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे। हृदय ॥ 1 ॥

द्रव्यभावनोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर-अमर अविनाशी हैं।
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे। हृदय ॥ 2 ॥

५

साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं,
निज-पर के हितकारी गुरुवर, देव धर्म परिचायक हैं।
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे। हृदय ॥ 3 ॥

जिनवाणी को हृदयांगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं,
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं,
द्रव्यभाव श्रुत धारी देखे, बीस-पांच गुणधारी देखे। हृदय ॥ 4 ॥

निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी,
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी।
चलते-फिरते सिद्ध प्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे। हृदय ॥ 3 ॥

(७) वन्दन सतगुरु चरणन....

वन्दन सतगुरु चरणन वन्दन, हम करते हैं अभिनन्दन॥ टेक॥
साक्षात् हमने अरिहन्त देखे, चलते-फिरते महावीर देखे;
ज्ञान का मद नहीं ध्यानी है गुरुवर, मुक्तिरमा के स्वामी हो गुरुवर।
धन्य हुए ये नयन हमारे, पाकर तुम्हारे पावन दर्शन॥ 1 ॥
जीवदया गुरु उर में धारे, समदृष्टि से सबको निहारे;
ज्ञानी की गंगा अविरल बहती, कलमल जीवन निर्मल करती।
चातक बन के ज्ञानपिपासु निशदिन करते सेवा अर्चन॥ 2 ॥
यह नगरी है सांझ सकारे, गुरु चरणन की वाट निहारे;
करुणासागर करुणा कर दो, हम सबको प्रभु उपकृत कर दो।
योग्य नहीं हम फिर भी गुरुवर, पावन रज से करते अर्चन॥ 3 ॥

धन्य नैन तुम दरस लखि, धनि मस्तक लखि पांय,
श्रवन धन्य वानी सनै, रसना धनि गुन गाय।

(८) ए आतम है तुझको नमन....

ऐ आतम है तुझको नमन, शुद्धातम है तुझको नमन;
वीरवाणी का हम, जिनवाणी का हम।
सदा करते रहे चिन्तवन, ऐ आतम ॥ टेक ॥
राग और द्वेष हममें भरा, और मिथ्यात्व से मन भरा;
मोह और मान में, आतम अज्ञान में, अपना जीवन अभी तक रहा,
अब हटाये सभी आवरण, और रखें धर्म पथ पर कदम ॥
वीरवाणी का हम...
आज जीवन हुआ दुःखमय, ये तो है संघर्ष का समय
हर तरफ भ्रान्ति है, हर तरफ क्रान्ति है, अपना जीवन बने
शान्तिमय ॥
निज को निज से मिलायेंगे हम, ऐसे सिद्धपद को पायेंगे हम।
वीरवाणी का हम...
ऐसे जिनवर प्रभु को नमन, आतमा में सदा ही रमन;
चलि चलहूँ न हो, तुम मुक्तिश्री, जिनज्ञान की लेके शरण।
हम जिनवाणी को पढ़कर के हम, और सुधारेंगे अपना जनम।
वीरवाणी का हम...

(९) मन के विकार नासो हे महावीर....

मन के विकार नासो हे महावीर देवा,
संसार ताप छूटे, बस एक चाह देवा॥ 1॥

भव की भंवर में भ्रमते, तुम ही हो एक खेवा,
कब तक रुलूंगा भगवान, देखा न तुमसा देवा॥ 2॥

जग में तो देव सारे, हैं भव भ्रमण के मारे,
जो सेवा नाहिं चाहें, देवे स्वपद का मेवा॥ 3॥

रागादि भाव शीतल, निज आत्म माहि करके,
तुम ही हो इस भवोदधि में तारने को खेवा॥ 4॥

तुमसा समान बनकर, हो शान्त आग मेरी,
होकर के वीतरागी अरहन्त नाम देवा॥ 5॥

(१०) ज्ञान की ज्योति जलाते चलो....

ज्ञान की ज्योति जलाते चलो, निज अन्तर कि वीणा बजाते चलो,

जीवन तो आना-जाना, इसका नहीं ठिकाना।

कल क्या होगा समय धुरी पे, ये तो किसने जाना;
अपने मन को, जगाते चलो-निज अन्तर ॥ 1 ॥

जीवन अच्छे से जीने का नाम है ईश्वर पूजा
सत्य अहिंसा प्रेम से बढ़के नहीं धर्म है दूजा;
इसको सीखोऽऽऽ सिखाते चलो-निज अन्तर ॥ 2 ॥

खुद जीयो जीने दो सबको, यही धर्म का नारा,
साम्यभाव और विश्व शान्ति का फैलाओ उजियारा;
गीत धर्म के ही गाते चलो -निज अन्तर ॥ 3 ॥

काम क्रोध, मद, राग-द्वेष की जंजीरों को तोड़ो,
यही देशना है सन्तों की बुरी आदतें छोड़ो;
अपना जीवनऽऽऽ फूल खिलाते चलो निज ॥ 4 ॥

(११) भावे भजो भावे...

भावे भजो भावे भजो जिनराया
चौबीस जिनवर पाया जी पाया... ॥ टेक ॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पद्म सुपार्श्व पद वंदन;
आतम में अपनापन करके मिथ्यातम को दूर भगाया।
जिनवर भजूँ आतम लखूँ, जिनराया। चौबीस जिनवर.. ॥ 1 ॥

चन्द्र पहुप शीतल श्रेयांस, जिन,
वासुपूज्य अरहन्त महा जिन;
वीतराग परिणति प्रगटाकर निर्ग्रन्थों का पथ अपनाया।
५
समकित लहूँ चारित्र लहूँ, जिनराया। चौबीस जिनवर.. ॥ 2 ॥

विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल,
शांन्ति कुन्थु अर मल्लि सुर्निमल;
शुक्लध्यान की श्रेणी चढ़कर केवलज्ञान उपाया।
आनन्द लहूँ, कैवल्य लहूँ, जिनराया। चौबीस जिनवर.. ॥ 3 ॥

मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु,
वर्धमान जिनराज महाविभु;
स्याद्वादमय दिव्यध्वनि से, जग को मुक्ति-मार्ग बताया।
ऐसा बनूँ तुम जैसा बनूँ, जिनराया। चौबीस जिनवर.. ॥ 4 ॥

(१२) जिनवर सत्य है....

जिनवर सत्य है... जिनधर्म सत्य है... आतम सत्य है...
आओऽऽऽ सब मिल जैनों मुक्ति का मार्ग है,
जैनं जयतु शासनम् होऽऽ...2
जय, जय जैन धरम–धरम–धरम जय
जैनं जयतु शासनम्... ॥ 1 ॥

अष्टापद में ऽऽ अष्टापद में आदिनाथ है, वीरा पावापुर में
दया करो प्रभु हे जगदीश्वर, सब जायें शिवपुर में
जिनवर शरण मङ्गलं, जैनं जयतु शासनम् ॥ 1 ॥

एक सूत्र हैऽऽऽ एक देशना, एक ही सबकी वाणी
आतम ही परमातम जानो–जानो हे जग के भविप्राणी, ५
जिनवर शरण मङ्गलं, जैनं जयतु शासनम्... ॥ 2 ॥

धन्य भाग हैऽऽऽ धन्य जनम है, धन्य है पन्थ हमारा
धन्य–धन्य है माँ जिनवाणी, धन्य वो तारणहारा,
वन्दन उन्हें शत् नमन, जैनं जयतु शासनम्... ॥ 3 ॥

जिनवर सत्य है आऽऽऽ जिनधर्म सत्य है आऽऽऽ

(१३) चौबीसी वन्दना...

जो अनादि से व्यक्त नहीं था त्रैकालिक ध्रुव ज्ञायक भाव;
वह युगादि में किया प्रकाशित वन्दन **ऋषभ** जिनेश्वर राव ॥ 1 ॥

जिसने जीत लिया त्रिभुवन को मोह शत्रु वह प्रबल महान;
उसे जीतकर शिवपद पाया वन्दन **अजितनाथ** भगवान ॥ 2 ॥

काललब्धि बिन सदा असम्भव निज सन्मुखता का पुरुषार्थ;
निर्मल परिणति के स्वकाल में **सम्भव** जिनने पाया अर्थ ॥ 3 ॥

त्रिभुवन जिनके चरणों का अभिनन्दन करता तीनों काल;
वे स्वभाव का **अभिनन्द** कर पहुँचे शिवपुर में तत्काल ॥ 4 ॥

निज आश्रय से ही सुख होता यही सुमति जिन बतलाते;
सुमतिनाथ प्रभु की पूजन कर भव्यजीव शिवसुख पाते ॥ 5 ॥

पद्मप्रभु के पद पंकज की सौरभ से सुरभित त्रिभुवन;
गुण अनन्त के सुमनों से शोभित श्री जिनवर का उपवन ॥ 6 ॥

श्री सुपार्श्व के शुभ-सु-पार्श्व में जिसकी परिणति करे विराम;
वे पाते हैं गुण अनन्त से भूषित सिद्ध सदन अभिराम ॥ 7 ॥

चारु चन्द्रसम सदा सुशीतल चेतन - **चन्द्रप्रभ** जिनराज;
गुण अनन्त की कला विभूषित प्रभु ने पाया निजपद राज ॥ 8 ॥

पुष्पदन्त सम गुण आवलि से सदा सुभोभित हैं भगवान;
मोक्षमार्ग की सुविधि बताकर भविजन का करते कल्याण ॥ 9 ॥

चन्द्र किरण सम **शीतल** वचनों से हरते जग का आताप;
स्याद्वादमय दिव्यध्वनि से मोक्षमार्ग बतलाते आप ॥ 10 ॥

त्रिभुवन के श्रेयस्कर हैं **श्रेयांसनाथ** जिनवर गुणखान;
निज स्वभाव से ही परम श्रेय का केन्द्र बिन्दु कहते भगवान ॥ 11 ॥

शत इन्द्रों से पूजित जग में **वासुपूज्य** जिनराज महान;
स्वाश्रित परिणति द्वारा पूजित पञ्चमभाव गुणों की खान ॥ 12 ॥

निर्मल भावों से भूषित हैं जिनवर **विमलानाथ** भगवान;
राग-द्वेष मल का क्षय करके पाया सौख्य अनन्त महान ॥ 13 ॥

गुण अनन्तपति की महिमा से मोहित है यह त्रिभुवन आज;
जिस **अनन्त** को वन्दन करके पाऊँ शिवपुर का साम्राज्य ॥ 14 ॥

वस्तुस्वभाव धर्मधारक हैं धर्म धुरन्धर नाथ महान;
ध्रुव की धूनिमय धर्म प्रगट कर वंदित **धर्मनाथ** भगवान ॥ 15 ॥

रागरूप अङ्गारों द्वारा दहक रहा जग का परिणाम;
किन्तु शान्तिमय निज परिणति से शोभित **शान्तिनाथ भगवान** ॥ 16 ॥

कुन्थु आदि जीवों की भी रक्षा का देते जो उपदेश;
स्व-चतुष्टय से सदा सुरक्षित **कुन्थुनाथ** जिनवर परमेश ॥ 17 ॥

पञ्चेन्द्रिय विषयों से सुख की अभिलाषा है जिनकी अस्त;
धन्य-धन्य **अरनाथ** जिनेश्वर की राग-द्वेष अरि किये परास्त ॥ 18 ॥

मोह-मल्ल पर विजय प्राप्त कर जो हैं त्रिभुवन में विख्यात;
मल्लिनाथ जिन समवसरण में सदा सुशोभित हैं दिन-रात ॥ 19 ॥

तीन कषाय चौकड़ी जयकर मुनि-सु-व्रत के धारी हैं;
वन्दन जिनवर **मुनिसुव्रत** जो भविजन को हितकारी हैं ॥ 20 ॥

नमि जिनेश्वर ने निज में नमकर पाया केवलज्ञान महान;
मन-वच-तन से करूँ नमन सर्वज्ञ जिनेश्वर हैं गुणखान ॥ 21 ॥

धर्मधुरा के धारक जिनवर धर्मतीर्थ का रथ संचालक;
नेमिनाथ जिनराज वचन नित भव्यजनों के हैं पालक ॥ 22 ॥
जो शरणागत भव्यजनों को कर लेते हैं आप समान;
ऐसे अनुपम अद्वितीय पारस हैं **पार्श्वनाथ** भगवान ॥ 23 ॥
महावीर सन्मति के धारक वीर और अतिवीर महान;
चरण-कमल का अभिनन्दन है वन्दन **वर्धमान** भगवान ॥ 24 ॥

(१४) मैं महापुण्य उदय से.....

मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया ॥ टेक ॥
चार घाति कर्म नाशे ऐसे अरहंत हैं ।
५ अनन्त चतुष्टय धारी श्री भगवन्त हैं ॥
मैं अरहंतदेव की शरण आ गया ॥ 1 ॥
अष्टकर्म नाश किये ऐसे सिद्धदेव हैं ।
अष्टगुण प्रगट जिनके हुए स्वयमेव है ॥
मैं ऐसे सिद्धदेव की शरण आ गया ॥ 2 ॥
वस्तु का स्वरूप बतावे वीतराग-वाणी है ।
तीन लोक के जीव हेतु महाकल्याणी है ॥
मैं जिनवाणी माँ की शरण में आ गया ॥ 3 ॥
परिग्रह रहित दिगम्बर मुनिराज हैं ।
ज्ञान ध्यान सिवा नहीं दूजा कोई काज है ॥
मैं श्री मुनिराज की शरण पा गया ॥ 4 ॥

(१५) जय अरिहन्ता ....

जय अरिहन्ता तुम्हीं महान, जय श्री सिद्धा तुम्हीं महान।
तुझ में हमें दिखाई देती, सहज सुखों की खान॥ टेक॥

तुम हो विगत सकल अभिलाषा, तुमने जन्म मरण है नाशा।
तुमसे दृष्टि मिलायें गर हम, निजपर का हो ज्ञान॥
जय अरिहन्ता............ ॥ 1 ॥

मोक्ष मार्ग का तू परिचालक, द्रव्य भाव मम है इस लायक।
निज अनुभव के आश्रय से हम, पावें पद निर्वाण॥
जय अरिहन्ता............ ॥ 2 ॥ ५

ऋद्धि सिद्धियाँ है सर्व हैं झुकती, सोई हुई चेतना जगती।
समता ज्ञान मिले जैसे ही, शिवरमणी से राम॥
जय अरिहन्ता............ ॥ 3 ॥

कोटि सूर्य सा ज्ञान तुम्हारा, लघु दीपक हे नाथ हमारा।
झिलमिल दीप शिखा दिखलाये, तुम हो दिव्य महान॥
जय अरिहन्ता............ ॥ 4 ॥

जय अरिहन्ता तुम्ही महान। जय श्री सिद्धा तुम्ही महान।
जय जय गुरूवर तुम्ही महान। जय जिनवाणी तुम्हीं महान॥
जय अरिहन्ता............ ॥ 5 ॥

(१६) मंगल अर्हत मंगल सिद्धा........
तर्ज (चन्दन सा बदन)

मंगल अर्हत मंगल सिद्धा
मंगल साधु पद पा जाना
मंगलमय जिनवाणी माता
केवल्य कला का पा जाना
मंगल अर्हत....

ये चारों मंगल उत्तम है
मैं शरण इन्हीं की पा जाऊँ
५ इनका ही मनन सुमरण करके
अपने शुद्धातम को ध्याऊँ
अन्वेषण हो आराधन हो
फिर नित्य निरंजन पा जाना।
मंगल अर्हत....

ये पञ्चकल्याणक सुयोग मिला
निर्वाण भूमि पर आ जाना
मंगल सुयोग्य महान मिले
जिनवाणी का अमृत पाना
मेरा महंगा नरभव अब सफल बने
ऐसा कुछ गुरूवार बतलाना
मंगल अर्हन्त....

(१७) निज आत्मा में देखो.....

निज आत्मा में देखो, भगवान बस रहा है,
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ॥ टेक ॥

तुझमें करम नहीं है, तुझमें नहीं कषायें,
अपनी ही भूल चेतन, भव-भव तुझे रुलायें।
तू आज तक भी चेतन, कुंदन सा ही खरा है
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ॥ 1 ॥

भवताप को मिटाने, निज में ही शक्ति क्षमता,
अनजाने में हुई थी, दुखदायी मोह ममता।
आया मुहूर्त मंगल, हर रोम जग गया है,
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ॥ 2 ॥

भगवान आत्मा हूँ - गुरुदेव ने बताया,
पामर नहीं प्रभु हूँ - वैभव अमित दिखाया।
सिद्धों से कम नहीं हूँ - आगम भी कह रहा है
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ॥ 3 ॥

सब तीर्थों का राजा है, स्वर्णपुरी हमारा,
सर्वोच्च सौख्य पाने, गुरुदेव करे इशारा।
सिद्धायतन स्वयं हूँ, अनुभव ये कह रहा है,
मङ्गलायतन में देखो, सोना बरस रहा है ॥ 4 ॥

(१८) अहो चैतन्य आनंदमय ....

तर्ज - (है अपना दिल तो आबरा)

अहो चैतन्य आनंदमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है॥

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है॥

अनंतो शक्तियां उछले, सहज सुख ज्ञानमय बिलसे।
अहो प्रभुता! परम पावन, वीर्य का भी न पारा है॥

नहीं जन्मूं नहीं मरता, नहीं घटता नहीं बढ़ता।
अगुरुलघुरूप ध्रुव ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है॥

सहज एश्वर्यमय मुक्ति, अनंतो गुणमयी ऋद्धि।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है॥

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना।
अहो! निश्चित परमानंद, मय जीवन हमारा है॥

ज्ञानमय लोक हमारा है, ज्ञान ही रूप है मेरा।
परम निर्दोष समतामय, ज्ञान जीवन हमारा है॥

(१९) जहाँ रागद्वेष से रहित......

जहाँ रागद्वेष से रहित निराकुल, आतम सुख का डेरा।
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैन धर्म है मेरा।
जहाँ पद-पद पर है परम अहिंसा करती क्षमा बसेरा।
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैनधर्म है मेरा॥ टेक॥

जहाँ गूंजा करते, सत संयम के गीत सुहाने पावन।
जहाँ ज्ञान सुधा की बहती निशिदिन धारा पाप नशावन।
जहाँ काम क्रोध, ममता, माया का कहीं नहीं है घेरा॥१॥

जहाँ समता समदृष्टि प्यारी, सद्भाव शांति के भारी।
जहाँ सकल परिग्रह भार शून्य है, मन अदोष अविकारी।
जहाँ ज्ञानानंत दरश सुख बल का, रहता सदा सवेरा॥ २॥

(२०) घड़ि-घड़ि पल-पल ......

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निश-दिन,
प्रभुजी का सुमिरन कर ले रे।

प्रभु सुमिरेतैं पाप कटत है, जनम मरन दुख हर ले रे॥१॥

मनवचकाय लगाय चरन चित, ज्ञान हिये बिच धर ले रे॥२॥

'दौलतराम' धर्म नौका चढ़ि, भवसागरतैं तिरले रे॥३॥

(२१) आप्त आगम गुरूवर ....

तर्ज (थोड़ा सा प्यार हुआ है)

आप्त आगम गुरूवर सौख्य दातार हैं ज्ञानदतार हैं,
मुक्ती दातार हैं, आप्त आगम गुरुवर.... ॥ टेक ॥

वीतरागी छवि जिनकी, शांत मुद्रा सुपावन,
दिव्यध्वनी अमृतवर्षा, भविकजन को मन भावन
श्री अरिहंत दर्शन करना भव पार है
आप्त आगम ....

नित्य नव-नव सुखों का, सदा वेदन जो करते
५ अष्ट गुणों से शोभित, अष्टम वसुधा में वसते
तुम्ही आर्दश मेरे, महिमा अपार है
आप्त आगम ....

निष्पृही अपरिग्रही जो, सिद्धों के लघुनंदन है
मोक्षमार्गी यतियों को, मेरा शत्-शत् वंदन है
आप जिनशासन के मूल आधार हैं
आप्त आगम ....

आगम चक्षु से माता, निज की प्रभुता बताई
सात तत्व छः द्रव्यों से, विश्व रचना समझाई
सर्वज्ञ प्रभु सम माता तेरा उपकार है
आप्त आगम ....

(२२) अभिनंदन-वंदन होऽऽऽ........

अभिनंदन–वंदन होऽऽऽ अभिनंदन–वंदन
तीर्थधाम मङ्गलायतन में, मंगल अभिवादन
अभिनंदन–वंदन................ ॥ टेक ॥

उद्याचल से भानू जागे,
मोहनिशातम क्षण में भागे।
जाग रहा चेतन, जाग रहा चेतन
अभिनंदन – वंदन ....

अभिनव, नव कलरव ले उर में,
गाऐं पंक्षी मधुरिम स्वर में, ५
अवसर है पावन, अवसर है पावन
अभिनंदन – वंदन ....

सुर तरूओं के पुष्प मनोहर,
दस दिशी में आच्छादित मनहर
महक रहे उपवर, महक रहे उपवन
अभिनंदन – वंदन ....

निजकल्याण के हेतु कल्याणक,
बोधी लाभ हो पाऐं सम्यक
छूटे भव क्रंदन, छूटे भव क्रंदन
अभिनंदन – वंदन ....

(२३) तेरी पूजा ओ........

तर्ज (तेरे सुर और मेरे गीत)

तेरी पूजा ओ मेरे ईश, निश दिन चरण में रहेगा ये भी

वैरागी के मन में समाया हुआ
सरागी से तु दूर जाता हुआ।
दुनियाँ के मन्दिर में लाखों हैं देव
अनादि से स्वामी मैं भटका हुआ।
अब मैं भी जागा हूँ ओ मेरे इश
निशदिन चरण में रहेगा शीश।
तेरी पूजा................

पाऊँगा अब तेरे चरणों की धूल
जागाऊंगा आतम में समकित की धूम
श्रद्धा ज्ञान और चारित्र में
निशदिन रहूँगा मैं लवलीन
निशदिन चरण में रहेगा ये शीश।
तेरी पूजा...

(२४) ॐ मंगलम् ....

ॐ मंगलम् – ॐकार मंगलम्
णमो मंगलम् – णमोकार मंगलम्
देव मंगलम् – जिनवाणी मंगलम्
वाणी मंगलम् – जिनगुरू मंगलम्
अरहंत मंगलम् – सिद्ध मंगलम्
साधु मंगलम् – सर्व साधु मंगलम्
कुन्द मंगलम् – कुन्दकुन्द मंगलम्
अमृत मंगलम् – अमृतचंद्र मंगलम्
समय मंगलम् – समयसार मंगलम्
नियम मंगलम् – नियमसार मंगलम्
आदि मंगलम् – महावीर मंगलम्
तीर्थ मंगलम् – तीर्थंकर मंगलम्
देव मंगलम् – देव–शास्त्र मंगलम्
गुरू मंगलम् – गुरूदेव मंगलम्

(२५) आनंद मंगल आज हमारे ....

(भैरवी)

आनंद मंगल आज हमारे
आनंद मंगल आजजी ॥टेक ॥

श्रीजिन चरणकमल परसत ही
विघन गये सब भाजजी ॥१ ॥

सफल भाई जब मेरी कामना
सम्यक् हिये विराजजी ॥२ ॥

नैन वचन मन शुद्ध करन को
भेटें श्री जिन राजजी ॥३ ॥

धन्य दिवस धनि या धरी, धन्य भाग मुझ आज,
जनम सफल अब ही भयो, वन्दत जिन महाराज।
(श्री बुधजन सतसई, दोहा 20)

२

देवभक्ति खण्ड

(१) हे प्रभो चरणों में तेरे....

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये;
भावना अपनी का फल हम पा गये॥ टेक॥

वीतरागी हो तुम्ही सर्वज्ञ हो;
सप्त तत्त्वों के तुम्ही मर्मज्ञ हो।
मुक्ति का मारग तुम्ही से पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥ 1॥

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में;
किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥ 2॥

तुमने बताया जगत् के सब आत्मा;
द्रव्यदृष्टि से सदा परमात्मा।
आज निज परमात्मा पद पा गये;
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥ 3॥

(२) रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम......

रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ! नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ प्रभुजी पाऊँ न जन्म दुबारा॥ टेक॥

जिनमन्दिर में आया, जिनवर दर्शन पाया।
अन्तर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया॥
जनम-जनम तक न भूलूंगा, यह उपकार तुम्हारा॥ 1॥

अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना।
द्रव्य और गुण-पर्यायों से, जिन सम निज को माना॥
भेदज्ञान ही महामन्त्र है, मोह तिमिर क्षयकारा॥ 2॥

पञ्च महाव्रत धारूँ समिति गुप्ति अपनाऊँ।
५ निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊँ॥
पुण्य-पाप की बन्ध श्रृंखला नष्ट करूं दुखकारा॥3॥

देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चो हितकारी।
सहज शद्ध चैतन्यराज की महिमा, जग से न्यारी।
भेदज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा।
रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ! नाम तुम्हारा॥ 4॥

(३) रोम-रोम पुलकित हो.............

रोम-रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।
ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जाँय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥
जिनमन्दिर में श्री जिनराज, तनमन्दिर में चेतनराज।
तन-चेतन को भिन्न-पिछान, जीवन सफल हुआ है आज॥ टेक॥

वीतराग सर्वज्ञ देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार।
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार॥
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥1॥

दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार।
गुण अनन्त से शोभित है प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार॥
शुद्धातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥ 2॥
लोकोलोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।
लीन रहें निज शुद्धातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान॥
ज्ञायक पर दृष्टी जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥3॥

प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रगटे समभाव।
क्षणभर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव॥
रत्नत्रय-निधियाँ प्रगटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥ 4॥

(४) भविक तुम वन्दुह मनधरभाव....

भविक तुम वन्दुह मनधरभाव,
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए।
जाके दरस परम पद प्रापति,
अरु अनन्त शिवसुख लहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥1॥

निज स्वभाव निर्मल है निरखत,
करम सकल अरि घट दहिए।
सिद्ध समान प्रगट इह थानक,
निरख-निरख छवि उर गहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥2॥

अष्टकर्म-दल भञ्ज प्रगट हुई,
चिन्मूरति मनु बन रहिए।
इत स्वभाव अपनौ पद निरखहु,
जो अजरामर पद चाहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥ 3॥

त्रिभुवन मांहि अकृत्रिम-कृत्रिम,
वन्दन नित-प्रति निरवहिए।
महा पुण्य संयोग मिलत है,
भैया जिनप्रतिमा सरदहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥ 4॥

(५) आज हम जिनराज......

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये,
हाँ जी हाँ! हम आये आये ॥ टेक ॥

पुण्य-उदय से आज तिहारे,
दर्शन कर सुख पाये।
देखे देव जगत के सारे,
एक नहीं मन भाये ॥1 ॥

जन्म-मरण नित करते,
काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का,
दुखड़ा सहा न जाये ॥ 2 ॥ ५

भव-सागर में नाव हमारी,
कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर,
तारो तो तिर जाये ॥ 3 ॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी,
आकुलता मिट जाये।
''पंकज'' की प्रभु यही वीनती,
चरण-शरण मिल जाये ॥ 4 ॥

(६) निरखी-निरखी मनहर मूरति........

निरखी-निरखी मनहर मूरति,
तोरी हो जिनन्दा।
खोई-खोई आतम निज निधि,
पाई हो जिनन्दा ॥ टेके ॥

मोह दु:ख का घर है मैने,
आज सरासर देखा है, आज.... ।
आतम-धन के आगे झूठा,
जग का सारा लेखा है, जग.... ॥
मैं अपने में घुल-मिल जाऊँ,
तो पाऊँ जिनन्दा ॥1 ॥

५ तू भवनाशी मैं भववासी,
भवसागर से तिरना है, भवसागर... ।
शुद्धस्वरूपी तुझ-सा-बनकर,
शिवरमणी को वरना है, शिव...... ॥
मैं अपने में ही रम जाऊँ,
वर पाऊँ जिनन्दा ॥ 2 ॥

नादानी में अब में अब लों मैंने,
पर को अपना माना है, पर को.. ।
काया की माया में भूला,
तुझको नहिं पहिचाना है,तुझको... ॥
अब भूलों पर रोता,
ये मन मोरा हो जिनंदा ॥ 3 ॥

(७) मेरे मन मन्दिर में आन........

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान॥ टेक॥

भगवन तुम आनन्द सरोवर रूप तुम्हारा महा–मनोहर।
निश–दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान॥ 1॥

सुर–किन्नर–गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते।
गाते सब तेरा यश–गान, पधारो महावीर भगवान॥ 2॥

जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया।
तुम हो दया–निधि भगवान, पधारो महावीर भगवान॥ 3॥

भक्तजनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें।
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान॥ 4॥

आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी।
तुम हो करुणा दया निधान, पधारो महावीर भगवान॥5॥

रोम–रोम में तेज तुम्हारा, भू–मण्डल तुमसे उजियारा।
रवि–शशि तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान॥ 6॥

(८) चाह मुझे है दर्शन की........

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥ टेक॥
वीतराग-छवि प्यारी है, जग जन को मनहारी है।
मूरत मेरे भगवन् की, वीर के चरण स्पर्शन की॥ 1॥

कुछ भी नहिं श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये।
फौज भगाई कर्मन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥ 2॥

समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है।
नासादृष्टि लखो इनकी, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥ 3॥

हाथ पै हाथ धरे ऐसे, करना कछु न रहा जैसे।
देख दशा पद्मासन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥ 4॥

जो शिव आनन्द चाहो तुम, इनसा ध्यान लगाओ तुम।
विपत हरै भव भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥ 5॥

(९) निरखो अङ्ग-अङ्ग जिनवर के........

निरखो अङ्ग-अङ्ग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार॥ टेक॥
चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥ 1॥

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण-चतुर्गति होय।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥ 2॥

लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दु:खमय गति–चतुर में ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार।
यातें नासादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥ 3॥

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरसाय।
जिन–दर्शन कर निज–दर्शन पा सत्‌गरु वचन सुहाय।
यातें अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर झलके शांति अपार॥4॥

(१०) मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे......

मङ्गलमय जिनराज तुम्हारे, निश–दिन शरणे आये।
भक्ति–भाव की सरगम गाकर, चरणे शीश झुकाये॥ टेक॥

भाव–सुमन की सुर–सौरभ हो, गाती निश–दिन प्रभु गौरव को।
अमृत देती प्रभु–भक्तों को, भव सागर तिर जाये॥1॥

भाव–किरण की ज्योति जलाई, भक्ति स्वरों में आरती गवाई।
अखियाँ दर्शन को ललचाई, जन्म सफल कर जाये॥2॥

नव लय नव संगीत सुनाये, शान्त–स्वरों में बीन बजाये।
नवरस भक्ति तान सुनावो, निश दिन प्रभु–गुण गाये॥ 3॥

(११) भक्ति के उठे सरगम......

भक्ति के उठे सरगम, मैं गाऊँ तेरे गुण,
मेरे दिल में लगन, आये दरस मिलन,
प्रभु चरणों में मन है मगन ॥ टेक ॥

बीच भंवर में नाव हमारी, पार करो तुम केवल ज्ञानी।
मैं आऊँ प्रभु-चरणन में, मेरे मन में उठी है उमङ्ग ॥

नर-नारी मिल मङ्गल गायें, भक्ति के नवदीप जलायें।
सात सुरों की अंजलि गावें, भव-भव के सब कर्म छुड़ावें ॥

मन मन्दिर में आप विराजो, अन्तर में प्रभु ज्ञान जगा दो।
भव-भव के सब कर्म छुड़ादो, विनती प्रभुजी मेरी सुन लें ॥

(१२) दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ......

दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥ टेक ॥
तेरी शान्त-मूरत मुझे भा गई है।
मेरे नयनों में नजर आ गई है।
मैं अपने में अपने को कैसे समाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥1 ॥
मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया।
है गम का भरा गहरा दरिया है छाया।
ये जीवन की नैया मैं कैसे तिराऊँ,

भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥ 2 ॥
निगोद अवस्था से मानव गति तक।
तुझे लाख ढूंडा न पाया मैं अब तक।
कहाँ मेरी मन्जिल तुझे कैसे पाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥ 3 ॥
यही आस जिनवर-शरण पाऊँ तेरी,
मिट जाये मेरी ये भव-भव की फेरी।
शरण दो, तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥ 4 ॥

(१३) कोई इत आओ जी......

कोई इत आओ जी, वीतराग ध्याओ जी।
जिनगुण की आरती, संजोय लाओ जी॥ टेक॥

दया का हो दीपक, क्षमा की हो ज्योत।
तेल सत्य संयम में, ज्ञान का उद्योत।
मोह तम नशाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥ 1॥

संयम की आरती में समकित सुगंध।
दर्श ज्ञान चारित्र की हृदय में उमंग।
भेद-ज्ञान पाओजी, वीतराग ध्याओ जी॥ 2॥

नर-तन को पाय कर, भूलियो मती।
बन जा दिगम्बर महाव्रत यती।

भावना ये भावो जी, वीतराग ध्याओ जी॥ 3॥
जिनगुण की आरती में ध्यान की कला।
भव-भव के लागे सब कर्म लो गला।
भवभ्रमण मिटाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥ 4॥

(१४) तुम्हारे दर्श बिन स्वामी ......

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहिं चैन पड़ती है।
५ छवी वैरागमय तेरी मेरी आखों में फिरती है॥ टेक॥
निराभूषण विगत दूषण परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की आशा की अनी पर ये गुजरती है॥ 1॥
नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है॥ 2॥
मिले नर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है॥ 3॥
हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखीं।
शान्ति मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है॥ 4॥
जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है॥ 5॥

(१५) तिहारे ध्यान की मूरत ......

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर निजातम लौ लगाती है॥ टेक॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन–धन का ये सब मेरे विजाती हैं॥ 1॥

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी।
किसी के हाथ आयुध है किसी को नार भाती है॥ 2॥

जगत के देव हठ ग्राही, कुनय के पक्षपाती है।
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती है॥ 3॥

मुझे कुछ चाह नहीं जग की यही है चाह स्वामी जी।
जपूं तुम नाम की माला जो मेरे काम आती है॥ 4॥

तुम्हारी छवि निरख स्वामी निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी जो भक्तों को सुहाती है॥ 5॥

(१६) पार लगा पार लगा ......

पार लगा पार लगा पार लगाना, नाथ मेरी नाव फंसी पार लगाना।
हो.......तुम सम और ना मांझी, ओ स्वामीजी ॥ टेक ॥

चार गति का गहन सरोवर, चौरासी लख लहर-लहर पर।
डगमग डोले नैया, ओ स्वामी जी ॥ 1 ॥

विषय-कषाय मगर मुँह फाड़े, घूम रहे चहुँ विषधर काले।
पाप भंवर है भारी, ओ स्वामीजी ॥ 2 ॥

सम्यक्-रत्नत्रय को पाकर, सुखी हुए हो मोक्ष में जाकर।
हम भी समकित पायें, ओ स्वामीजी ॥ 3 ॥

कर्म काट तुम सम पद पाऊँ, जीवन में सौभाग्य ये पाऊँ।
लहूँ मोक्ष सुखकार, ओ स्वामीजी ॥ 4 ॥

(१७) आये आये रे जिनन्दा ......

आये आये रे जिनन्दा, आये रे जिनन्दा तोरी शरण में आये।
कैसे पावें................हो कैसे पावें, तुम्हारे गुण गावें रे ॥

मोह में मारे-मारे, भव-भव में गोते खाये।
तोरी शरण में आये, हो........आये आये रे जिनन्दा ॥ टेक ॥

जग झूठे से प्रीत लगाई, पाप किये मन माने।
सद्‌गुरु वाणी कभी न मानी, लागे भ्रम रोग सुहाने ॥1 ॥

आज मूल की भूल मिटी है, तव दर्शन कर स्वामी।
तत्त्व चराचर लगे झलकने, घट-घट अन्तरयामी॥ 2॥

जन्म-मरण रहित पद पावन, तुम-सा नाथ सुहाया।
वो सौभाग्य मिले अब सत्वर, मोक्ष-महल मन भाया॥ 3॥

(१८) आओ जिनमन्दिर में आओ......

आओ जिनमन्दिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ।
जिनशासन की महिमा गाओ,
आया आया रे अवसर आनन्द का॥ टेक॥

हे जिनवर तब शरण में, सेवक आयो आज।
शिवपुर-पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज॥
प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ चहुँगति दुख से शीघ्र छुड़ाओ।
दिव्यध्वनि अमृत बरसाओ,
आया प्यासा में सेवक-आनन्द का॥ 1॥

जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय।
मोह-महातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय॥
शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ, निर्मल भेदज्ञान प्रगटाओ।
अब विषयों से चित्त हटाओ,
पाओ पाओ रे मारग निर्वाण का॥ 2॥

चिदानन्द चैतन्मय, शुद्धात्म को जान।
निज स्वरूप में लीन हो पाओ केवलज्ञान॥
नव केवलब्धि प्रगटाओ, फिर योगों को नष्ट कराओ
अविनाशी सिद्धपद को पाओ,
आया आया रे अवसर आनन्द का॥ 3॥
आओ जिनमन्दिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ॥

(१९) दरबार तुम्हारा मनहर है......

प्रभु दर्शन कर हर्षाये हैं, दरबार तुम्हारे आए हैं॥ टेक॥
भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्ति भी होगी चाह हमारी।
भाव रहे नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥ 1॥

जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा।
शरणे जो भी आये हैं, निज आतम को लख पाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥ 2॥

विनय यही है प्रभु हमारी, आतम की महके फुलवारी।
अनुगामी हो तुम पद पावन 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं॥
दरबार तुम्हारे आए हैं॥ 3॥

(२०) प्रभु हम सब का एक......

प्रभु हम सब का एक, तू ही है तारण हारा रे।
तुम को भूला, फिरा वही नर मारा-मारा रे॥ टेक॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया।
फूला मन यह हुआ सफल मेरा जीवन सारा रे॥ 1॥

भक्ति में जब चित्त लगाया, चेतन में तब चित ललचाया।
वीतरागी देव करो अब भव से पारा रे ॥ 2॥

अब तो मेरी ओर निहारो, भव समुद्र से नाव उबारो॥
''पंकज'' का लो हाथ पकड़ मैं पाऊँ किनारा रे॥ 3॥

जीवन में मैं नाथ को पाऊँ, वीतरागी भाव बढ़ाऊँ।
भक्ति भाव से प्रभु चरण में जाऊँ-जाऊँ रे ॥4॥

प्रभु हम सब का एक, तू ही है तारण हारा रे॥

(२१) थांकी उत्तम क्षमा पै ......

थांकी उत्तम क्षमा पै जी अचम्भो म्हानें आवे,
किस विधि कीने करम चकचूर॥ टेक॥

एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, पास न तिल-तुष मात्र हुजूर।
दूजे जीव दया के सागर, तीजे सन्तोषी भरपूर॥ 1॥

चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी तारण तरण जगत मशहूर।
कोमल वचन सरल सत्वक्ता निर्लोभी संयम तप सूर॥ 2॥

कैसे ज्ञानावरणी नास्यौ, कैसे कर्यो अदर्शन चूर।
कैसे मोह-मल्ल तुम जीत्यो, कैसे किये घातिया दूर॥ 3॥

कैसे केवलज्ञान उपायो, अन्तराय कैसे निरमूल।
सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, तो भी नहीं प्रभु तुमकू गरूर ॥ 4 ॥

करत आश अरदास नैनसुख, दीजे यह मोहे दान जरूर।
जनम-जनम पद पंकज सेवूँ और न चित कछु चाह हुजूर ॥5 ॥

(२२) नाथ तुम्हारी पूजा में सब......

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया॥ टेक॥

पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया॥ 1 ॥

जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत तप आदि स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया॥ 2 ॥

अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।।
पर लक्षी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया॥ 3 ॥

(२३) एक तुम्हीं आधार को ......

एक तुम्हीं आधार को जग में, अय मेरे भगवान।
कि तुमसा और नहीं बलवान।

सम्हल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान।
कि तुमसा और नहीं बलवान॥ टेक॥
आया समय बड़ा सुखकारी, आतम बोध कला विस्तारी।
मैं चेतन तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी॥
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षय निधि महान॥1॥
दुनियाँ में एक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा॥
मैं शिव भूप रूप सुख कंदा, ज्ञाता दृष्टा तुम सा बन्दा॥
मुझ कारज के कारण तुम हो और नहीं मतिमान॥2॥
सहज स्वभाव भाव दरशाऊँ पर परिणति से चित्त हटाऊँ।
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ सिद्धसमान स्वयं बन जाऊँ॥
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है सौभाग्य प्रधान॥ 3॥

(२४) प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ ......

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ फिर जग कीच बीच नहीं आऊँ॥ टेक॥
जल गंधाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनन्द जनक कनक भाजन धरि, अर्घ अनर्घ हेतु पद ध्याऊँ॥ 1॥
आगम के अभ्यास मांहि पुनि चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतनि की संगति तजि के मैं, अन्त कहूँ इक छिन नहीं जाऊँ॥ 2॥
दोष वाद में मौन रहूँ फिर, पुण्य पुरुष गुण निश दिन गाऊँ।
राग दोष सब ही को टारी, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ॥ 3॥
बाहिर दृष्टि खेंच के अन्दर, परमान्द स्वरूप लखाऊँ।
'भागचन्द' शिव प्राप्त न जोलों तोलों तुम चरणांबुज ध्याऊँ॥ 4॥

(२५) वन्दों अद्‌भुत चन्द्रवीर जिन ......

वन्दों अद्‌भुत चन्द्रवीर जिन, भविचकोर चित हारी।
चिदानन्द अंबुधि अब उछर्यो भव तप नाशन हारी॥ टेक॥
सिद्धारथ नृप कुल नभ मण्डल, खण्डन भ्रमतम भारी।
परमान्द जलधि विस्तारन, पाप ताप छय कारी॥ 1॥
उदित निरन्तर त्रिभुवन अन्तर, कीरत किरन पसारी।
दो मलंक कलंक अखकि, मोह राहु निरवारी॥ 2॥
कर्मावरण पयोध अरोधित, बोधित शिव मग चारी।
गणधरादि मुनि उडुगन सेवत, नित पूनम थिति धारी॥ 3॥
अखिल अलोकाकाश उल्लंघन, जासु ज्ञान उजयारी।
५ ''दौलत'' तनसा कुमुदिनि-मोदन, ज्यों चरम जगवारी॥ 4॥

(२६) नेमि जिनेश्वर...

नेमि... जिनेश्वर तेरी जय जयकार करें हम सारे...॥ टेक॥
भव भयहारी मम हितकारी, तुम हो ज्ञाता-तुम हो दृष्टा;
प्राणी मात्र के प्रभु आपने सारे कष्ट निवारे...॥ 1॥
विघ्न विनाशक स्वपरप्रकाशक, तुम्ही महंता तुम भगवंता;
तीन जगत् के सारे ज्ञेयाकार निहारे...॥ 2॥
ध्येय प्रकाशक हेय विनाशा, उपादेय निज तुम दर्शाया;
इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र तुम्हारी आरती उतारें...॥ 3॥

(२७) तुम्हारी मूरत पे हमने देखा ......

तर्ज (तुम्हारी नजरों में हमने देखा है)

तुम्हारी मूरत पे हमने देखा गजब की समता झलक रही है।
तुम्हारे अन्तर की रश्मियों से, अनन्त सृष्टि झलक रही है॥

हजारों भानुओं की प्रभा भी, शर्म से मस्तक झुका रही है।
तुम्हें विलोकन को इन्द्र तरसे, नव निधियाँ छटपटा रही हैं॥

अनन्त गरिमा है उनकी हमको, मिले नहीं जग में कोई ऐसा।
पुण्य पाप का ना होवे कीचड़, दिव्य ध्वनि अब बरस रही है॥

लाख चौरासी में आना जाना, नहीं मिली एक समय की फुरसत।
अजर अमर पद पायेंगे हम सब, गजब दामिनी दमक रही है॥

तुम्हारी मूरत पे हमने देखा, गजब की समता झलक रही है।
तुम्हारे अन्तर की रश्मियों से अनन्त सृष्टि झलक रही है॥

(२८) प्रभु शांति छवि तेरी अंतर......

(तर्ज : देदी हमें आजादी बिना...)

प्रभु शांति छवि तेरी अंतर में है समाई
प्रत्यक्ष देख मूरत, शांति हृदय में छाई
शुभ ज्ञान ज्योति जागी आतम स्वरूप जाना
प्रत्यक्ष आज देखा चैतन्य का खजाना
जो दृष्टि पर में भ्रमती, वह लौट निज में आई।–प्रभु

अक्षय निधि को पाने, चरणों में प्रभु के आया
पर प्रभु ने मूक रहकर, मुझको भी प्रभु बताया
अंतर में प्रभुता मेरे निश्चय प्रतीति आई।-प्रभु

हे देव आपको लख खुदही हुआ अकामी
है आश पर की झूठी मैं पूर्ण निधि का स्वामी
पर्याय हीनता से मुझमें कमी न आई।-प्रभु

मम भाव अभाव शक्ति पामरता मेट देगी
अभाव भाव शक्ति, प्रभुता विकास देगी
निश्चित होय दृष्टि निज द्रव्य में रमाई।-प्रभु

सर्वोत्कृष्ट निज प्रभु, तजकर कहीं न जाऊँ
जिन, बहुत धक्के खाये, विश्राम निज में पाऊँ
५ हो नमन कोटिशः प्रभु शिव सुख डगर बताई।-प्रभु

(२९) जाके सुमरन जापसों.....

जाके सुमरन जापसों, भव भव दुख भाजै हो ॥आतम ॥

केवल दरसन ज्ञान मैं, थिरतापद छाजै हो।
उपमाको तिहुँ लोक में, कोऊ वस्तु न राजै हो ॥ आतम ॥१ ॥

सहै परीषह भार जो, जु महाव्रत साजै हो।
ज्ञान बिना शिव ना लहै, बहुकर्म उपाजै हो ॥ आतम ॥२ ॥

तिहूँ लोक तिहुँ काल में, नहिं और इलाजै हो।
'द्यानत' ताकों जानिये, निज स्वारथकाजै हो ॥ आतम ॥३ ॥

(३०) जपि माला जिनवर नामकी...........

जपि माला जिनवर नाम की।
भजन सुधारससों नहिं धोई, सो रसना किस काम की ॥जपि. ॥
सुमरन सार और सब मिथ्या, पटतर धूंवा नाम की।
विषम कमान समान विषय सुख, काय कोथली चाम की ॥१ ॥ जपि. ॥

जैसे चित्र–नाग क मांथै, थिर मूरति चित्राम की।
चित आरूढ़ करो प्रभु ऐसे, खोय गुंडी परिनाम की ॥२ ॥ जपि. ॥

कर्म बैरि अहनिशि छल जोवैं, सुधि न परत पल जाम की।
'भूधर' कैसे बनत विसारैं, रटना पूरन राम की ॥३ ॥जपि. ॥

(३१) भवि देखि छबी भगवान की...........

भवि देखि छबी भगवान की ॥टेक ॥
सुन्दर सहज सोम आनन्दमय, दाता परम कल्यान की ॥भवि. ॥

नासादृष्टि मुदित मुखवारिज, सीमा सब उपमान की।
अंग अडोल अचल आसन दिढ़, वही दशा निज ध्यान की ॥१ ॥भावि. ॥

इस जोगासन जोगरीतिसौं, सिद्धि भई शिवथान की।
ऐसे प्रगट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखान की ॥२ ॥भवि. ॥

जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत न रंचक आनकी।
तृपत होत 'भूधर' जो अब ये, अंजुलि अम्रतपान की ॥३ ॥भवि. ॥

(३२) प्रभु दर्शन कर ....

प्रभु दर्शन कर जीवन की, भीड़ भगी मेरे कर्मन की ॥टेक॥

भव बन भ्रमता हारा था पाया नहीं किनारा था।
घड़ी सुखद आई सुवरण की ॥१ ॥ भीड़ भगी ॥

शान्त छबी मन भाई है, नैनन बीच समाई है।
दूर हटूँ नहीं पल छिन भी ॥२ ॥भीड़ भगी ॥

निज पद का 'सौभाग्य' वरूं, अरु न किसी की चाह करूँ।
सफल कामना हो मन की ॥३ ॥ भीड़ भगी ॥

५

(३३) तेरी सुन्दर मूरत देख प्रभो.......

तेरी सुन्दर मूरत देख प्रभो, मैं जीवन दुख सब भूल गया।
यह पावन प्रतिमा देख प्रभो ॥ टेक ॥

ज्यों काली घटायें आती हैं, त्यों कोयल कूक मचाती है।
मेरा रोम रोम त्यों हर्षित है, हाँ हर्षित है ॥
यह चन्द्र छवि जिन देख प्रभो ॥ १ ॥

दोष के हरने वाले, हो तुम मोक्ष के वरनेवाले।
मेरा मन भक्ति में लीन हुआ, हाँ, लीन हुआ ॥
इसको तो निभाना देख प्रभो ॥ २ ॥

हर श्वांस में तेरी ही लय हो, कर्मों पर सदा विजय भी हो।
यह जीवन तुझसा जीवन हो, हाँ जीवन हो ॥
'सौभाग्य' यह ही लिख लेख प्रभो ॥ ३ ॥

(३४) मनहर तेरी मूरतियाँ.....

मनहर तेरी मूरतियाँ, मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया, पाया, तेरा दर्श पाया॥

प्यारा प्यारा सिंहासन अति भा रहा, भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा, छा रहा॥
पदमासन अति सोहे रे, नयना उमगे हैं मेरे।
चित्त ललचाया पाया॥ तेरा दर्शन पाया॥१॥

तव भक्ति से भव के दुख मिट जाते हैं, जाते हैं।
पापी तक भी भव सागर तिर जाते हैं, जाते हैं॥
शिव पद वही पाये रे, शरणाऽगत में तेरी॥
जो जीव आया, पाया॥ तेरा दर्श पाया॥२॥

सांच कहूं कोई निधि मुझको मिल गई मिल गई।
जिसको पाकर मन की कलियाँ खिल गई, खिल गई॥
आशा पूरी होगी रे, आशा लगा के वृद्धि,
तेरे द्वार आया, पाया॥ तेरा दर्श पाया. ॥३॥

३
शास्त्र भक्ति खण्ड

(१) जिनवर चरण भक्ति वर गंगा,....

जिनवर चरण भक्ति वर गंगा,
ताहि भजो भवि नित सुखदानी।
स्याद्वाद हिम गिरि तें उपजी,
मोक्ष महासागरहि समानी॥ टेक॥

ज्ञान-विराग रूप दोऊ ढाये,
संयम भाव लहर हित आनी।
धर्मध्यान जहाँ भंवर परत हैं,
शम-दम जामें, सम-रस पानी ॥1॥

जिन-संस्तवन तरंग उठत है,
जहाँ नहीं भ्रम कीच निशानी।
मोह-महागिरि चूर करत है,
रत्नत्रय शुद्ध पंथ ढलानी ॥2॥
सुर-नर-मुनि-खग आदि पक्षी,
जहाँ रमत नित समरस ठानी।
'मानिक' चित्त निर्मलस्थान करी,
फिर नहीं होत मलिन भवि प्राणी॥ 3॥

(२) महिमा है, अगम जिनागम ....

महिमा है, अगम जिनागम की ॥ टेक ॥

जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ॥ 1 ॥

रागादिक दुःख कारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की ॥ 2 ॥

ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ॥ 3 ॥

कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परम पराक्रम की ॥ 4 ॥

'भागचन्द' शिवलालच लाग्यो, पहुँच नहीं है जहँ जम की ॥ 5 ॥

(३) सांची तो गंगा यह ....

सांची तो गंगा यह वीतराग वाणी।
अविच्छिन्न धारा निजधर्म की कहानी॥ टेक ॥

जामें अति ही विमल, अगाध ज्ञान पानी।
जहाँ नहीं संशयादि, पङ्क की निशानी॥ 1 ॥

सप्तभङ्ग जहँ तरङ्ग, उछलत सुखदानी।
सन्त चित मरालवृन्द, रमें नित्य ज्ञानी॥ 2 ॥

जाके अवगाहनतै, शुद्ध होय प्रानी।
भागचन्द निहचैं, घटमाहिं या प्रमानी॥ 3 ॥

(४) जिन बैन सुनत मोरी ....

जिन बैन सुनत मोरी भूल भगी॥ टेक॥
कर्मस्वभाव भाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी ॥1 ॥
निज-अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष-तुष मैल पगी ॥2 ॥
स्याद्वाद धुनि निर्मल जल तें, विमल भई समभाव लगी॥ 3॥
संशय-मोह भरमता विघटी, प्रगटी आतम सोंज सगी॥ 4॥
दौल अपूरव मङ्गल पायो, शिवसुख लेन होंस उमगी॥ 5॥

५

(५) चरणों में आ पड़ा हूँ ....

चरणों में आ पड़ा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्वादशांग वाणी॥ टेक॥
मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा।
आपा-पराया भासा, हो भानु के समानी॥ 1॥
षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया।
भवफन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी॥ 2॥
रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में।
ठाड़े है मोक्ष मग में, तकरार मोसों ठानी॥ 3॥
दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता।
होवे सुदर्शन साता, नहिं जग में तेरी सानी॥ 4॥

(६) केवलिकन्ये, वाङ्गमय गंग....

केवलिकन्ये, वाङ्गमय गंगे, जगदम्बे, अघ नाश हमारे।
सत्य-स्वरूपे, मङ्गलरूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे॥ टेक॥

जम्बूस्वामी गौतम-गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे।
जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे॥ 1॥

कुन्दकुन्द, अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे।
तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे॥ 2॥

तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे।
तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य विचारे॥ 3॥

भव-भय पीड़ित, व्यथित-चित्त जन जब जो आये शरण तिहारे। ५
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे॥ 4॥

जब तक विषय-कषाय नशें नहिं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे,
तब तक 'ज्ञानानन्द' रहै नित, सब जीवन में समता धारे॥ 5॥

(७) धन्य-धन्य जिनवाणी माता....

धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है,
हमारी नैया खेता है ॥1॥

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है,
जगत का फेरा मिटता है ॥ 2 ॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्ति पथ, शुभ व्यवहार उचरती।
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है,
महा मिथ्यातम धुलता है ॥ 3 ॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें।
माता तेरी वर्षा में, निजानन्द झरना झरता है,
अनुपमानन्द उछलता है ॥ 4 ॥

नव-तत्त्वों में छुपी हुई, जो ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द चैतन्यराज का, दर्शन सदा कराती।
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है,
सम्यग्दर्शन होता है ॥ 5 ॥

(८) धन्य-धन्य वीतराग वाणी....

धन्य-धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानन्द की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी॥ टेक॥

उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी॥ 1॥

नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद अभेद।
अनेकांतरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी॥ 2॥

भाव शुभाशुभ बन्धस्वरूप, शुद्ध चिदानन्दमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी॥ 3॥

चिदानन्द चैतन्य आनन्द धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी॥ 4॥

(९) नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी....

मुख ओंकार धुनि सुनि अर्थ गणधर विचारै।
रचि आगम उपदिसे भविक जीव संशय निवारै॥

दोहा

सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन।
छन्द भुजङ्गप्रयागतै अष्टक कहों बखान॥ 1॥

भुजङ्गप्रयात

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता,
विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता।
दुराचार-दुनै हरा शंकरानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 2॥

सुधाधर्मसंसाधनी धर्मशाला,
सुधातापनिर्नाशिनी मेघमाला।
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 2॥

अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा,
कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा।
चिदानन्द-भूपाल की राजधानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 3॥

समाधानरूपा अनूपा अक्षुद्रा,
अनेकान्तधा स्याद्वादाड्कमुद्रा।
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 4॥

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा,
श्रुतज्ञानीरूपी मतिज्ञानशोभा।
महापावनी भावना भव्यमानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 5॥

अतीता अजीता सदा निर्विकारा
विषैवाटिका खंडिनि खड्ग-धारा।
पुरापापविक्षेप कर्तृ कृपाणी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 6॥

अगाधा अबाधा निरंध्रा निराशा,
अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा।
निशंका निरंका चिंदका भवानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 7॥

अशोका मुदेका विवेका विधानी
जगज्जन्तुमित्रा विचित्रावसानी।
समस्तावलोका निरस्ता निदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ 8॥

उल्लाला

जे आगम रुचिधरैं, जे प्रतीति मन मांहि आनहि।
अवधारहिंगे पुरुष, समर्थ पद अर्थि आनहिं॥

दोहा

जे हित हेतु बनारसी, देहिं धर्म उपदेश।
ते सब पावहिं परम सुख, तज संसार कलेश॥

(१०) वे प्राणी सुज्ञानी जिन जानी ....

वे प्राणी सुज्ञानी जिन जानी जिनवाणी ॥ टेक ॥
चन्द्र सूर हू दूर करै नहिं, अन्तर तम की हानी ॥ 1 ॥
पक्ष सकल नय भक्ष करत है, स्याद्वाद में सानी ॥ 2 ॥
द्यानत तीन भवन मन्दिर में दीवट एक बखानी ॥ 3 ॥
पढ़ें सुनें ध्यावें जिनवाणी, चरणन शीश नमामी ॥ 4 ॥

(११) भ्रात जिनवाणी सम ....

५ भ्रात जिनवाणी सम नहिं आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥ टेक ॥
एकान्तों का नहीं ठिकाना, स्याद्वाद का लखा निशाना।
मिटता भव-भव का अज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥ 1 ॥
केवलज्ञानी की यह वाणी, खिरे निरक्षर तदि समझानी।
सुरनर तिर्यंच सुनतें आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥ 2 ॥
गणधर हृदय विराजी माता, ज्ञानस्वभाव सहज झलकाता।
सुनत चिन्तत हो भेदविज्ञान, जान श्रुतपंचमित पर्व महान ॥ 3 ॥
भविजन प्रीतिसहित चितधारे, रवि शशि सम तम को परिहारे।
उर घट प्रगटे पूरने आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥ 4 ॥
मोक्ष दायिका है जिनमाता, तुम पूजक सम्यक निधिपाता।
नन्द भी अपने आश्रित जान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥ 5 ॥

(१२) जिनवाणी सुन लो रे ....

जिनवाणी सुन लो रे भैया, जिनवाणी सुन लो रे ॥ टेक ॥
अनन्त भव यूँ ही खोये, पर का बोझा ढोये।
तेरी कथा तुझको सुनावें-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥ 1 ॥

पञ्चपरावर्तन दुःखड़े सुनाकर,
दुर्लभ नरभव का ज्ञान कराकर।
अब ना सुनी तो फिर कौन कहेगा-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥ 2 ॥

सिद्ध स्वरूपी तू जग में है घूमे,
आनन्द सुखमय प्रभु खुद को हैं भूले।
जिनवाणी से अपना आतम पहचान ले-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥ 3 ॥ ५

चिदान्द ध्रुव का दर्शन कराकर,
वीतरागी सुख का अमृत पिलाकर।
जाग रे क्यों मोह-नींद में सोये-सोये-2 ॥ जिनवाणी सुन. ॥ 4 ॥

(१३) हे जिनवाणी माता तुमको ....

हे जिनवाणी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।
शिवसुखदानी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम ।।टेक ॥
तू वस्तु स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे।
स्याद्वाद विख्याता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम ॥ 1 ॥
तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन।
हे तीन जगत की माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको..... ॥ 2 ॥

तू लोका-लोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे।
हे विश्व तत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम तुमको...... ॥ 3 ॥
शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रगटावे।
निज आनन्द अमृत दाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको...... ॥ 4 ॥
हे मात! कृपा अब कीजे परभाव सकल हर लीजे।
शिवराम सदा गुण गाता, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको...... ॥ 5 ॥

(१४) जिनवाणी माता दर्शन ....

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ॥ टेक ॥

प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधर जी को ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ॥ 1 ॥

योनि लाख चौरासी मांही, घोर महादु:ख पायो।
तेरी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो॥ 2 ॥

जानै थाँको शरणा लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनो।
जनम-मरण मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनों॥ 3 ॥

ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता।
द्वादशांग चौदह पूरव की, कर दो हमको ज्ञाता॥ 4 ॥

(१५) जिनवाणी माता रत्नत्रय ....

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये॥ टेक॥

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण से, काल अनादि घूमे,
सम्यग्दर्शन भयौ न तातें, दुःख पायो दिन दूने॥ 1॥

है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता।
हम पावैं निजस्वरूप आपनों, क्यों न बनै गुण ज्ञाता॥ 2॥

जीव अनन्तानन्त पठाये स्वर्ग मोक्ष में तूने।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने॥ 3॥

भव्य जीव है पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारे।
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण गण सारे॥ 4॥

औगुण तो अनेक होत है, बालक में ही माता।
पैं अब तुमसी माता पाई, क्यों न बनें गुण ज्ञाता॥ 5॥

(१६) नित पीज्यो धी धारी ....

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा सम जानिके॥ टेक॥

वीर मुखारविंदतै प्रगटी, जन्म-जरा भयटारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी॥ 1॥

सलिल समान कललमलगंजन, बुधमनरंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी॥ 2॥

कल्याणकतरु उपवनधरिनी, तरिनि भवजलतारी।
बन्धविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी॥ 3॥
स्वपरस्वरूप प्रकाशन को यह, भानु कला अविकारी।
मुनि-मन-कुमुदिनि-मोदन शशिभा, शमसुख सुमन सुवारी॥ 4॥
जाको सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग हितकारी॥ 5॥
कोटि जीभ सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी।
दौल अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी॥ 6॥

(१७) शान्ति सुधा बरसाये ....

शान्ति सुधा बरसाये जिनवाणी,
वस्तुस्वरूप बताये जिनवाणी॥ टेक॥
पूर्वापर सब दोष रहित है,
पाप क्रिया से शून्य शुद्ध है।
परमागम कहलाये जिनवाणी॥ 1॥
परमागम भव्यों को अर्पण,
मुक्ति वधु के मुख का दर्पण।
भव सागर से तारे जिनवाणी॥ 2॥
राग रूप अंगारों द्वारा
महा क्लेश पाता जग सारा।
सजल मेघ बरसाये जिनवाणी॥ 3॥

सप्त तत्त्व का ज्ञान कराये,
अचल विमल निजपद दरसावे।
सुख सागर लहराये जिनवाणी ॥ 4 ॥

(१८) वीर-हिमाचल तैं निकसी ....

वीर–हिमाचल तैं निकसी, गुरु–गौतम के मुख–कुण्ड ढरी है।
मोह–महाचल भेद चली, जग की जड़ता–तप दूर करी है ॥ 1 ॥

ज्ञान–पयोनिधि माँहि रली, बहुभङ्ग–तरङ्गनि सौं उछरी है।
ता शुचि–शारद गंगनदी प्रति, मैं अंजलि करि शीश धरी है ॥ 2 ॥

या जग–मन्दिर में अनिवार, अज्ञान–अन्धेर छयौ अति भारी।
श्रीजिन की धुनि दीपशिखा–सम, जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥ 3 ॥

तो किस भाँति पदारथ–पाँति, कहाँ लहते ? रहते अविचारी।
या विधि सन्त कहैं धनि हैं, धनि हैं, जिन–बैन बड़े उपगारी ॥ 4 ॥

(१९) आत्मा ही समयसार, म्हाने ....

तर्ज (मोरी पतली कमर नाड़ो जुबोदार लइयो)

आत्मा ही समयसार, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो 2
जिनवाणी सिखलइयो, कर्मन को खियलइयो
आत्मा ही समयसार, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो

तुम सम्मेदाचल जइयो, अरु सिद्ध शिला बतलइयो ।2
करवइयो 3 भेद-विज्ञान, म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो प्रवचन में लेकर जइयो
आत्मा 3 ही है समयसार...........

तुम गिरनारी जी जइयो, दशलक्षण पर्व मनइयो 2
बतलइयो 3 धर्म महान म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
जिनवाणी सिखलइयो सिद्धशिला लेजइयो
आत्मा 3 ही है......................

तुम अष्टापद जी जइयो, आतम अनात्म समझइयो 2
दर्शइयो 3 सृष्टि-विधान म्हाने जिनवाणी सी खुलइयो
जिनवाणी सिखलइदो, तुम आतम ध्यान लगइयो
आत्मा 3 ही है समयसार.....

तुम श्री चम्पापुर जइयो, कल्याणक पांच मन इयो 2
बतलइयो 3 केवल ज्ञान, म्हाने जिनवाणी सीखलइयो
जिनवाणी सीखलइयो दुखद कर्मा से बचाइयो
आत्मा 3 ही है समयसार............

ॐ

(२०) पञ्च परम गुरूओं ने गाया....

पञ्च परम गुरूओं ने गाया जिनवाणी यश गान
एक रहा है एक रहेगा वीतराग विज्ञान
आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

जीव एक नाना विध योनी
बहु विध कथा जिनागम की
अलग-अलग भाँति विशेष है
सुन्दरता परमागम की
इनके हर पृष्ठों में देखो जीव गुणों की खान
एक रहा है..........आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ

समझायेंगे सब जीवों को
सोया ज्ञान जगायेंगे
सुखमय मुक्ति मार्ग दिलादे
ऐसा पाठ पढ़ायेंगे
हम रत्नत्रय से शोभित हो, जिनमत की आवाज है
एक रहा है एक रहेगा............आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ

(२१) माँ जिनवाणी बसो हृदय में...

माँ जिनवाणी बसो हृदय में, दुख का हो निस्तारा।
नित्यबोधनी जिनवर वाणी, वन्दन हो शतवारा॥टेक॥

वीतरागता गर्भित जिसमें, ऐसी प्रभु की वाणी।
जीवन में इसको अपनाएँ, बन जाए सम्यक्ज्ञानी।
जनम-जनम तक ना भूलूँगा, यह उपकार तुम्हारा॥१॥

युग युग से ही महादुखी है, जग के सारे प्राणी।
मोहरूप मदिरा को पीकर, बने हुए अज्ञानी।
ऐसी राह बता दो माता, मिटे मोह अंधियारा॥२॥

द्रव्य और गुणपर्यायों का, ज्ञान आपसे होता।
चिदानन्द चैतन्यशक्ति का, भान आपसे होता।
मैं अपने में ही रम जाऊँ, यही हो लक्ष्य हमारा॥३॥

भटक भटक कर हार गए अब, तेरी शरण में आए।
अनेकांत वाणी को सुनकर, निज स्वरूप को ध्याएँ।
जय जय जय माँ सरस्वती, शत शत नमन हमारा॥४॥

(२२) मीठे रस से भरी......

मीठे रस से भरी, जिनवाणी लागे, मने प्यारी लागे
आत्मा की बात मने, प्यारी लागे
आत्मा है उजरो उजरो, तन मने लागे कालो
शुद्धात्म की बात अपने, मन में बसा लो
चेतना की बात, मने प्यारी लागे, मनहारी लागे
आत्मा की बात मने प्यारी लागे
मीठे रस से भरी-निवाणी....
देह अचेतन मैं हूं चेतन, जिनवाणी बतलाये
सिद्धौ जैसा मैं भी हूँ, ये फिर भी धोखा खाये
मान ले तु चेतन भईया, थारो कई ना बिगड़ो जाये
निज आत्मा की बात मने, प्यारी लाग
मीठे रस से भरी-जिनवाणी लागे
जग झूठा है रिश्ते झूठे, झूठे नाते सारे
जिनवाणी है सच्ची माता, सच्चा मार्ग दिखाये
मोक्षमहल का मार्ग हमको प्यारा लागे
नहीं भावे मने लाडु पेडा, नहीं भावे मने काजु
मोक्ष पूरी में जाऊंगा में, बन के दिगम्बर साधु
मने मोक्षमहल का मार्ग, बड़ी प्यारो लागे
आत्मा की बात मने प्यारी लागी

४

गुरुभक्ति खण्ड

(१) श्री मुनि राजत समता सङ्ग.....

श्री मुनि राजत समता सङ्ग,
कायोत्सर्ग समाहित अङ्ग ॥ टेक ॥
करतैं नहिं कछु कारज तातैं,
आलम्बित भुज कीन अभङ्ग।
गमन काज कछु हू नहिं तातैं,
गति तजि छाके निज रस रङ्ग ॥ 1 ॥
५ लोचनतैं लखिवौ कछु नाहीं,
तातैं नाशदृग अचलङ्ग।
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं,
तातैं प्राप्त इकन्त सुचङ्ग ॥ 2 ॥
तह मध्यान्ह माहिं निज ऊपर,
आयो उग्र प्रताप पतङ्ग।
कैधौं ज्ञान पवन बल प्रज्वलित
ध्यानानल सों उछलि फुल्लिंग ॥ 3 ॥
चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ,
परमानन्द पियुष तरंग,
भागचन्द ऐसे श्री गुरुपद,
वन्दत मिलत स्वपद उत्तङ्ग ॥ 4 ॥

(२) म्हारा परम दिगम्बर .....

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो।
बार–बार आना मुश्किल है भाव भक्ति उर भर लो, हाँ.. ॥ टेक ॥
हाथ कमण्डलु काठ को पीछी पंख मयूर।
विषय वास आरम्भ सब परिग्रह से हैं दूर॥
श्री वीतराग–विज्ञानी का कोई ज्ञान हिया विच धर लो, हाँ.... ॥ 1 ॥
एक बार करपात्र में अन्तराय अघ टाल।
अल्प–अशन लें हो खड़े, नीरस–सरस सम्हाल॥
ऐसे मुनि मारग उत्तम धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ.... ॥ 2 ॥
चार गति दु:ख से डरी, आत्म स्वरूप को ध्याय।
पुण्य पाप से दूर हो ज्ञान गुफा में आय॥
सौभाग्य तरण तारण मुनिवर के तारण चरण पकड़ लो, हाँ.... ॥ 3 ॥

(३) परम गुरु बरसत.....

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।
हरषि हरषि बहु गरजि गरजि के मिथ्या तपन हरी॥ टेक॥
सरधा भूमि सुहावनि लागे संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी॥ 1॥
स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सुभक्ति भरी॥ 2॥
जप–तप परमानन्द बढ़्यो है, सुखमय नींव धरी।
द्यानत पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी॥ 3॥

(४) मैं परम दिगम्बर .....

मैं परम दिगम्बर साधु के गुण गाऊँ गाऊँ रे।
मैं शुद्ध उपयोगी सन्तों को नित ध्याऊँ ध्याऊँ रे॥
मैं पञ्च महाव्रत धारी को शिर नाऊँ नाऊँ रे॥ टेक॥

जो बीस आठ गुण धरते, मन वचन काय वश करते।
बाईस परीषह जीत जितेन्द्रिय ध्याऊँ ध्याऊँ रे॥ 1॥

जिन कनक कामिनी त्यागी, मन ममता त्याग विरागी।
मैं स्वपर भेदविज्ञानी के गुण गाऊँ गाऊँ रे॥ 2॥

कुन्दकुन्द प्रभुजी विचरते, तीर्थंङ्कर सम आचरते।
ऐसे मुनि मार्ग प्रणेता को मैं ध्याऊँ ध्याऊँ रे॥ 3॥

५ जो हित मित वचन उचरते, धर्मामृत वर्षा करते।
सौभाग्य तरण-तारण पर बलि-बलि जाऊँ-जाऊँ रे॥ 4॥

(५) धन-धन जैनी साधु .....

धन-धन जैनी साधु जगत के, तत्त्वज्ञान विलासी हो॥ टेक॥

दर्शन बोधमई निज मूरति, जिनको अपनी भासी हो।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अंहबुद्धि दुखदासी हो॥ 1॥

जिन अशुभोपयोग की परिणति, सत्ता सहित विनाशी हो।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो॥ 2॥

छेदत जे अनादि दुःख दायक, दुविधि बन्ध की फाँसी हो।
मोह क्षोभ रहित जिन परिणति, विमल मयंक विलासी हो॥ 3॥

विषय चाह दव दाह बुझावन, साम्य सुधारस रासी हो।
भागचन्द पद ज्ञानानन्दी, साधक सदा हुलासी हो॥ 4॥

(६) धन्य मुनीश्वर आतम .....

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,
कि तुमने छोड़ा दिया परिवार।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,
कि तुमने छोड़ दिया संसार॥ टेक॥

काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी।
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भण्डारी॥
आत्म स्वरूप में झूलते करते निज आतम उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार॥ 1॥

राग द्वेष सब तुमने त्यागे, बैर विरोध हृदय से भागे।
परमातम के हो अनुरागे, बैरी कर्म पलायन भागे॥
सत् सन्देश सुना भविजन को करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार॥ 2॥

होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते।
निजपद के आनन्द में झूलते, उपशम रस की धार बरसते॥
मुद्रा सौम्य निरखकर मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार॥ 3॥

(७) नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ .....

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु,
महाव्रतधारी धारी............महाव्रत धारी ॥ टेक ॥

राग द्वेष नहिं, लेश जिन्हों के मन में है.... तन में है।
कनक कामिनी मोह काम नहि, तन में है....मन में है ॥
परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी,
नमो हितकारी कारी,...........नमो हितकारी ॥ 1 ॥

शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते....जो रहते।
ग्रीष्म ऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते....अघ दहते ॥
तरु तल रहकर वर्षा में, विचलित न होते लख भय
५ वन अधियारी भारी,.....वन अधियारी ॥ 2 ॥

कञ्चन-काँच मसान-महल सम, जिनके हैं.... जिनके हैं।
अरि अपमान मान मित्र सम, जिनके हैं....जिनके हैं ॥
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर
भव जल तारी तारी,....भव जल तारी ॥ 3 ॥

ऐसे परम तपोनिधि जहँ-जहँ जाते हैं.....जाते हैं।
परम शान्ति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं....पाते हैं ॥
भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ,
वरूँ शिवनारी नारी,..........वरूँ शिवनारी ॥ 4 ॥

(८) हे परम दिगम्बर यती .....

हे परम दिगम्बर यती महागुण व्रती, करो निस्तारा।
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ टेक॥

तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो।
बाईस परीषह जीत धरम रखवारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ 1॥

तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो।
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ 2॥

तुम क्षमा शान्ति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर। ५
है हित-मित सत उपदेश तुम्हारा प्यारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ 3॥

तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी।
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ 4॥

है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार।
सौभाग्य आप सा बाना होय हमारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा॥ 5॥

(९) हे परम दिगम्बर यती .....

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में
रे अकेले वन में, मधुवन में
मधुवन में आज मची रे होली मधुवन में...... ॥ टेक ॥

चैतन्य गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमायें वन में, मधुवन में....... ॥ 1 ॥

ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई
विभाव का ईधन जलावें वन में, मधुवन में........ ॥ 2 ॥

अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा
पतली धार न भायी मन में, मधुवन में........... ॥ 3 ॥

५ हमें तो पूर्ण दशा ही चाहिये, सादि अनंत का आनंद लहिये
निर्मल भावना भायी वन में, मधुवन में.......... ॥ 4 ॥

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज
चमकती
श्रेणी माँण्डी पलक छिन में, मधुवन में........... ॥ 5 ॥

नेमिनाथ गिरनार में देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो
केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में.......... ॥ 6 ॥

बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाये वन में, मधुवन में.......... ॥ 7 ॥

(१०) गुरुओं के उपकार को.....

गुरुओं के उपकार को हम तो भुला सकते नहीं
तन भुला सकते हैं पर जिनधर्म भुला सकते नहीं
जिसका श्रवण और पठन पाठन जीव को हितकार है
जिसके हृदय में आ बसे, बस वो जगत का ताज है–2
प्राण देकर भी कभी कीमत चुका सकते नहीं
है अनन्त उपकार उनका जो हमें ये वे गये
हम भी बने भगवान हममें बीज ऐसे वो गये
क्या कहें हम जबकि, गणधर भी बता सकते नहीं।

(११) जिन रागद्वेषत्यागा .....

जिन रागद्वेषत्यागा वह सतगुरु हमारा...........

जिन रागद्वेषत्यागा वह सतगुरु हमारा॥टेक॥
तज राजरिद्ध तृणवत निज काज सँभारा॥ जिन राग॥
रहता है वह वनखंड में, धरि ध्यान कुठारा।
जिन मोह महा तरुको, जड़मूल उखारा॥१॥जिन राग.॥
सर्वांग तज परिग्रह, दिगअंबर धारा।
अनन्तज्ञानगुन समुद्र, चारित्र भंडारा॥2॥जिन राग.॥
शुक्लाग्नि को प्रजाल के, वसु कानन जारा।
ऐसे गुरु को 'दौल' है, नमोऽस्तु हमारा॥३॥ जिन राग.॥

(१२) ऐसे साधु सुगुरु...

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं॥ टेक॥
आप तरे अरु पर को तारें निष्पृही निर्मल है॥ 1॥
तिल तुष मात्र सङ्ग नहीं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुणबल हैं॥ 2॥
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं॥ 3॥
'भागचन्द' तिनको नित चाहें, ज्यों कमलति को अलि हैं॥ 4॥

धन्य दिवस धनि या धरी, धन्य भाग मुझ आज,
जनम सफल अब ही भयो, वन्दत जिन महाराज।
(श्री बुधजन सतसई, दोहा 20)

५

महामहोत्सव खण्ड

(१) ये महा-महोत्सव पञ्च-कल्याणक .....

ये महा-महोत्सव पञ्च-कल्याणक आया मङ्गलकारी...
ये महा-महोत्सव ॥ टेक ॥

जब काललब्धिवश कोई जीव निज दर्शन शुद्धि रचाते हैं;
उसके सङ्ग में शुभभावों की धारा उत्कृष्ट बहाते हैं।
उन भावों के द्वारा तीर्थङ्कर कर्म प्रकृति रज आते हैं;
उनके पकने पर भव्य जीव वे तीर्थङ्कर बन जाते हैं ॥ 1 ॥
इस भूतल पर पन्द्रह महीने धनराज रतन बरसाते हैं;
सुरपति की आज्ञा से नगरी दुल्हन की तरह सजाते हैं।
खुशियाँ छाई हैं दश दिश में यूँ लगे कहीं शहनाई बजे;
हर आतम में परमातम की भक्ति के स्वर हैं आज सजे ॥ 2 ॥
माता ने अजब निराले अद्भुत देखें हैं सोलह सपने;
यह सुना तभी रोमाञ्च हुआ तीर्थङ्कर होंगे सुत अपने।
अवतार हुआ तीर्थङ्कर का क्या मुक्ति गर्भ में आई है;
क्षय होगा भ्रमण चतुर्गति का मङ्गल सन्देशा लाई है ॥ 3 ॥
जब जन्म हुआ तीर्थङ्कर का सुरपति ऐरावत लाते हैं;
दर्शन से तृप्त नहीं होते, तब नेत्र हजार बनाते हैं।
जा पाण्डुशिला क्षीरोदधि जल से बालक को नहलाते हैं;
सुत माता-पिता को सौंप इन्द्र, तब ताण्डव नृत्य रचाते हैं ॥ 4 ॥
वैराग्य समय जब आता है, प्रभु बारह भावना भाते हैं;
तब ब्रह्मलोक से लौकान्तिक आ, धन्य-धन्य यश गाते हैं।

विषयों का रस फीका पड़ता चेतनरस में ललचाते हैं;
तब भेष दिगम्बर धार प्रभु संयम में चित्त लगाते हैं॥ 5॥

नवधा भक्ति से पड़गाहें, हे मुनिवर यहाँ पधारो तुम;
हे गुरुवर अत्र-अत्र तिष्ठो, निर्दोष अशन कर धारो तुम।
है मन-वच-तन आहार शुद्ध अति भाव विशुद्ध हमारे हैं;
जन्मान्तर का यह पुण्य फला, श्री मुनिवर आज पधारे हैं॥ 6॥

सब दोष और अन्तराय रहित, गुरुवर ने जब आहार किया;
देवों ने पञ्चाश्चर्य किये, मुनिवर का जय-जयकार किया।
हैं धन्य-धन्य शुभ घड़ी आज, आँगन में सुरतरु आया है;
अब चिदानन्द रसपान हेतु, मुनिवर ने चरण बढ़ाया है॥ 7॥

प्रभु लीन हुए शुद्धातम में निज ध्यान अग्नि प्रगटाते हैं;
क्षायिक श्रेणी आरूढ़ हुए, तब घाति चतुष्क नशाते हैं।
प्रगटाते दर्शन-ज्ञान वीर्य-सुख लोकालोक लखाते हैं;
ऊँकारमयी दिव्यध्वनि से प्रभु मुक्ति-मार्ग बतलाते हैं॥ 8॥

प्रभु तीजे शुक्लध्यान में चढ़ योगों पर रोक लगाते हैं;
चौथे पाये में चढ़ प्रभुवर गुणथान चौदवाँ पाते हैं।
अगले ही क्षण अशरीरी होकर सिद्धालय में जाते हैं;
थिर रहे अनन्तानन्त काल कृतकृत्य दशा पा जाते हैं॥ 9॥

है धन्य-धन्य वे कहान गुरु जिनवर महिमा बतलाते हैं;
वे रङ्ग राग से भिन्न चिदातम का संगीत सुनाते हैं।
हे भव्यजीवों आओ सब जन, अब मोहभाव का त्याग करो;
यह पञ्च कल्याणक उत्सव कर, अब आतम का कल्याण करो॥ 10॥

(२) प्रतिष्ठा महोत्सव मनाओ .....

प्रतिष्ठा महोत्सव मनाओ मेरे साथी;
जीवन सफल बनाओ मेरे साथी;
आओ रे आओ आओ मेरे साथी;
पञ्च कल्याणक रचाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे;
मति श्रुत ज्ञान अवधि को धारे;
अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का;
जन्म-मरण के कष्ट निवारे;
गर्भ कल्याणक मनाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

प्रथम स्वर्ग से इन्द्र पधारे;
ऐरावत हाथी ले आये;
पाण्डु-शिला पर न्हवन रचाया;
सकल पाप-मल क्षय कर डारे;
जन्म कल्याणक मनाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

प्रभु ने आतम ध्यान लगाया;
निर्ग्रन्थों का पथ अपनाया;
नग्न दिगम्बर दीक्षा धर कर;
राग-द्वेष को दूर भगाया;
तप कल्याण मनाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर;
चार घातिया कर्म नशाया;

केवलज्ञान प्रकट कर प्रभु ने;
जग को मुक्ति-मार्ग बताया;
ज्ञानकल्याण मनाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

चरम-शरीरी छोड़कर प्रभुजी;
सिद्धशिला पर जाय विराजे;
सादि-अनन्त काल तक शाश्वत;
सुख निज परिणति में प्रगटाये;
मोक्षकल्याण मनाओ मेरे साथी। प्रतिष्ठा महोत्सव...।

५ (३) अलीगढ़ शहर में...

अलीगढ़ शहर में पञ्चकल्याणक जय-जय श्री वर्धमान रे।
चौबीसों जिनराज रे....

स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे, कुण्डलपुर में आनन्द छाये,
खुशियाँ अपरम्पार रे, जय-जय श्री वर्धमान रे।

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हरषा-हरषा,
देव करें जयकार रे, जय-जय श्री वर्धमान रे।

सोलह सपने माँ ने देखे, उनके फल राजा से पूछे,
अचरज में है मात रे, जय-जय श्री वर्धमान रे।

देवी छप्पन आये कुमारी, माता की सेवा सुखकारी,
मन में माँ हर्षाय रे, जय-जय श्री वर्धमान रे।

(४) कल्याणक आयाजी...

हेऽ जन-जन आनन्द छाया, सुनोजी भाई कल्याणक आया ॥ टेक ॥

त्रिशला माँ को सपना आया, तीन जगत् में आनन्द छाया,
हेऽ वीर कुंवर मन आया, सुनोजी भाई, कल्याणक आया... ॥ 1 ॥

सिद्धार्थराज घर बजत बधाई, तीन जगत् की लक्ष्मी आई,
हेऽ सुरपति उत्सव मनाया, सुनोजी भाई, कल्याणक आया... ॥ 2 ॥

देवगति से चयकर आया, जग को मुक्तिमार्ग बताया,
हेऽ खुशियाँ अपरम्पार, सुनोजी भाई, कल्याणक आया... ॥ 3 ॥

(५) भगवान की माताजी का सम्मान गीत...

पूर्व दिशा सम जननी जिनेश्वर अदीश्वर भगवान
तीर्थनाथ है आदिप्रभुजी पुत्र तेरा अविकार
जय-जय आदिनाथ भगवान............

ज्ञान को पाया, ज्ञान ही भाया।
निज में अंर्तध्यान किया।
तीन लोक माता बनकर करुणानिधी को जन्म दिया
रत्न कुक्षी मां तेरे कारण रत्न सुरों ने बरसाये
जन्म समय सुमधुर ध्वनि हो गई इन्द्र के आसन कम्पाये
णमो जिणाणं...........

धन्य धन्य है तेरे मुख से सत् सुबोध की धार बहे
तत्व स्वरूप बताकर तुमने दुखियों के दुख दूर किये
आओ भाई हम सब मिलकर जग जननी का यश गायें
भगवन सम आत्मा पाने को आदि प्रभु को सब ध्याये।

(६) पंचकल्याणक आऐ, ...

पंचकल्याणक आऐ, आऐऽऽऽकल्याणक आऐ
मङ्गलायतन में मङ्गलमय महो-महोत्सव मनाऐं

आगमन तीर्थङ्कर प्रभु का, रोम रोम हर्षाऐ
अभिनंदन करने जिनवर का, नरपति सुरपति आऐ
पंच कल्याणक आऐ............

पुलकित अवनी पुलकित अंबर, पुलकित दसों दिशाऐं
अनुपमेय अवतार आपका, अमृत रस बरसाऐ
पंच कल्याणक आऐ............

अंतरबल से ही आदीश्वर, सर्वश्रेष्ठ पद पाऐ
दिव्यरूप लखकर जिनवर का, निज की सुधी-बुधी आऐ
पंच कल्याणक आऐ............

६

गर्भकल्याणक खण्ड

(१) इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ मेरे भैया.....

इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ मोरे भैया, इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ;
साधर्मी मिल आओ मोरे भैया, इन्द्र प्रष्ठिा कराओ॥ टेक॥

सुन्दर जिन मन्दिर बनवाया, उसमें जिन प्रतिमा पधराना;
श्री जिनवर के पञ्च कल्याणक, इन्द्र–इन्द्राणी बनके रचाना,
सब मिल खुशियाँ मनाओ मोरे भैया, इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ॥ 1॥

दैवी वस्त्राभूषण धारो, तन–चेतन को भिन्न निहारो;
परिणामों को शुद्ध बनाकर, श्री जिन भक्ति उर में धारो,
रक्षा सूत्र बँधाओ मोरे भैया, इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ॥ 2॥

मोती की माला उर धारो, गुण अनन्तमय निहारो;
कानों में कुण्डल धारण कर, जिन वचनामृत पी सुख पाओ,
शीष पे मुकुट बँधाओ मोरे भैया, इन्द्र प्रतिष्ठा कराओ॥ 3॥

ज्यों पारसतें मिलत ही, करि ले आप समान,
त्यों तुम अपने भक्त कों, करि ते आप प्रमान।
(श्री बुधजन सतसई, दोहा 53)

(२) गर्भ कल्याणक आ गया...

गर्भ-कल्याणक आ गया,
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ॥ टेक ॥

स्वर्गपुरी से देवगति को तजकर प्रभु ने नरगति पाई;
धन्य-धन्य हैं त्रिशला माता तीर्थङ्कर की माँ कहलाई;
कुण्डलपुर में आनन्द छा गया ॥ 1 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे मन में अचरज भारी है;
सिद्धारथनृप से फल पूछा उपजा आनन्द भारी है;
तीन भुवन का नाथ आ गया ॥ 2 ॥

अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का अब दूजी माता नहीं होगी;
५ शुद्धातम के अवलम्बन से आत्मसाधना पूरी होगी;
ज्ञान-स्वभाव हमें भा गया ॥ 3 ॥

(३) जल भरि-भरि लाओ...

जल भरि-भरि लाओ, अपनी सखियों को बुलाओ;
आजा माता का न्हवन कराना है ओ...
कोई मङ्गल गीत सुनाओ, सिद्धों का सन्देश सुनाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ टेक ॥

कोई माता को तिलक लगाओजी लगाओजी लगाओजी;
सुत त्रिभुवन तिलक है आयोजी आयोजी आयोजी।
निर्मल जल से चरण पखारो, निज परिणति को शुद्ध बनाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 1 ॥

कोई माता को कंगन पहनाओजी पहनाओजी पहनाओजी;
शुद्ध आतम का दर्शन पाओजी हाँ पाओजी हाँ पाओजी;
अन्तिम भवधारी सुत आयो, माताजी को मन हरषाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 2 ॥

कोई माता को दर्पण दिखाओजी दिखाओजी दिखाओजी;
ज्ञेयाकारों में ज्ञान दिखाओजी दिखाओजी दिखाओजी;
दर्पण सम निज ज्ञान लखाओ पर परिणति से चित्त हटाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 3 ॥

(४) सुनो जी ने माँ ने...

सुनोजी...
माँ ने देखे सोलह सपने, जाने उनका फल क्या होगा ॥ टेक ॥

प्रथम सुगज ऐरावत देख्यो, मेघ समान सु-गरज घने,
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कन्धा शब्द भने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 1 ॥

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कन्धे लाल सुवर्ण बने,
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 2 ॥

पाँचे फूलमाल-द्वय गुञ्जित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने,
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 3 ॥

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने,

अष्टम मीन-युगल सर रमते देखे चञ्चल भाव जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 4 ॥

सुवर्ण कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढ़कत घने,
दसमें हँस रमण करते सर, कमल गन्ध युत लहर ठने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 5 ॥

सागर दर्पण-सम निर्मल लख, लसत तरङ्गनि हँसत घने,
बारम सिंहासन सुवर्णमय सिंहपीठ मणि जड़ित बने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 6 ॥

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सर अनुराग घने,
चौदस नाग-भवन भू उठता, देखी कान्ति अपार जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 7 ॥

५ पन्द्रम रत्न-राशि युति पूरण, दुःख-दरिद्र संहार हनै,
धूम रहित शुभ पावक देखी, कर्मकाष्ठ जल जात घने;
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को सुनोजी ॥ 8 ॥

(५) मात ताहि सेवके...

माता तोहि सेवके, सुतृप्ता हमें भई;
राग-द्वेष टार, वीतराग बुद्धि परिणई;

तू ही लोकमांहि श्रेष्ठ, भायी सुभाग है...
इन्द्र तोरी भक्ति में, प्रवीण किये राग हैं... ॥ 1 ॥

(६) सोलह सोलह सपने...

सोलह सोलह सपने देखे हैं आज, फल बतलाओ जी महाराज,
नृप सिद्धार्थ का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज ॥ टेक ॥

हाथी भी देखा वृषभ भी देखा, सिंह और लक्ष्मी का अवतार,
बलवान होगा पुत्र हे मात, कर्मठ होता तेरा लाल;
प्रतापी सुत की है तू मात, ज्ञान लक्ष्मी का धरनार ॥ 1 ॥

माला भी देखी चन्द्र भी देखा, देख चढ़ता सूर्य प्रकाश,
कोमल होगा पुत्र महान, शीतल होगा वह गुणखान;
काटेगा अज्ञान अन्धकार, होगा वह तो सूर्य समान ॥ 2 ॥

कलश भी देखा, मीन भी देखी, सागर और सरोवर शान्त,
गम्भीर होगा सिन्धु समान, होगा ज्ञान-सरोवर खान;
नृप सिद्धार्थ का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज ॥ 3 ॥

सिंहासन और देव विमान, देखा रत्नों का भण्डार,
जीतेगा तीन लोक को नाथ, लायेगा उन्हें देव-विमान;
अवधिज्ञान विशाल भवन, सोहेगा तो रत्न समान ॥ 4 ॥

उज्ज्वल उज्ज्वल अग्नि समान, लाल करेगा अहो निहाल,
मुख में स्वर्ण वृषभ जो आय, मानो तीर्थङ्कर अवतार;
सफल हुई नारी पर्याय, त्रिभुवन है नतमस्तक आज ॥ 5 ॥

(७) रत्नों की वर्षा कराए...

रत्नों की वर्षा कराए इन्द्रबाला, माता की सेवा करे सुरबाला;
रत्नकुक्षीधारी बनी त्रिशला माता, स्वप्न देखे हुई भोर;
तत्त्वों की चर्चा जाने हर कोई, रत्नों की वर्षा....

वस्त्राभूषण भेंट करें माता की वन्दना, धन्य-धन्य आयेंगे देव,
सज गई नगरिया हरषे मेरा मन, रत्नों की वर्षा,

मतिश्रुत अवधिधारी बालक हैं उपकारी, आओ प्रभु मिले चैन,
गर्भकल्याणक उत्सव मनाए, रत्नों की वर्षा...

(८) माता को मीठी-मीठी धुन...

५

माता को मीठी-मीठी धुन सुनाये रे -2 ओ सखियां-2
महलों में ये तोरण भी सजाये रे-2 ओ सखियां -2 ॥ टेक ॥

माताजी को लगी सजाने ओ-ओ-ओ - 2
नवलख हार पहनाये, माँग सिन्दूर भराये - 2
दिखा के दर्पण माता को मनाये रे - ओ सखियां

सेज सजाए, कंगन पहनाये ओ...
शीश पे मुकुट सजाए, चन्दन तिलक लगाए
पकवानों से माँ की साध पुराये रे - ओ सखियां

चंवर ढुलाये, मेहंदी लगावे ओ ओ ओ - 2
उबटन तन पे जाये, चर्चा तत्त्व कराये - 2
लाल चूनर देवी माता को पहनाये रे... ओ सखियां

(९) मङ्गलायतन में पञ्च कल्याणक ...

मङ्गलायतन में पञ्च कल्याणक जय–जय आदिनाथ रे,
चौबीसों जिनराज रे।
जयपुर शहर में गर्भ–कल्याणक अन्तिम गर्भ महान रे,
जय–जय ऋषभकुमार रे॥ टेक॥

सर्वार्थ–सिद्धि से प्रभु जी पधारे, अयोध्या नगर में आनन्द छाए।
खुशियाँ अपरम्पार रे, जय–जय ऋषभकुमार रे॥ 1॥

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करके हरषा–हरषा।
देव करे जयकार रे, जय–जय ऋषभकुमार रे॥ 2॥

सोलह सपने माँ ने देखे, उनके फल राजा से पूछे।
अचरज में है मात रे, जय–जय ऋषभकुमार रे॥ 3॥

देवी छप्पन आऐं कुमारी, माता की सेवा सुखकारी।
मन में माँ हर्षाय रे, जय–जय ऋषभकुमार रे॥ 4॥

(१०) सोती थी मरुदेवी माता ...

(धुन : राम की लीला मन भायी)

सोती थी मरुदेवी माता, महल में मगन।
बजने लगी शहनाई, सपनों ने ली अंगड़ाई॥

प्रथम सुगज ऐरावत देख्यो, मेघ समान सु-गरज घने।
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कंधा शब्द भने॥
कैसी ये लीला है रे भाई, माताजी समझ न पायीं
सोती थीं मरुदेवी.................

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कंधे लाल सुवर्ण बने।
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने॥
फल क्या इनका होगा भाई, अचरज में माता हरषाई
सोती थीं मरुदेवी.................

पाँचे फूलमाला-द्वय गुंजित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने।
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने॥
कैसा स्वपन है ये भाई, माताजी है मुस्कायी
सोती थीं मरुदेवी.................

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने।
अष्टम मीन-युगल सर रमते, देखे चंचल भाव जने।।
मेघ घटा है छाई, अमृत सुधा है बरसाई
सोती थीं मरुदेवी.................

सुवर्ण कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढ़कत घने।
दशमें हंस रमण करते सर, कमल गंध युत लहर ठने।
मुक्ति पुरी मन भाई, आनन्द धारा बहाई
सोती थीं मरुदेवी.................

सागर दर्पण-सम निर्मल लख, लसत तरंगनि हँसत घने।
बारम सिंहासन सुवर्णमय, सिंहपीठ मणि जड़ित बने।
प्रेम सुधा सरसाई, खुशियों की बारिश आयी
सोती थीं मरुदेवी.................

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सर अनुराग घने।
चौदस नाग-भवन भू उठता, देखी कांति अपार जने।
कौन सी निधि मैंने पायी, मुक्ति गोद में आयी
सोती थीं मरुदेवी.................

पन्द्रम रत्न-राशि युति पूरण, दुःख-दरिद्र संहार हने।
धूम रहित शुभ पावक देखी, कर्मकाष्ठ जल जात घने॥
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने।
अर्न्तमुख छवि भाई, आतम अनुभव पायी
सोती थीं मरुदेवी.................

(११) सोलह–सोलह स्वपन ...
(धुन : ढूढ़ों–ढूढ़ों री साजना)

सोलह–सोलह स्वपन, मैंने देखे हैं साजन,
हर्षित है मन क्यों आज।
बोलो–बोलो जी स्वामी,
बोलोजी नाथ मेरे स्वपन का राज॥

हाथी भी देखा वृषभ भी देखा, सिंह और लक्ष्मी का अवतार
बलवान होगा पुत्र हे मात, कर्मठ होगा तेरा लाल
प्रतापी सुत की है तू मात, ज्ञान लक्ष्मी को धरनार
बोलो–बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल ॥1 ॥

माला भी देखी चन्द्र भी देखा, देखा चढ़ता सूर्य प्रकाश
कोमल होगा पुत्र महान, शीतल होगा वह गुणखान
काटेगा अज्ञान अंधकार, होगा वह तो सूर्य समान
बोलो–बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल ॥2 ॥

कलश भी देखा मीन भी देखी, सागर और सरोवर शान्त
गम्भीर होगा सिंधु समान, होगा ज्ञान–सरोवर खान।
नाभिराय का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज
बोलो–बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल ॥3 ॥

सिंहासन और देव विमान, देखा रत्नों का भंडार
जीतेगा तीन लोक को नाथ, लायेगा उन्हें देव–विमान
अवधिज्ञान विशाल भवन, सोहेगा वो रत्न समान
बोलो–बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल ॥4 ॥

उज्जल-उज्जवल अग्नि समान, लाल करेगा अहो निहाल
मुख में स्वर्ण वृषभ जो आय, मानो तीर्थङ्कर अवतार
सफल हुई नारी पर्याय, त्रिभुवन है नतमस्तक आज
बोलो-बोलोजी रानी, बोलोजी रानी अगले स्वपन का हाल ॥5 ॥

५

(१२) स्वर्ग लोक से आई रे, ...

तर्ज (पंख होते तो उड़ आती रे)

स्वर्ग लोक से आई रे, मरूदेवी माता
आई सुरबालाऐं आई रे

उबटन चंदन केशर लगाऐं, माताजी को न्वहन कराऐं
मीठी-मीठी तान सुनाऐं, माताजी को तिलक लगाऐं॥
आनंदकारी नृत्य रचाऐं ऽऽऽ हर्षित होकर सुरबालाऐं
मरूदेवी माता, आई सुरबालाऐं आरे रे.........

दैवीय वस्त्राभूषण आए, माताजी को मिलकर पहनाऐं
नवसर हार कोई पहनाऐं, माताजी को बिंदिया लगाऐं
सोलह श्रंगारों से प्रतिदिनऽऽऽ माताजी की साध पुराऐं
मरूदेवी माता, आई सुरबालाऐं आई रे ....

नित नव तात्विक प्रश्न पूछकर, माताजी का मन बहलाऐं
तीर्थङ्कर की जननी मां से, समाधान सब अपने पाऐं।
जिनवाणी का मर्म जानकरऽऽऽ अपना जीवन सफल बनाऐं
मरूदेवी माता, आई सुरबालाऐं आई रे ....

५

(१३) इन्द्र की आज्ञा.......

तर्ज (कभी राम बनके)

इन्द्र की आज्ञा सुन के छः मास पहले देव हरषे
रतन है बरसे

अहो ! सुमन कल्प तरु बर्षा–2
अली का मन हरषे, सुगन्धित वायु सरसे
देवगण हरषे.....

अहो ! गन्दोदक जल धारा –2
अमृत कण बनके अम्बर नीले परसे
देवगण हरषे.........

सुर दुंदभी मधुर बजावे 2
नृत्य ताण्डव करके अप्सरा नव रस भरके
देव हरषे............

पञ्च आश्चर्य अनुपम होते 2
पुण्य की वृद्धि करके, पर्याय सार्थक करके
देव हरषे........

७

जन्मकल्याणक खण्ड

(१) आया जन्मकल्याणक........

आया जन्मकल्याणक महान, हिल मिल नृत्य करो॥ टेक॥

इन्द्र कुबेर स्वर्ग से आये, हीरा रत्न पुष्प बरसाये;
त्रिशला माँ के अँगना में आज, हिल मिल नृत्य करो॥ 1॥

निरखत प्रभु छवि मन हरषाये, इन्द्र ने नेत्र हजार बनाये;
गाओ सब मिलकर मङ्गलगान, हिल-मिल नृत्य करो॥ 2॥

भाई भी आओ बहनों भी आओ, जन्मकल्याणक महोत्सव मनाओ;
करो आतम का अब कल्याण, हिल-मिल नृत्य करो॥ 3॥

(२) पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा...........

पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा.....
पंखिड़ा रे उड़ के आओ कुण्डलपुर में;
तीर्थङ्कर जन्मे आज भरतक्षेत्र में॥ टेक॥

माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने,
उनका फल बताया सिद्धार्थराज ने;
तेजवान बुद्धिमान लाल होएगा,
ज्ञानवान तीर्थङ्कर बाल होएगा॥ 1॥

सिद्धार्थराज के द्वार बाजती बधाई है,
प्रथम दर्शन को शची इन्द्राणी आई है;
इन्द्र–इन्द्राणी आये आज नगर में,
खुशियाँ अपार छाईं नगर–नगर में ॥ 2 ॥

प्रभु आये यहाँ अच्युत विमान से,
यह बालक शोभित सम्यक्त्व रिद्धि से;
मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान है,
सम्यक्दर्शन ज्ञान रत्न भी महान है ॥ 3 ॥

प्रभु पूरी करेंगे यहाँ आत्म साधना,
अब धारण करेंगे कभी पुनर्जन्म ना;
वीतरागभाव से जिनराज बनेंगे,
५ चिदानन्द चैतन्यराज वरेंगे ॥ 4 ॥

(३) कुण्डलपुर वारे कुण्डलपुर वारे...

कुण्डलपुर वारे कुण्डलपुर वारे, वीरजी हमारे कुण्डलपुर वारे ॥ टेक ॥

माँ त्रिशला घर जनम लिया है, माता की कोख को धन्य कियो है
नृप सिद्धार्थ के आँखों के तारे वीर जी हमारे.... ॥ 1 ॥

स्वर्गपुरी से सुरपति आये, ऐरावत हाथी ले आये
रतन बरसाये और न्हवन कराये वीर जी हमारे... ॥ 2 ॥

देखो भैया इन्द्र भी आये, पञ्च कल्याणक का उत्सव मनाये
सभी हर्षाये और खुशियाँ मनाये वीरजी हमारे... ॥ 3 ॥

(४) नाचे रे इन्दर देव रे...

नाचे रे इन्दर देव रे... नाचे रे इन्दर देव रे...
जन्म कल्याणक की बज रइ बधैया मुक्ति में अब का देर रे;
नाचे रे इन्दर देव रे ॥ टेक ॥

शिवादेवी के गर्भ में आये, देखो जी नेमिकुमार रे;
समुद्रविजय जी फल बतावें, होवे खुशियाँ अपार रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥ 1 ॥

शिवादेवी ने ललना जायो, जायो नेमिकुमार रे;
समुद्रविजय जी मुहरें लुटाये, देखो दोई–दोई हाथ रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥ 2 ॥

देव–देवियाँ स्वर्ग से आये, मन में खुशियाँ अपार रे;
छप्पन कुमारी मङ्गल गावें, गावें मङ्गलाचार रे।
नाचे रे इन्दर देव रे ॥ 3 ॥

(५) दिन आयो दिन आयो...

दिना आयो–दिन आयो–दिन आयो,
आज जन्मकल्याणक दिन आयो, ॥ टेक ॥

झूमे आज नर–नारी ऐसे हरषाय,
मारो तन मनवा प्रभु के गुण गाये;
रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रङ्ग लाग्यो ॥ 1 ॥

तन भीगे, मन भीगे, भीगे मोरो आतम,
प्रभु ने बतायो आतम परमातम;
रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रङ्ग लाग्यो ॥ 2 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे,
उनका फल राजा से पूछा;
रानी तेरे गर्भ से पुत्र जन्म लेगा,
तीन लोक का नाथ बनेगा।
हरषायो हरषायो हरषायो माता
शिवादेवी का मन हरषायो ॥ 3 ॥

सौरीपुर में जन्म हुआ है तीन भुवन आनन्द हुआ है;
इन्द्र-इन्द्राणी मिल खुशियाँ मनावें,
मङ्गलकारी गीत सुनावें।
फल पायो फल पायो फल पायो
शिवादेवी माता ने शुभ फल पायो ॥ 4 ॥

(६) आज तो बधाई राजा...

आज तो बधाई राजा नाभि के दरबार में;
नाभि के दरबार में नाभि के दरबार में ॥ टेक ॥

मरुदेवी ने ललना जायो जायो ऋषभकुमारजी;
अयोध्या में उत्सव कीनो घर-घर मङ्गलाचारजी ॥ 1 ॥

हाथी दीना घोड़ा दीना, दीना रथ भण्डारजी;
नगर सरीखा पट्टन दीना, दीना सब श्रृंगारजी ॥ 2 ॥

घन घन घन घन घण्टा बाजे देव करें जयकारजी;
इन्द्राणी मिल चौक पुरावे भर-भर मूतियन थारजी ॥ 3 ॥

तीन लोग में दिनकर प्रगटे घर-घर मङ्गलचारजी;
केवल कमला रूप निरञ्जन आदीश्वर महाराजजी ॥ 4 ॥

हाथ जोड़कर मैं करूँ विनती, प्रभुजी को चिरकालजी;
नाभिराजा दान देंवे बरसे रतन अपारजी ॥ 5 ॥

(७) बधाई आज मिल गाओ...

बधाई आज मिल गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं;
बनादो गीत मङ्गलमय, यहाँ महावीर जन्मे हैं ॥ टेक ॥

बिछा दो चाँदनी चन्दा, सितारो नाचते आओ;
सुनहला थार भर ऊषा, प्रभाकर आरती लाओ;
सुस्वागत साज सजवाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं ॥ 1 ॥

लतायें तुम बलैयां लो, हृदय के फूल हारों से;
तितलियाँ रङ्ग बरसाओ, बहारो की बहारों से;
मुबारकवाद अलि गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥ 2॥

उमड़कर गंगा यमुना तुम, चरण प्रक्षाल कर जाओ;
अरी धरती उगल सोना, धनद सम कोष भर जाओ;
जगत् आनन्द-घन छाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥ 3॥

सफल हो आगमन इनका, हमें सौभाग्य स्वागत का;
सुखद जिनराज के दरशन, इष्ट साधर्मी सज्जन का;
मङ्गलाचार नित गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥ 4॥

५ ऐरावत साथ लेकर, स्वयं ही इन्द्र आते हैं;
हजारो नेत्र लखकर भी, नहीं वे तृप्ति पाते हैं;
प्रभु गुण-गान मिल गाओ, यहाँ महावीर जन्मे हैं॥ 5॥

(८) अमृत से गगरी भरो...

अमृत से गगरी भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे;
खुशी-खुशी मिल के चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ टेक॥

सब साथी मिल कलश सजाओ, मङ्गलकारी गीत सुनाओ;
मन में आनन्द भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ 1॥

इन्द्र-इन्द्राणी मिल हर्ष मनावें, प्रभु-चरणों में शीश झुकावें;
प्रभुजी की छवि निरखो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥ 2 ॥
सुवर्ण-कलश प्रभु उदकनि धारा, अङ्गे न्हावे जिनवर प्यारा;
स्वामी जगत को खरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥ 3 ॥
हे सुखकारी सब दुःखहारी, सेवा जिनकी प्यारी-प्यारी;
लेकर 'सरस' को चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥ 4 ॥

(९) सुरपति ने अपने शीश...

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश गये गिरिराज;
जा पांडुक शिला विराजा ॥ टेक ॥
शिल्पी कुबेर वहाँ आकर के क्षीरोदधि का जल लाकर के;
रचि पैडि ले आये, सागर का जल ताजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥ 1 ॥
नीलम पन्ना वैडूर्यमणी, कलशा लेकर के देवगणी;
इक सहस आठ कलशा लेकर नभ राजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥ 2 ॥
वसु योजन गहराई वाले, चहुँ योजन चौड़ाई वाले;
इक योजन मुख के कलश ढूरे जिनमाथा,
नहीं जरा डिगे शिशुनाथा ॥ 3 ॥
सौधर्म इन्द्र अरु ईशाना, प्रभु कलश करें धर युग पाना;
अरु सनत्कुमार महेन्द्र, दोय सुरराजा,
शिर चमर ढुरावें साजा ॥ 4 ॥

फिर शेष दिविज जयकार किया, इन्द्राणी प्रभु तन पोंछ लिया;
शुभ तिलक दृगांजन शची कियो शिशुराजा,
नाना भूषण से सजा ॥ 5 ॥

ऐरावत पुनि प्रभु लाकर के माता की गोद बिठा करके;
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा,
स्तुति करके जिनराजा ॥ 6 ॥

चाहत मन मुन्नालाल शरण वसु कर्म जाल दुठ दूर करन;
शुभ आशीषमय वरदान देहु जिनराजा,
मम न्हवन होय गिरिराजा ॥ 7 ॥

(१०) झुलाय दइयो पलना...

झुलाय दइयो पलना धीरे-धीरे...2 ॥ टेक ॥
झिलमिल मोती झालर झूमे, मैया ललन का मुखड़ा चूमे,
मुस्काय रहे ललना धीरे-धीरे ॥ 1 ॥

त्रिशला माता पलना झुलावे, सिद्धारथ नृप मोती लुटाये;
सो जाए रे ललना धीरे-धीरे ॥ 2 ॥

चन्दन का पलना रेशम की डोरी, रतन जड़े हैं चारों ओरी;
उनसे किरणें निकलना धीरे-धीरे ॥ 3 ॥

मङ्गल गीत गये सुरनारी, बलि-बलि जावे आज पुजारी;
भवदधि से तरना धीरे-धीरे ॥ 4 ॥

(११) मणियों के पलने में...

मणियों के पलने में स्वामी महावीर
झूला झूले रे भैया हाँ हाँ रे झूला झूले ॥ टेक ॥

पलना में रेशम की डोरी पड़ी है, वा में मणियन की गुरिया जड़ी है
त्रिशला माता झूलाये रहि रे, झूला झूले... ॥ 1 ॥

कुण्डलपुर वासी बोले सारे, वीराकुंवर की जय जय कारे
दर्शन कर चरणा छूले रे। झूला झूले.... ॥ 2 ॥

चुटकी बजाय रही, हँस हँस खिलाय रही
होले-होले से झूला झूलाय रही
घर-घर बाजे बधाई रे, झूला झूले... ॥ 3 ॥ ५

इन्द्र भी आवे इन्द्राणी भी आवे, देश-विदेश के राजा भी आवे
चरणों में भेंट चढ़ाय रहो रे। झूला झूले... ॥ 4 ॥

(१२) मेरा पलने में झूले ललना...

मेरा पलने में झूले ललना... मेरा पलने में ॥ टेक ॥

स्वर्णमयी अरु रत्न जड़ित यह स्वर्गपुरी से आया है;
इस पलने में बैठ झूलने सुरपति मन ललचाया है;
किन्तु पुण्य है नेमिकुंवर का... इसमें शोभे ललना ॥ 1 ॥

बड़े प्यार से आज झुलाऊँ, अपने प्यारे लाल को;
सप्त स्वरों से गीत सुनाऊँ, तीर्थङ्कर सुत बाल को ;
शुद्ध बुद्ध आनन्द कन्द मैं... अनुभव करता ललना ॥ 2 ॥

तन-मन झूमे पिताश्री का अवसर है आनन्द का;
सोच रहे हैं पुत्र हमारा रसिया आनन्दकन्द का;
ज्ञानानन्द झूले में झूले... देखो मेरा ललना॥ 3॥

देवों के सङ्ग क्रीड़ा करता सब झूले आनन्द में;
किन्तु पुत्र की अन्तर-परिणति झूले परमानन्द में;
गुणस्थान षष्टम-सप्तम में... कब झूलेगा ललना॥ 4॥

अन्तर के आनन्द में झूले जाने ज्ञान स्वभाव को;
मुझसे भिन्न सदा रहते हैं पुण्य-पाप के भाव तो;
भेदज्ञान की डोरी खीचें... देखो माँ का ललना॥ 5॥

ज्ञान मात्र का अनुभव करता रमे नहीं परज्ञेय में;
दृष्टि सदा स्थिर रहती है चिदानन्दमय ध्येय में;
निज अन्तर में केलि करता... देखो मेरा ललना॥ 6॥

(१३) चन्दन के पलना में...

चन्दन के पलना में झूले महावीरा, फर-फर उड़े चुनरिया लाल;
काहे को कर्मन की बाँधो गठरिया, काहे की डोरी से बाँधे महावीरा।
फर-फर उड़े चुनरिया लाल॥ टेक॥

आतमज्ञान की लेले खबरिया, ज्ञान की डोर से बाँधे महावीरा
फर-फर उड़े चुनरिया लाल॥ 1॥

काहे न ध्याय तू जिनवाणी मैया, काहे की डोरी से बाँधे महावीरा
फर–फर उड़े चुनरिया लाल ॥ 2 ॥

अरहन्त सिद्धों ने पायी है नैया, ध्यान की डोरी से बाँधे महावीरा।
फर–फर उड़े चुनरिया लाल ॥ 3 ॥

सम्यक्दर्शन और ज्ञान बतावे, आतम की डोरी से बाँधे महावीरा।
फर–फर उड़े चुनरिया लाल ॥ 4 ॥

दीप ज्ञान का मन में जलाये, चेतन की डोरी से बाँधे महावीरा
फर–फर उड़े चुनरिया लाल ॥ 5 ॥

५

(१४) त्रिशला देवी के...

त्रिशला देवी के आँगन में चलो चलें सांवरिया,
चलो चलें सांवरिया, ज्ञान की भर लें गागरिया ॥ टेक ॥

महारानी ने लाला जायो, धन्य घड़ी है आज;
सबको इच्छित दान दीना, सिद्धार्थ महाराज ॥ 1 ॥

ऐरावत हाथी लिये, प्रभु इन्द्र–इन्द्राणी आय;
पाण्डुक गिरी पर जाय के, प्रभु को न्हवन कराय ॥ 2 ॥

सुन–सुन रे साजन मेरे, मत न देर लगाय;
बीती घड़ी सुहावनी, लौट के फिर न आय ॥ 3 ॥

(१५) आज आदीश्वर जन्मे हैं...........

तर्ज (आज मेरे यार की शादी है)

आज आदीश्वर जन्मे हैं-2
श्रद्धा और उमंग से सारी धरती बोली है
आज आदीश्वर जन्मे हैं-2

इन्द्र आसन कम्पाएं, देवियाँ नृत्य कराये
नगर में धूम मची है, श्वेत ऐरावत आये
खुशी से भर गये चितवन, मिला मरुदेवी का नन्दन
छत्र और चंवरढुले हैं, छवी लगती मन भावन
५ तो ऽ ऽ चेत सुदी तेरस की घड़िया अतिशुभवन्ती है
आज आदीश्वर जन्मे हैं-2

क्षीरोदधिनीर भराया, प्रभु अभिषेक कराया
नगाड़े बजने लगे हैं नृत्य ताण्डव रचवाया
शचि फूली न समाये, रत्न आभूषण लाये,
पलने प्रभु झूल रहे हैं, हंसी होठों पर आई
तो ऽ ऽ रत्नत्रय की बगिया में ये फूल बसन्ती है
आज आदीश्वर जन्मे हैं-2

(१६) आज नगरी में जन्मे आदिनाथ, ...

तर्ज- (म्हारा हिबड़ा में नाचे मोर....)

आज नगरी में जन्मे आदिनाथ, सुन सुन मेरे भैया।
चल भव सागर के ती...र, अब मिल गई नैया॥
आदीश्वर का जन्म हुआ है, घर घर मंगल छाया...
आज नगरी में...........

सौधर्म इन्द्र भी आया है और इन्द्राणी भी आई है... हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्या रूप सलौना देखा, तो, अखियाँ हजार बनाई है...
नर नारी सब मंगल गावें... हाथ से लेय बलैयां
आज नगरी में जन्मे आदी, सुन सुन मेरे भैया...
आज नगरी.....

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, पाण्डुक शिला ले जायेंगे। हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्षीर सागर के निर्मल जल से, अभिषेक प्रभु का कराएंगे... 2
फूली नहीं समाये मन में आज तो त्रिशला मैया...
आज नगरी.........

जन्म जगत से सबका होता, किन्तु निश्चित मरना होता हो ऽऽऽऽ-2
जन्म सबका होता है, किन्तु निश्चित मरना होता, हो ऽ ऽ ऽ ऽ-2
कल्याणक जिनका होता, कभी न जीना मरना होता-2
भव से पार लगाने वाला, मिला खिवैया...
आज नगरी में....

(१७) बधाई गाओ रे! ...अयोध्या चालो रे ....

तर्ज- (दीवाना राधे का....)

बधाई गाओ रे ! ...अयोध्या चालो रे...आ हा....
जन्मे हैं ऋषभ कुमार कि मंगल गावो रे ऽ ऽ ऽ ऽ
कि मंगल गावो रे ऽ ऽ ऽ ऽ
जय हो, जय हो, जय हो... जय हो...जय

नगर अयोध्या सजी हुई है, मंगल तोरण द्वारे...
रंग बिरंगी झल्लरियों से, स्वर्ग को लाज है आवे....2
दशोंदिशायें आनन्दित है.......2 बार
अद्‌भुत शोभा पावै। बधाई गाओ रे......

तीन लोक में खुशियां छाई, नारकी भी उल्लासे...
५ उर्ध्व लोक भी मध्य लोक में, आनन्द रस बरसावे...2
मरुदेवी फूली न समावे... 2
नाभिराय मुसकाये... ॥ बधाई गावो रे....

आज ऋषभ का जन्म हुआ है, मुक्ति का मार्ग खुलेगा।
भव से पार लगाने वाला, रत्नत्रय हमें मिलेगा... 2
केवल ज्ञान की रश्मियों से,... 2
निज के संग रहेगा.......... । बधाई गावो रे... ॥

प्रभु निज चैत्यन साधना में, परिपूर्णलीन होवेंगे।
निज स्वाभाव के साधन से, वे मुक्ति नार वरेंगे।
एक मात्र ध्रुव धाम आतमा, ...2
जिन शासन का सार ॥ बधाई गावो रे।

अयोध्या चालो रे... आज जन्मे हैं ऋषभ कुमार
कि मंगल गावो रे ऽऽऽ कि मंगल गावो रे ऽऽऽ ऽ

(१८) इन्द्र नाचे तेरी भक्ति ....

नृत्य गीत

इन्द्र नाचे तेरी भक्ति में छनन छनन 2
छन छनन छनन तुं तनन तनन
इन्द्र नाचे तेरी भक्ति में छनन छनन

तीन प्रदिक्षण प्रभु की लगा के
शचि देख हरषाई 2
बाल प्रभु सीने से लगे, बजी ममता की शहनाई
इन्द्राणी की पायल बाजे झनन झनन
इन्द्र नाचे....

बाल प्रभु के सुरपति निरखे लोचन सहस बनाये
नर–नारी भी देख प्रभु को, हिये न हर्ष समाये
पुण्य बढ़े और पाप का होवे हनन हनन
इन्द्र नाचे...

सनत कुमार माहेन्द्र इन्द्र भी चौसठ चंवर दुरावे
शेष शुक्र के जयकारे से गनाम्बर गुंजावे
मन्द सुगंधित पवन बह रही सनन सनन
इन्द्र नाचे....

क्षिरोदधि से कलश इन्द्र ने हाथों हाथ भराये
पाण्डु शिला पर प्रभु विराजे चन्द्र सूर्य शर्माये
स्वर्ग लोक से घंटे बाजे घनन घनन
इन्द्र नाचे.....

(१९) छोटी–2 बइयाँ ....

छोटी–2 बइयाँ घुंघराले बाल–2
छोटो सो–3 मरुदेवी तेरो लाल
छोटी.................

ऐरावत हाथी मतवाली चाल–2
ऊपर से–3 बैठो माता तेरो लाल
छोटी.....................

ऊंचे–2 पर्वत ऊँचे–2 साल–2
ऊपर से –3 नहावे माता तेरो लाल
५ छोटी.....................

अष्ट कुमारियों की छम–2 चाल–2
झूला–3 झूले माता तेरो लाल
छोटी.....................

छोटे–2 पइयाँ छम–2 चाल
बड़ो ही–3 नटखट माता तेरो लाल
छोटी.....................

छोटी –2 बइयां घुंघराले बाल.......

(२०) आनंद अंतर आज न ....

तर्ज (ओढ़नी ओढू तो उड़ी उड़ी जाये)

आनंद अंतर आज न समाये...............2
जनमे ऋषभकुमार खुला मुक्ति का द्वार।
तिहुं लोक में आनंद छाया.......

स्वर्गपुरी से देवगति तज प्रभु ने नरतन पायो।
धन्य धन्य मरूदेवी माता तीर्थङ्कर सुत जायो॥
इन्द्र नगरी माँ आये, मंगल उत्सव रचाये.........
सारी धरती दुल्हन सी सजी जाये...आनंद अंतर मा आज न

सोलह सपने मां ने देखे, मन में अचरज भारी।
नाभिराय से फल जब पूछा, उपजा आनंद भारी॥
तीनों लोकों का नाथ, तेरे गर्भ में मात............
अनुभूति में दर्शन पाये.............आनंद अंतर मा आज न

अंतिम जन्म लिया जब तुमने सुरपति द्वारे आये।
नेत्र हजार निहारे प्रतिक्षण तृप्त नहीं हो पाये॥
गीत सुरबाला गायें, शची चौक पुराये.........
नरकों में भी शान्ति छाये..........आनंद अंतर मा आज न

इस युग के प्रथम जिनेश्वर अंतिम भव को धारे।
स्वयं तिरे भवसागर से और हमको पार उतारे॥
सब मिलकर के आये प्रभु दर्शन को पाये......
प्रभुता निज की पा जायें.......... आनंद अंतर मा आज न

(२१) म्हारे आंगण आज आई ....

तर्ज (कानूरा लाल गगरी मारी भर दे रे)

म्हारे आंगण आज आई देखो मंगल घड़ी
मंगल घड़ी आई पावन घड़ी............
म्हारे आंगण आज आई देखो मंगल घड़ी..........

1. मरूदेवी माता जी ललना जायो, तीर्थङ्कर सुत नाभि घर आयो।
दुल्हन सी आज लागे देखो अयोध्यापुरी..........
म्हारे आंगण आज आईं.........मंगल घड़ी रे आई पावन घड़ी

2. अंतिम जन्म लिया प्रभु तुमने, स्वानुभूति रमणी को वरने।
५ फिर नरकों में भी पलभर देखो शांति पड़ी................
म्हारे आंगण आज आई........मंगल घड़ी रे आई पावन घड़ी

3. सुरपति ऐरावत ले आये, शची इन्द्राणी मंगल गीत गाये।
कलशा सजा ले आये क्षीर नीर भरी ....
म्हारे आंगण आज आई.........मंगल घड़ी रे आई पावन घड़ी

4. रत्नमयी पलना में झूले, निज वैभव के रतन न भूले
तीर्थेश्वर नाथ महिमा तुमरी जग में बड़ी
म्हारे आंगण आज आई.........मंगल घड़ी रे आई पावन घड़ी

5. ज्ञानमात्र का अनुभव करते, परज्ञेयों में जो नहीं रमते।
दृष्टि सदा निज में थिर रहती ज्ञानमयी
म्हारे आंगण आज आई.........मंगल घड़ी रे आई पावन घड़ी

(२२) छायो छायो छायो रे छायो ....

तर्ज (दु:ख भरे दिन बीत)

छायो छायो छायो रे छायो, आनंद छायो रे
जन्मकल्याणक आयो रे,
आयो आयो आयो रे आयो, जिन शिशु आयो रे
मरूदेवी ने जायो रे

1. देव-देवियाँ नृत्य रचाऐं, हर्षित हैं, सब सुरबालाऐं
जिनवर की भक्ति के रंग में, हम सब भी रंग जाऐं
ओऽऽऽसभी नाचें गाऐं
झूम-झूम कर नाच-नाचकर हर्षोत्सव मनाऐं
छायो छायो................

2. चंदन केशर घोलें सखियाँ, वंदनवार सजाऐं
बाजे दुंदुभी साज मनोहर, भूमंडल गुंजाऐं
ओऽऽऽ भूमंडल गुंजाऐं
झूम-झूम कर नाच-नाचकर जन्मोत्सव मनाऐं
छायो छायो................

3. अद्भुत ललना माँ ने जायो, तीन ज्ञान का धारी
अन्तर के आनंद में झूले, त्रिजग मंगलकारी
ओऽऽऽमंगलकारी
झूम-झूम कर नाच-नाचकर धर्मोत्सव मनाऐं
छायो छायो................

(२३) आनन्द अवसर आज...

(देवों द्वारा नित्य अभिषेक प्रसङ्ग पर)

आनन्द अवसर आज, सुरगण आये नगर में;
तीर्थङ्कर युवराज, आनन्द छाया नगर में;
स्वर्गपुरी से सुरपति आये, सुन्दर स्वर्णकलश ले आये;
निर्मल जल से तीर्थङ्कर का मङ्गलमय शुभ न्हवन कराये।
परिणति शुद्ध बनाय भविजन॥ 1॥

प्रभुजी वस्त्राभूषण धारें, चेतन को निर्वस्त्र निहारे;
एक अखण्ड अभेद त्रिकाली चेतन तन को भिन्न निहारें;
आनन्द रस बरसाय भविजन॥ 2॥

पुण्य उदय है आज हमारे नगरी में जिनराज पधारे;
निशदिन प्रभु की सेवा करने भक्ति सहित सुरराज पधारे;
जीवन सफल बनाय सुरगण॥ 3॥

सुरपति स्वर्गपुरी को जावें भोगों में नहीं चित ललचावें;
आनन्दघन निज शुद्धातम का रस ही परिणति में नित भावें।;
भेद-विज्ञान सुहाय भविजन॥ 4॥

(२४) रत्नों की वर्षा ...

रत्नों की वर्षा कराये इन्द्र लाला
माता की सेवा करे सुरबाला
रत्न कुक्षी धारी बनी शिवा देवी माता
स्वप्न देखे सोलह भोर
जय जयकार करे सब कोई
रत्नों.............
वस्त्रा भूषण भेंट करें माता की
वन्दना
धन्य धन्य आयेंगे देव
सज गई नगरिया हर्षे मेरा मन
मोर
रत्नों............
मतिश्रुत अवधि धारी बालक है
उपकारी
आओ प्रभुजी मिले चैन
गर्भ कल्याणक उत्सव मनाये
रत्नों...........

(२५) जन्मोत्सव प्रभु .....

जन्मोत्सव प्रभु को आयो रे।
प्यारो, आदीश्वर पायो रे।
प्रभु पायो रे, प्रभु पायो रे।
आदीश्वर आयो रे।
कृष्ण पौष एकादश आई अयोध्या नगरी में
उन्नत ऐरावत गज आया, इन्द्रासन भी कम्पा
ताण्डव नृत्य रच के इन्द्र हरषे।
गोदी में प्रभु को लाई रे।
५ प्यारो प्रभु आदीश्वर पायो रे
प्रभु पायो रे 3......................
आदीश्वर पायो रे
सनत कुमार माहेन्द्र सुरपति, चौंसठ चँवर दुरावे
शेष शुक्र जयकार ध्वनि से गगनाम्बर गुंजावे
मेरु ले जावे कलश भर लावे
न्हवन करायें रे।
प्यारो प्रभु आदीश्वर पायो रे
प्रभु पायो रे, प्रभु पायो रे
आदीश्वर पायो रे

(२६) नीला नीला गगन है.......

नीला नीला गगन है, आयेंगे प्रभु बाल
छप्पन कुमारी नाचे छम छम लाल।
सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पे है विशाल
अनहद बाजों की ध्वनि गूंजी तत्काल।
छप्पन....

सोलह कारण भावना का फल पाया है
तीर्थंकर बालक बन गोदी में आया है
छप्पन....

वामा मरुदेवी ने बेटा पाया है।
अयोध्या नगरी में सारा वैभव आया है
छप्पन कुमारी...........

(२७) त्रिशाला नन्दन ....

त्रिशाला नन्दन का रूप निहार आई रे,
कारे कजरा की रेख लगाय आई रे।
कुन्दलपुर की शुभ नगरी में
तन मन धन सब बार आई रे।
ओ हों जी बार आई रे॥ कारे कजरा की...

(२८) प्यारी नगरी में ....

प्यारी नगरी में आई अजब की खुशाली
कि रंग केशर बरसे

केशर बरसे रे सुगंध वाली
फूलों फलों भरी ये झुकी है डाली
प्यारी नगरी में आई अजब की खुशाली
कि रंग केशर बरसे।

भाग्य सितारो म्हारो चमचम चमके
चैतन्य चाँद म्हारो दम दम दमके
५ नाभिराय लुटाये रतन भण्डार
प्यारी नगरी.........

पूजा विधान करे राजे महाराजे
जय जय की गूंज सारी नगरी में बाजे
मरुदेवी 2 के खुशियाँ हिये न समाय
प्यारी नगरी.........

रंगोली सजाओ गाओ मंगलगान मिलके
प्रभुजी पधारे हर्षित होंगे सुनके
तीनों लोकों में शान्ती सरिता बह जाये
प्यारी नगरी में..........

८

तपकल्याणक खण्ड

(१) निर्ग्रन्थों का मार्ग.....

निर्ग्रन्थों का मार्ग................
निर्ग्रन्थों का मार्ग हमको प्राणों से भी प्यारा है................
दिगम्बर वेश न्यारा है .... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ टेक॥

शुद्धात्मा में ही, जब लीन होने को, मन किसी का मचलता है;
तीन कषायों का, तब राग परिणति से, सहज ही टलता है।
वस्त्र का धागा...... वस्त्र का धागा, नहीं फिर उसने तन पर धारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ 1॥

पञ्च इन्द्रिय का, विस्तार नहीं जिसमें, वह देह ही परिग्रह है;
तन में नहीं तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा की गृह है।
पर्यायों से पार ...... पर्यायों से पार, त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ 2॥

मूलगुण का पालन जिनका सहज जीवन, निरन्तर स्वसंवेदन;
एक ध्रुव सामान्य, में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण।
निर्विकल्प अनुभव...... निर्विकल्प अनुभव से ही, जिनने निज को श्रृंगारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ 3॥

आनन्द के झरने, झरते प्रदेशों में ध्यान जब धरते हैं;
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता है, श्रेणी जब चढ़ते हैं;
अन्तर्मुहूर्त में .....अन्तर्मुहूर्त में ही, जिनने अनन्त चतुष्टय धारा है;
दिगम्बर वेश न्यारा है............... निर्ग्रन्थों का मार्ग॥ 4॥

(२) चले ससुराल...

चले ससुराल..ऐरावत पे हो सवार करे अनोखा श्रृंगार;
चले नेमी राजा ब्याह रचाने को, अपनी राजुलनार रिझाने को ॥ टेक ॥

बाजे हिल मिल देखो गाये, चारों तरफ बज रही बधाएँ;
दशों दिशायें मस्त हो रही, सखियाँ झूमें नाचे गायें ॥ 1 ॥

नभ सब झूम उठ रहे देख, दृश्य वो आला रे आला;
गजरथ घोड़े पयादे अनगिनत, लगती हो जैसे सेनाओ सेना।
सनमुख गज पर छत्र के नीचे त्रैलोक्यनाथ विराजा ओ राजा;
कोई कहीं का राजकुंवर तो कोई कहीं का राजा महाराजा ॥ 2 ॥

अभी ससुराल पहुँच भी न पाये, पड़ा पशुबन्धन का फेरा ओ फेरा;
५ यह सब देख प्रभु बिलखाए, जग से नाता तोड़ा ओ तोड़ा;
जग से रथ को मोड़ा ओ मोड़ा.................... ॥ 3 ॥

चले नेमी राजा अब देखो वन के बाबा चले जाये गिरनार;
उनके पीछे राजुलनार, चले भव-भव के बन्धन छुड़ाने को ॥ 4 ॥

(३) जन-जन को अचरज...

जन-जन को अचरज आयो, नेमी ने रथ मुडवायो;
नेमिकुंवर के परिणामों में, उपशम रस उमड़ायो उमड़ायो ॥ टेक ॥

नेमिकुंवर दुल्हा बन आये, छप्पन कोटि बराती लाये;
ब्याह को रङ्ग उमड़ायो...... उमड़ायो। जन-जन..... ॥ 1 ॥

पशुओं के क्रन्दन को सुनकर, जग की स्वारथ वृत्ति देखकर;
ब्याह का राग नशायो...... नशायो। जन-जन...... ॥ 2 ॥

समुद्रविजय अचरज में भारी, पुत्र विवाह की है तैयारी;
रङ्ग में भङ्ग कैसे आयो...... जी आयो। जन-जन...... ॥ 3 ॥

राजुल को बाबुल समझाये, बेटी दूजा ब्याह रचावें;
राजुल को नेमी मन भायो...... भायो। जन-जन...... ॥ 4 ॥

शोक बहुत राजुल के मन में किन्तु लगाया चित्त संयम में;
दीक्षा में चित्त रमायो...... रमायो। जन-जन...... ॥ 5 ॥

(४) रोम-रोम में नेमिकुंवर...

रोम-रोम में नेमिकुंवर के उपशम रस की धारा;
राग-द्वेष के बन्धन तोड़े, वेश दिगम्बर धारा॥ टेक॥

ब्याह करने को आये, सङ्ग बराती लाये; ५
पशुओं को बन्धन में देखा, दया सिन्धु लहराये।
धिक-धिक जग की स्वारथ वृत्ति कहीं न सुक्ख लघारा॥ 1 ॥

राजुल अति अकुलाये, नौ भव की याद दिलाये;
नेमि कहें जग में न किसी का, कोई कभी हो पाये।
रागरूप अङ्गारों द्वारा जलता है जग सारा॥ 2 ॥

नौ भव का सुमिरण कर नेमी, आतम तत्त्व विचारे;
शाश्वत ध्रुव चैतन्यराज की, महिमा चित्त में धारें।
लहराता वैराग्य सिन्धु अब भायें भावना बारा॥ 3 ॥

राजुल के प्रति राग तजा है, मुक्ति वधु को ब्याहें;
नग्न दिगम्बर दीक्षा गह कर, आतम ध्यान लगाये।
भव बन्धन का नाश करेंगे, पावें सुख अपारा॥ 4 ॥

(५) गिरनारी पर तपकल्याणक...

गिरनारी पर तप कल्याणक, नेमि बनेंगे मुनिराज रे ॥ 1 ॥;

प्रभुजी बारह भावना भायें, परिणति में वैराग्य बढ़ायें,
हम भी बनेंगे मुनिराज रे ॥ 2 ॥

शुद्धातम रस को ही चाहे विषय भोग विष सम ही लागें,
राग लगे अंगार रे ॥ 3 ॥

प्रभुजी वेश दिगम्बर धारें, चेतन की निर्ग्रन्थ निहारें,
बरसे आनन्द धार रे ॥ 4 ॥

५ (६) वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी.....

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी।
साधु दिगम्बर, नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी ॥ टेक ॥

कंचन काँच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी;
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी ॥ 1 ॥

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी;
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ॥ 2 ॥

जोरि युगल कर भूधर विनवे, तिन पद ढोक हमारी;
भाग उदय जब दर्शन पाऊँ, ता दिन की बलिहारी ॥ 3 ॥

(७) ऐसे मुविर देखे वन में...

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग-द्वेष नहीं मन में ॥ टेक ॥
ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर, मगन रहे ध्यानन में ॥ 1 ॥
चातुर्मास तरुतल ठाढ़े, बूँद सहे छिन-छिन में ॥ 2 ॥
शीत मास दरिया के किनारे, धीरज धारें ध्यानन में ॥ 3 ॥
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊँ, देत ढोक चरणन में ॥ 4 ॥

(८) आनन्द अवसर आयो...

आनन्द अवसर आयो, मुनिवर दर्शन पायो,
परम दिगम्बर सन्त पधारे, जीवन धन्य बनायो-बनायो।

पुण्य उदय है आज हमारे, नेमीश्वर मुनिराज पधारे;
श्री मुनिवर के दर्शन करके शुद्ध हुए हैं भाव हमारे।
जीवन सफल बनायो... बनायो ॥ 1 ॥

वरदत्त राजा हर्षित भारी आहार दान की है तैयारी;
निराहार चेतन राजा के अनुभव से है आनन्द भारी।
मुनिवर को पड़गाह्यो... पड़गाह्यो ॥ 2 ॥

हे स्वामी तुम यहाँ विराजो उच्चासन पर विराजो;
मन-वच-तन आहारशुद्ध है भाव हमारे अति विशुद्ध हैं।
अपने चरण बढ़ाओ... बढ़ाओ ॥ 3 ॥

दोष छयालिस मुनिवर टालें, अन्तराय बत्तीसों टालें;

दोषरहित निज के अनुभव से चतुरगति का भ्रमण निवारें।
तप को निमित्त बनायो... बनायो ॥ 4 ॥

मुनिवर अब आहार करेंगे, निज चैतन्य विहार करेंगे;
क्षायिक श्रेणी आरोहण कर मुक्तिपुरी को राज वरेंगे।
निज में निज को रमायो...रमायो ॥ 5 ॥

(९) अब विषयों में नाहि रमेंगे...

अब विषयों में नाहिं रमेंगे, चिदानन्द पान करेंगे;
चहुँ गतियों में नाहिं भ्रमेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे ॥

मैं नहिं तन का तन नहिं मेरा चेतनभाव में मेरा बसेरा;
अब भेद-विज्ञान करेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे ॥

विषयों का रस विष का प्याला, चेतन का आनन्द निराला;
अब ज्ञान में ज्ञान लखेंगे, निजानन्द का पान करेंगे ॥

ज्ञान बसे ज्ञायक में मेरा ज्ञायक में ही ज्ञान बसेरा;
अब क्षायिक श्रेणी चढ़ेंगे, निजानन्द पान करेंगे ॥

(१०) विषयों की तृष्णा को...

विषयों की तृष्णा को छोड़ के... वेष दिगम्बर धार,
विषयों की तृष्णा को छोड़, संयम की साधना में,
चल पड़े वीरकुमार ॥

परिग्रह की चिन्ता को तोड़ के निज के चिन्तन में,
रम रहे वीरकुमार ॥ टेक ॥

यह जीव अनादि से, है मोह से हारा,
चहुँगति में भटक रहा, दुःख सहता बेचारा;
कोई नहीं है शरण अतः, आतम की शरणा में,
जाना जगत् असार, चल पड़े वीरकुमार ॥ 1 ॥

प्रभु चल पड़े वन को, ध्यायें निज चेतन को,
सब राग तन्तु तोड़े, काटें भव बन्धन को;
फिर मोह शत्रु नाशें और क्षायिक चारित्र धारें,
जिसमें है आनन्द अपार, चल पड़े वीरकुमार ॥ 2 ॥

कर चार घातिया क्षय, प्रगटे चतुष्ट अक्षय,
सारी सृष्टि झलके, परिणति निज में तन्मय;
शाश्वत शिवपद पायें और अब मुक्तिवधू ब्याहें,
हो भव-सागर पार, चल पड़े वीरकुमार ॥ 3 ॥

(११) प्रभो आपकी अनुपम परिणति...

प्रभो ! आपकी अनुपम परिणति, दीक्षा का जो किया विचार;
जगत जनों को भी मङ्गलमय, नमन करें हम बारम्बार।
भव भोगों को नश्वर जाना, शुद्धात्मा जाना सुखकार;
मोह शत्रु का नाश करेंगे, प्रगटेगा सुख अपरम्पार ॥ 1 ॥

पहले से ही प्रभुवर तुमने, मिथ्यातम का किया विनाश;
हे दीक्षाग्राहक ! वैरागी, चरितमोह को करो परास्त।

रत्नत्रय आभूषण धारे, जङ्गल में यह मङ्गल कार्य;
रागी जन को है अति दुष्कर किन्तु आपको है स्वीकार॥ 2॥

धन्य धन्य है मुक्ति पथिक! तुम सहज सौम्य मुद्राधारी;
लक्ष्योन्मुख है ज्ञान आपका, चारित्र पथ के अनुगामी।
बारह जय करके दिग्विजयी, सुख वांछक हो हे जगदीश॥ 3॥

इन्द्रिय अरु प्राणी संयम, धारण करके हो आदरणीय;
शुक्लध्यान में कर्मेंधन को, नष्ट करेगा केवलज्ञान।
जग को मुक्तिमार्ग बताओ, हे त्रिभुवन के गुरु महान॥ 4॥

(१२) वेश दिगम्बर धार...

५ वेष दिगम्बर धार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के,
मुक्तिवधू के द्वार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥

पञ्च महाव्रत जामा सजाया, दशलक्षण का सेहरा बंधाया,
चारित्र रथ हो सवार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥ 1॥

बारह भावना संग बराती, समिति गुप्ति सब हिल मिल गाती,
हर्ष से मङ्गलाचार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥ 2॥

राग-द्वेष की आतिशवाजी छूटी, क्रोध कषाय की लड़िया टूटी,
समता पायल झंकार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥ 3॥

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, होम किया कर्म खपाकर
तप तेरा यशगान, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥ 4॥

शुभ बेला शिव रमणी वरेंगे, मुक्ति महल में प्रवेश करेंगे,
गूँजेगी ध्वनि जयकार, चले हैं मुनि दूल्हा बन के॥ 5॥

(१३) प्रभु बैठे आदि कुमार............

प्रभु बैठे आदि कुमार विचारे मन में
मंगल सुख है आत्म रमण में
सो सुख नाही विषियन में-2

जन्म दिवस दीक्षा में बदला
राग नहीं किंचित मन में-2 हो ऽ ऽ ऽ

अम्बर ओढ़न, धरती बिछावन
मौनवृती शोभित जंगल में -2 - हो ऽ ऽ ऽ

अर्न्तदृष्टि सौम्य है मुद्रा
शुद्धि की वृद्धि है क्षण क्षण में-2 हो ऽ ऽ

दीक्षा फल शिव धाम तथापि
केवल लक्ष्मी रमे संग में -2 हो ऽ ऽ ऽ

(१४) संसार लगने लगा ....

तर्ज (चलो रे डोली)

संसार लगने लगा सब असार, निज ज्ञायक की सुधी आई
यातियों के मार्ग की महिमा अपार द्वादश अनुप्रेक्षा मन भाई

1. उपशम रस की धारा (बहती)
अंतर परिणती ये ही कहती
जन्ममरण का अंत होयेगा
अनगारियों का पंथ होयेगा
लोकांतिक देवों ने की जय-जयकार
धन्य-मुनि दशा मन भाई

2. दशों-दिशाओं की चुनरिया
ओढ़ चले मुक्ति डगरिया
मुक्ति नगर को चले दिगंबर
हर्षित धरा और है अंबर
स्वर्गों से पुष्पों की वर्षा अपार
दिगंबर मुद्रा मन भाई

3. सुरपति शिविका ले आये
पालकी में प्रभु को बिठाये
पंचमुष्ठी केशलोंच करके
वस्त्राभूषण सब तज के
तिल तुष मात्र न परिग्रह धार
यथा (जगत) मुद्रा मनभाई।

(१५) श्री नेमीकुंवर गिरनारी चाले, ...

श्री नेमीकुंवर गिरनारी चाले, मुक्तिवधू को ब्याहें।
रङ्गराग से भिन्न निराले शुद्धातम को चाहें॥ टेक॥

भाएँ बारह भावना, समझें जगत असार।
शुद्धातम चिन्तन करें, वेश दिगम्बर धार॥
जिन चैतन्य सुधारस पीते, पीते नहीं अघावें॥ 1॥

पञ्चमहाव्रत अरु समिति, पञ्चेन्द्रिय जय धार।
षट् आवश्यक पालते, सातों गुण सुखकार।
अन्तर बाहर संयम धारे, गुण श्रेणी अवगाहें॥ 2॥

विष सम पञ्चेन्द्रिय विषय की, चित में नहिं चाह।
शुद्धातम में लीन हो, गही मुक्ति की राह॥
क्षायिक चारित्र कंकण बाँधे, तिल तुष भी नहिं चाहें॥ 3॥

क्षपक श्रेणी चढ़कर लहें, मुक्ति महल का द्वार।
सहज शुद्ध चैतन्य का, अवलंबन ही सार।
महा मोह क्षय शीघ्र करेंगे, अनंत चतुष्टाय धारें॥ 4॥

(१६) मङ्गल बेला आज............

तर्ज (कौन दिशा में लेके चला रे बटुरिया)

मङ्गल बेला आज आई री सखिरीया
हुआ लहर–लहर ये चेतन का घर
जरा निरखन दे।

अनन्त गुणों से छलाछल ये सागरिया
कहीं पाये जो गर, गोते खावे ना सवर, सुख पावेंगे
मङ्गल बेला...............

अब की बार हम जायेंगे जग से, मोह का पाया अन्त रे
अन जाना एक आतम है प्यारे कर ले उसका संग रे
मोह जाल में फस मत जाना, ना करना कुसंग रे
संग करने का निज वादा है सखिरीया हुआ लहर लहर......
मङ्गल बेला...............

कितनी दूर अब कितनी दूर है ऐ चेतन तेरा धाम रे
अरूपी से पहचान हुई तो जीवन हो गया धन्य रे
सम्यक हीरा परख लिया तो कटे चौरासी के फन्द रे
फन्द हरने का भव पाया है सखिरीया... हुआ लहर लहर....
मङ्गल बेला...............

(१७) वैराग्य भावों के ....

तर्ज- (आने से उसके आये बहार....)

वैराग्य भावों के लेके आधार,
तप संयम से करने श्रृंगार........
बड़ी ही सुहानी है.......ये मंगल घड़ी।
बड़ी ही सुहानी है.......ये मंगल घड़ी।

देह नेह को तजकर, निज शुद्धतम को ध्यावे....
भव समुद्र सिमट कर, निज ज्ञान सिन्धु लहरावे...
राग की आग बुझाई है....
बड़ी ही सुहानी है... ये मंगल घड़ी...

द्वादश तप को धरि के, करम धूलिको धो डालेंगे...
मोह तपन को तजिके, शांत सरोवर में अब गाहे...
बारह भावना भाई है...
बड़ी ही सुहानी है ये मंगल घड़ी....

९

ज्ञानकल्याणक खण्ड

(१) घर-घर आनन्द छायो.......

घर-घर आनन्द छायो मुनिवर ने केवल पायो ॥ टेक ॥

शुक्लध्यान का दूजा पाया, प्रभु ने आतमध्यान लगाया;
पहले चारित्रमोह विनाशा, चारित्र रत्न को पाया।
चहुँगति दुःख नशायो नशायो ॥ 1 ॥

मात्र एक अन्तर्मुहूर्त में, ज्ञान-दर्शनावरण नशाया;
ततक्षण ही निज आत्मवीर्य से, अन्तराय घातिया नशाया।
अनन्त चतुष्टय पायो जी पायो ॥ 2 ॥

शुक्लध्यान का तीजा पाया, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति सुहाया;
प्रभु ने अद्‌भुत ध्यान लगाया काय योग अतिसूक्ष्म रहाया।
आतम रस बरसायो-बरसायो ॥ 3 ॥

शुक्लध्यान का चौथा पाया, व्युपरतिक्रियानिवृत्ति सुहाया;
प्रभु ने योग निरोध कराया मन-वचन-काय सम्बन्ध नशाया।
शाश्वत सिद्ध पद पायो जी पायो ॥ 4 ॥

पुण्य उदय है आज हमारे नेमीश्वर गिरनार पधारे;
आत्मसाधना पूरी करके प्रभु शाश्वत शिवधाम पधारे।
सुरपति ने उत्सव मनायो मनायो ॥ 5 ॥

५

(२) समवसरण स्तवन

कल्पद्रुम यह समवसरण हैं भव्यजीव का शरणागार;
जिनमुख घन से सदा बरसती चिदानन्दमय अमृत धार।

जहाँ धर्मावर्षा होती वह समवशरण अनुपम छविमान;
कल्पवृक्ष–सम भव्यजनों को देता गुण अनन्त की खान।
सुरपति की आज्ञा से धनपति रचना करते हैं सुखकार;
निज की कृति ही भासित होती अति आश्चर्यमयी मनहार ॥ 1 ॥

निजज्ञायकस्वभाव में जमकर प्रभु ने जब ध्याया शुक्लध्यान;
मोहभाव क्षयकर प्रगटाया यथाख्यात चारित्र महान।
तब अन्तर्मुहूर्त में प्रगटा केवलज्ञान महासुखकार;
दर्पण में प्रतिबिम्ब तुल्य जो लोकालोक प्रकाशनहार ॥ 2 ॥

गुण अनन्तमय कला प्रकाशित चेतन–चन्द्र अपूर्व महान;
राग आग की दाह रहित शीतल झरना झरता अभिराग।
निज वैभव में तन्मय होकर भोगें प्रभु आनन्द अपार;
ज्ञेय झलकते सभी ज्ञान में किन्तु न ज्ञेयों का आधार ॥ 3 ॥

दर्शन ज्ञान वीर्य सुख से हैं सदा सुशोभित चेतनराज;
चौतिस अतिशय आठ प्रातिहार्यों से शोभित हैं जिनराज।
अन्तर्बाह्य प्रभुत्व निरखकर लहें अनन्त आनन्द अपार;
प्रभु के चरण–कमल में वन्दन कर पाते सुख शान्ति अपार ॥ 4 ॥

(३) समवसरण स्तुति

मङ्गलाचरण (दोहा)

धर्म काल वर्ते अहो! धर्म स्थान विदेह;
धर्म प्रवर्तक बीस जिन, गर्जे नित्य सदेह ॥ 1 ॥

समवशरण महिमा (वीरछन्द)

जिनवर जहाँ सुशोभित हैं, वह समवशरण अति शोभावान;
जिसकी लोकोत्तर शोभा से फीका पड़ता है सुरधाम।
सुरपति की आज्ञा से धनपति रचना रचते रम्य महान;
स्वयं स्वयं की रचना लखकर, स्वयं लहें आश्चर्य महान ॥ 2 ॥

समवशरण विस्तार (सोरठा)

भव्य अचित्य महान, रत्नमयी रचना अहो;
जिनवर धर्म स्थान, बारह योजन व्यास का ॥ 3 ॥

धुलिसाल कोट (वीरछन्द)

सवशरण को घेरे कंकण सम यह धूलीसाल विशाल;
विविध वर्ण रत्नों की रज से रचकर जिसको देव निहाल।
रत्नों से किरणों की बहुरङ्गी ज्योति अति फैल रही;
क्या यह इन्द्रधनुष उतरा है सेवा करने जिनवर की ? ॥ 4 ॥

(दोहा)

धूलि साल के सामने मानस्तम्भ है चार;
स्वर्णमयी अति उच्च हैं मानी-मान निवार ॥ 5 ॥

चैत्यप्रसाद भूमि (वीरछन्द)

छत्र चँवर शोभे, भव्यों का करें निमन्त्रण ध्वजा विशाल;
घण्टे अरु वाजिंत्र बजें, सुरपति करते प्रतिमा प्रक्षाल।
चहुँ दिशि वापी चार स्फटिक-तटयुत निर्मल नीर भरा;
भाव सहित वंदूँ यह मानस्तम्भ मान सब गला रहा॥ 6॥

(हरिगीत)

जिनालय की भूमि अति पावन तथा दैवी अहो;
है अनेक जिनालयों की मनोहर रचना अहो।
देव अरु मानव वहाँ प्रभु भक्ति भीने हृदय से;
नृत्य करते, प्रभु चरण में चित्त को अर्पित करें॥ 7॥

खातिका भूमि (दोहा)

जल से पूरित खातिका शोभित वलयाकार;
हँसे तरङ्गों से सदा जलचर रमें अपार॥ 8॥

(चौपाई)

निर्मल नीर सुतट मणियों का, क्या यह चन्द्रकान्तमणि द्रवता;
प्रभु पूजन की उच्च भावना, ले मानो उतरी सुर-सरिता॥ 9॥

लतावन भूमि (दोहा)

भव्य लतावन की धरा चहुँदिशि महके गन्ध;
खिले पुष्प ऐसे लगें लता हँस रही मन्द॥ 10॥

(हरिगीत)

विविध रङ्गी पुष्प रज उड़ती जहाँ गति मन्द से;
जो ढाँकती वन गमन को नित सांध्य रवि के रङ्ग से।

दिव्यक्रीड़ा स्थल जहाँ पर लता मण्डल भव्य है;
शीतल शिला शशिकान्तमणि की इन्द्र विश्रांति लहें॥ 11॥

(चौपाई)

षटऋतु के सब फूल खिले हैं, मन्द सुगन्ध पवन बहती है;
क्या सुगन्ध यह वन पुष्पों की ? या सुकीर्ति है श्री जिनवरकी॥ 12॥

स्वर्णमयी कोट (दोहा)

स्वर्णमयी मणि जड़ित है कोटि अति उत्तुंग;
कनक प्रभा में मानिये शोभित है नक्षत्र॥ 13॥

(वीरछन्द)

कर में शस्त्र लिये हैं सुरगण द्वारपाल बन खड़े हुए;
मङ्गल द्रव्य सुरम्य नवों निधि तोरण भी है बँधे हुए।
दोनों ओर द्वार के सुन्दर नाट्य भवन हैं स्फटिकमयी;
और दूर पर धूम्रघटों की धूम गगन को ढांक रही॥ 14॥

(हरिगीत)

यह नाट्यशाला गूंजती वीणा मृदङ्ग सुताल से;
गन्धर्व किन्नर गान से सुरकामिनी के नृत्य से।
देवांगना जयघोष करती हर्षमय नर्तन करें;
जिन-विजय का अभिनव करें कुसुमाञ्जलि अर्पण करें॥ 15॥

उपवन भूमि (दोहा)

चम्पक आम्र, अशोक आदि वन भू की छटा मनोहर है;
रम्य नदी तालाब, भव अरु चित्रकला–गृह सुन्दर है।
मन्द स्वरों में कोकिल कुहके वृक्ष फलों से लदे हुए;
प्रभु चरणों में अर्पित करने अर्घ्य लिए वे खड़े हुए॥ 16 ॥

(त्रोटक)

बहु वृक्ष विशाल मनोहर हैं, रवि–किरणों के अवरोधक हैं;
जगमग–जगमग तरु–तेज महा, है दिन या रात न जाय कहा॥ 17 ॥
तहाँ चैत्य तरु–तल दिव्य महा, जिनबिम्ब सुशोभित होंय जहाँ;
सुरगण भक्ति से नाच रहे, जय घोषों से वन गूँज उठै॥ 18 ॥

(दोहा)

रत्न जड़ित है स्वर्ण की कटि–करधनी समान;
शोभित है वन–वेदिका फिर ध्वज भूमि जान॥ 19 ॥

ध्वज भूमि (दोहा)

है स्वर्ण के स्तम्भ पर ध्वज पंक्ति की शोभा महा;
कमल माला अरु मयूरादिक सुचिह्नोयुत अहा!
क्या त्रिलोकीनाथ का यह विजय–ध्वज फहरा रही ?
प्रभु पूजने के लिए अथवा जगत् को बतला रही॥ 20 ॥

रजतमयी कोट (दोहा)

चाँदी का यह कोट है उन्नत कान्तिामन;
नाट्यगृहों अरु लक्ष्मी से अति शोभावान॥ 21 ॥
यह कल्पतरु भू रम्य अहा.....

कल्पवृक्ष भूमि (त्रोटक)

यह कल्पतरु भू रम्य अहा, सुर-सरि भवनादिक स्वर्गसमा;
दशभेद अहो तरु कल्प तले, निज-धाम विसरि सब देव रमें॥ 22॥

मालाङ्ग तरु बहु माल धरे, दीपाङ्ग तरु पर दीप जले;
पुष्पों दीपों की माला से, वन पूज रहा क्या जिनवर को॥ 23॥

सिद्धार्थ तरु अति दिव्य दिखे, जो मनवांछित फलदायक है;
छत्रत्रय शोभित है तरु पर, घण्टा बाजे अरु फहरे ध्वज॥ 24॥

इस तरुतल में सिद्धबिम्ब रहे, सुरलोक जहाँ प्रभुभक्ति करे;
कोई स्तोत्र पढ़े, प्रभु गुण सुमरे, कोई नम्रपने जिनराज नमें॥ 25॥

कोई गान करे कोई नृत्य करे, निर्मल जल से अभिषेक करे;
कोई दिव्य दीप अरु धूपों से, अति भक्ति से जिनराज भजे॥ 26॥

स्वर्णमयी वेदी (दोहा)

फिर वन वेदी स्वर्ण की गोपुरादि संयुक्त;
अति सुन्दर प्रासादमय भूमि रत्न स्तूप॥ 27॥

भवन भूमि (चौपाई)

स्वर्ण स्तम्भ मणिमय दीवार, चन्द्र समान भवन हैं चार;
देव रमें अरु चर्चा करें, नृत्य करें प्रभु गुण उचरें॥ 28॥

स्तूप (हरिगीत)

है स्तूप अति ऊँचा मनोहर पद्मराग मणिमय अहा;
अरहन्त प्रभु अरु सिद्ध के बहुबिम्ब से शोभित महा
सुर असुर मानव भावभीने चित्त से पूजा करें;
अभिषेक नमन प्रदिक्षणा कर हर्ष बहु उर में धरें॥ 29॥

स्फटिक मणिमय कोट (दोहा)

कोट स्फटिकमयी ओ! सुन्दर अति उत्तुङ्ग;
पद्मराग के द्वार हैं मङ्गल द्रव्य दिपंत॥ 30॥
रत्नों की दीवार हैं रत्नों के स्तम्भ;
है इक योजन व्यास का उन्नत मण्डप-रत्न॥ 31॥

श्री मण्डप भूमि बारह सभायें (हरिगीत)

शोभित श्री मण्डप अहो! गणधर मुनि अरु आर्यिका;
तिर्यञ्च सुरगण और मानव की सुशोभित यह सभा।
मृग-सिंह अरु अहि-मोर भी निज बैर को हैं भूलते;
सब शान्तचित्त एकाग्र हो जिन वचन-अमृत झेलते॥ 32॥
इस श्री मण्डप में अहो! नित पुष्पवृष्टि सुर करें;
क्या स्फटिक मणिमय गगन में तारे अहो नित नव उगें।
किरणें रतन-दीवार की जो जल-तरङ्ग समान क्या?
जिनराज के उपदेश का अमृत महोदधि उछलता॥ 33॥

गन्धकुटी प्रथम पीठ (हरिगीत)

वैडूर्यरत्नों से बनी यह पीठ पहली शोभती;
वसु द्रव्य-मङ्गल और सोलह सीढ़ियाँ मन मोहती।
यश गण के शीश पर है धर्मचक्र विराजता;
सहस आरों की प्रभाव से सूर्य भी लज्जित हुआ॥ 34॥

द्वितीय पीठ

उस पीठ पर है पीठ स्वर्णिम अति मनोरम दूसरी;
मन मुग्धकारी पीत ज्योति चहुँ दिखा फैला रही।

आठ ध्वज सुन्दर मनोहर चिह्न युत लहरा रहे;
सिद्धप्रभु के गुण समान सुस्वच्छ सुन्दर शोभते॥ 35॥

तृतीय पीठ

विविध रत्नों से बनी यह पीठ मनहर तीसरी;
विविध रङ्गमयी सुरम्य प्रकाश यह फैला रही।
दैवी सुमन हैं हँस रहे वसु द्रव्य मङ्गल शोभते;
चारों निकायों के अमर इस पीठ की पूजा करें॥ 36॥

गन्धकुटी शोभा (वीरछन्द)

गन्धकुटी शोभे अति सुरभित पुष्प धूप की सौरभ से;
मोती की मालाएँ लटकें नभ को रङ्गे रत्नद्युति से।
रत्नमयी शिखरों पर मनहार लाखों ध्वज लहराते हैं;
सुन्दरता की अधिदेवी में जग वैभव झलकाते हैं॥ 37॥

सिंहासन प्रातिहार्य (हरिगीत)

देवी प्रभामय यह सिंहासन है निराला शोभता;
स्वर्णमय बहुमूल्य मणियों से जड़ित मन मोहता।
देवोपनीत सहस्त्रदल युत कमल जिस पर खिल रहा;
सुर-असुर और मनुष्य का मनमुग्ध अतिशय हो रहा॥ 38॥

जिनेन्द्र दर्शन (त्रोटक)

चतुराङ्गुल ऊपर जिन शोभें, नर-इन्द्र सुरेन्द्र मुनीश जजें;
निर-आलम्बी, जैसा आतम, बिन आलम्बी वैसा जिन तन॥ 39॥

चंवर ऐव छत्र प्रातिहार्य (हरिगीत)

क्षीर-अमृततुल्य उज्ज्वल चंवर चौसठ जिन ढुरें;
मानो समुद्र तरङ्ग, गिरि-निर्झर प्रभु सेवन करें।
त्रण छत्र शोभें शीश पर, जिन सुयश मूर्तिमन्त ज्यों;
मौक्तिक प्रभा है चन्द्र सम रत्नांशु रवि भासित अहो ॥ 40 ॥

अशोक वृक्ष प्रातिहार्य (हरिगीत)

योजन विशाल अशोक तरुवर शोक तिमिर निवारता;
मणिस्कन्ध मणिमय पत्र अरु मणिपुष्प से शोभित अहा।
झूलतीं बहुशाख अरु अलिगण मधुर गुञ्जन करें;
क्या वृक्ष हाथ हिला-हिला कर भक्ति से जिनवर भजें ॥ 41 ॥

जिनेन्द्र महिमा (त्रोटक)

चहुँ दिशि जिनवर के मुख दिखते, अशुचि नहीं दिव्य शरीर विषें;
नहि रोग क्षुधा न जरा तन में, न निमेष अहो नयनाम्बुज में ॥ 42 ॥

मणिपुञ्ज सुधारस अरु शशी से, जिन-तन सुन्दरता अधिक लसे;
अतिसौम्य प्रसन्नमुखाम्बुज में, छवि-नेत्र अलि अति लीन हुए ॥ 43 ॥

भामण्डल प्रातिहार्य

जिन-देह दिवाकर तेज विषें, रवि-शशि तारों का तेज छिपे;
सब-बिम्ब प्रभा से अधिक कान्ति, श्री जिनवर के भामण्डल की ॥ 44 ॥

सुर असुर तथा मानव निरखें, स्व-भवांतर सात प्रमोद धरे;
जिनदेह प्रभा अति पान में, जग के बहु मंगल दर्पण में ॥ 45 ॥

दिव्य ध्वनि देव-दुन्दुभि ऐवं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य

घन-गर्जन वत् जिनवाणी झरे, भवि चित्त-चकोर सुनृत्य करे;
सुर दुन्दुभि बाद्य बजे नभ में, हो पुष्प-वृष्टि बहु-योजन में ॥ 46 ॥

दिव्यध्वनि महिमा

कर्ण प्रिय प्रभु की ध्वनि सुनकर, गम्भीर अहो ! विस्मित गणधर;
ध्वनि वेग बहे भवि चित्त भींजे, शुचि ज्ञान झरे भवताप बुझे ॥ 47 ॥

दिव्यध्वनि अक्षर एक भले, बहुरूप बने सब जीव सुनें;
जैसे निर्मल जल एक भले, तरु भेदों से बहु भेद लहे ॥ 48 ॥

दिव्यध्वनि श्रवण का फल

वाणी सुनकर बहुज्ञानी बनें, अणुव्रतधारी, निर्ग्रन्थ बनें;
निर्ग्रन्थ मुनि जिनध्वनि सुनकर, निज अनुभव धार अखण्ड करें॥ 49 ॥

सर्वज्ञता और वीतरागता का वर्णन (हरिगीत)

मोह का अंकुर अहो! नहि शेष रहता है जहाँ;
अज्ञान का भी अंश जलकर भस्मरूप हुआ वहाँ।
निज दर्श आनन्द ज्ञान बल प्रगटे अनन्त अहो जहाँ;
जिनराज के पद-पंकजों में, स्थान मेरा हो वहाँ॥ 50 ॥

जिस तेज में परमाणुवत् लघु यह जगत् है भासता;
प्रगटा जहाँ परिपूर्ण ज्ञान अनन्त लोकालोक का।
त्रण काल की पर्याय युत सब द्रव्य को युगपत लखे;
अति नम्र होकर जिन-चरण में शीष यह मेरा झुके ॥ 51 ॥

देवोपनीत समवसरण से राग नहि किचिंत अहा;
मलिन रजकण के प्रति नहि द्वेष किचिंत भी रहा।
समवसरण अरु धूल जिसमें ज्ञेय केवल हैं अहो;
जिनराज जी ! उस ज्ञान को मम वन्दना शतबार हो ॥ 52 ॥

शत इन्द्रगण निज शीश धरते तुम चरण में हों भले;
इन्द्राणियाँ स्वस्तिक करती हों रतन-रज से भले।

पर आपकी परिणति नहि इन ज्ञेय के सन्मुख जरा;
निजरूप में डूबे हुये हो नमन तुमको जिनवरा॥ 53॥

जिनेन्द्र स्तवन

जग के आगाध तिमिर विनाशक सूर्य तुम ही हो प्रभो;
अज्ञान से अन्धे जगत के नेत्र तुम ही हो विभो।
भव जलधि में डूबे जनों की नाव भी तुम ही अहो;
माता-पिता अरु गुरु सब कुछ हे जिनेश्वर! आप हो॥ 54॥

तीर्थकर्ता हे प्रभो! तुम जगत में जयवन्त हो;
ॐकार मय वाणी तुम्हारी जगत् में जयवन्त हो।
समवसरण जिनेन्द्र के सब जगत में जयवन्त हों;
अरु चार तीर्थ सदा जगत में भी अहो जयवन्त हों॥ 55॥

समवशरण की महानता (दोहा)

समवसरण का शास्त्र में वर्णन किया विशाल;
किन्तु कहा उस जलधि का बिन्दु मात्र कुछ हाल॥ 56॥

बिन देखे समझें नहीं यह जिनवर का गेह;
भाग्य नहीं है भरत का बडभागी क्षेत्र विदेह॥ 57॥

जिनागम की महिमा (हरिगीत)

समवशरण जिनेन्द्र का हो यहाँ नहि यह भाग्य है;
साक्षात् जिनध्वनि का श्रवण भी हो न ऐसा भाग्य है।
तो भी सीमन्धर नाथ एवं वीर मङ्गल-ध्वनि की;
सुनी जाती गूँज है जिन आगमों में आज भी॥ 58॥

आश्चर्य जनक घटना (दोहा)

विक्रम शक प्रारम्भ में घटना इक सुखदाई;
जिससे ध्वनि विदेह की भरत क्षेत्र में आई ॥ 59 ॥

आचार्य कुन्दकुन्द को साक्षात् तीर्थङ्कर की विरह वेदना (हरिगीत)

बहु ऋद्धिधारी कुन्दकुन्द मुनि हुए इस काल में;
श्रुतज्ञान में जो कुशल अरु अध्यात्म रत योगीश थे।
साक्षात् श्री जिन-विरह की हुई वेदना आचार्य को;
हा! हा! सीमन्धरनाथ का नहि दरश है इस क्षेत्र को ॥ 60 ॥

विदेह गमन (वीरछन्द)

अरे! अचानक बोल उठे सत् धर्मवृद्धि हो श्री जिनराज;
सीमन्धर जिन समवशरण में अर्थ न समजी सकल समाज।
संन्धि विहीन ध्वनि सुनकर उस परिषद को आश्चर्य महान;
और दिखे तत्काल महामुनि मूर्तिमन्त अध्यात्म समान ॥ 61 ॥

हाथ जोड़कर खड़े प्रभु को नमें भक्ति में लीन हुये;
नग्न दिगम्बर छोटा-सा तन विस्मित थे सब लोग हुये।
विस्मय से चक्री पूछें हे नाथ! कहो ये कौन महान;
है समर्थ आचार्य भरत के करे धर्म की वृद्धि महान ॥ 62 ॥

(दोहा)

जिनवर की यह बात सुन हर्षित सकल समाज;
ऐलाचार्य सभी कहें छोटे से मुनिराज ॥ 63 ॥

भरतक्षेत्र में पुनरागमन (हरिगीत)

प्रत्यक्ष जिनवर दर्श कर बहु हर्ष ऐलाचार्य को;
ऊँकार ध्वनि सुनकर अहो अमृत मिला मुनिराज को।
सप्ताह एक ध्वनि सुनी श्रुत केवली परिचय किया;
शंका निवारण सभी कर फिर भरत पुनरागमन हुआ॥ 64 ॥

आचार्य कुन्दकुन्द की महिमा (रोला अडिल्ल)

गुरु परम्परा से जो वीर ध्वनि है पाई;
जा विदेह दिव्यध्वनि झेली खुद भी भाई।
मुनिवर ने है वही लिखा इन परमागम में;
कुन्दकुन्द का अति उपकार भरत भूतल में॥ 65 ॥

हो सुपुत्र तुम भरतक्षेत्र के अन्तिम जिन के;
महाभक्त हो क्षेत्र विदेह प्रथम जिनवर के।
हो सुमित्र भव में भूले हम भव्य जनों के;
कुन्दकुन्द को बार-बार वन्दन हम करते॥ 66 ॥

तीर्थङ्करदेव, जिनवाणी, आचार्य कुन्दकुन्द एवं पूज्य गुरुदेव का उपकारोल्लेख (दोहा)

नमूँ तीर्थनायक प्रभो! वंदूँ ध्वनि ऊँकार;
कुन्दकुन्द मुनि को नमूँ, जिन झेला ऊँकार॥ 67 ॥

जिनवर ध्वनि, मुनिकुन्द का, है उपकार महान;
कुन्दध्वनि दातार जो उपकारी गुरु कहान॥ 68 ॥

(४) ओंकारमयी वाणी तेरी...

ॐकारमयी वाणी तेरी जिनधर्म की शान है;
समवसरण देख के शान्त छवि देख के गणधर भी हैरान है॥ टेक॥

स्वर्ण कमल पर, आसन है तेरा सौ इन्द्र कर रहे गुणगान है;
दृष्टि है तेरी, नाशा के ऊपर, सर्वज्ञता ही तेरी शान है।
चाँद सितारों में, लाख हजारों में तेरी यहाँ कोई मिशाल नहीं है;
चार मुख दिखते, समवसरण में, स्वर्ग में भी ऐसा कमाल नहीं है।
हमको भी मुक्ति मिले बस इतना ही अरमान है॥ 1॥

सारे जहाँ में फैली ये वाणी गणधर ने गूँथी इसे शास्त्र में;
सच्ची विनय से श्रद्धा करे तो ले जाती है मुक्ति के मार्ग में।
कषायें मिटाये, राग को नशाये, इसके श्रवण से ये शान्ति मिलती है;
सुख का ये सागर, आत्म में रमणकर, आतम की बगिया में मुक्ति खिली है।
हम सब भी तुमसा बनें - ऐसा ये वरदान है॥ 2॥

मैं हूँ त्रिकाली, ज्ञान स्वभावी, दिव्यध्वनि का यही सार है;
शक्ति अनन्त का, पिण्ड अखण्ड, पर्याय का भी ये आधार है।
ज्ञेय झलकते हैं, ज्ञान की कला में, कैसा ये अद्भूत कलाकार है;
सृष्टि को पीता, फिर भी अछूता, तुझमें ही ऐसा चमत्कार है।
जग में है महिमा तेरी गूँज रहा नाम है॥ 3॥

(५) अरहन्त वन्दना......

निज आत्मा का ज्ञान अरु निज तत्व का श्रद्धान कर;
निज आत्मा में लीन होकर मुक्तिपथ पाया प्रवर॥

कैवल्य किरणों से प्रकाशित आत्म रवि है चमकता;
जहाँ लोक और अलोक का सम्पूर्ण वैभव झलकता॥

अनन्त दृग अरु ज्ञान से षट् द्रव्य-गुण-पर्याय का;
सामान्य और विशेष अवभासन समस्त पदार्थ का॥

नित सुख अतीन्द्रिय भोगते हे योग बिन आशीष तुम;
निज बल अनन्तानन्त से हे गणधरों के ईश तुम॥

हे मुक्तिपथ नायक महा-नायक समूची दृष्टि के;
हे कर्मभूत के विदारक तुम्हीं हो वर दृष्टि के॥

यह अर्घ्य है अर्पित प्रभो अनर्घ्य पद की कामना;
भी नहि रहे अब वृत्ति में तुम सम बनूँ निष्कामना॥

(६) सुनकर वाणी जिनवर की...

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी॥ टेक॥
काल अनादि की तपन बुझायी, निज निधि मिली अथाह है॥ 1॥
संशय भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यग्बुधि उपजाय जी॥ 2॥
नर भव सफल भयो अब मेरो बुधजन भेंटत पाय जी॥ 3॥

(७) धन्य-धन्य है घड़ी आज की...

धन्य-धन्य है घड़ी आज की जिनधुनि श्रवण परी;
तत्त्व प्रतीत भई अब मेरे मिथ्यादृष्टि टरी ॥ टेक ॥
जड़ तें भिन्न लखी चिन्मूरत चेतन स्वरस भरी;
अहंकार ममकार बुद्धि प्रति पर में सब परिहरी ॥ 1 ॥
पाप-पुण्य विधि बन्ध अवस्था भासी अति दुःख भरी;
वीतराग-विज्ञान भावमय परिणति अति विस्तरी ॥ 2 ॥
चाह-दाह विनसी बरसी पुनि समता मेघ झरी;
बाढी प्रीति निराकुल पद सों भागचन्द हमरी ॥ 3 ॥

५

(८) कर लो जिनवर का गुणगान.....

कर लो जिनवर का गुणगान, आई सुखद घ्ड़ी।
आई सफल घड़ी, देखो मङ्गल घड़ी॥ करलो......... ॥
वीतराग का दर्शन-पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छवि लख मैं जाऊँ बलिहारी ॥ 1 ॥
तीर्थङ्कर सर्वज्ञ हितंकर महामोक्ष के दाता।
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता ॥ 2 ॥
प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते।
धर्मध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते॥ 3 ॥
सम्यग्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।

रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता॥ 4॥
निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती।
निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती॥ 5॥

(९) आदि जिनन्दा-2 ....

आदि जिनन्दा-2 आदि जिनन्दा 2
दिव्य ध्वनि दुर्गति नाशीनी
स्व और पर में भेद प्रकाशिनी
जन्म-मरण भयभीत है तुमसे आ ऽ ऽ ऽ ऽ
अमर करे तेरी पूजा, नेमी................

अम्बर में लगता दरबार
भव्य करे तेरी जय जयकार
परम शान्त है मुद्रा तेरी आ ऽ ऽ ऽ
तुझसा नहीं कोई दूजा, नेमी............

पावन निश्चय नय व्यवहार
स्याद्वाद वाणी भव पार
अमर तत्व चैतन्य सभी का आ ऽ ऽ
अद्‌भुत श्री जिन महिमा
नेमी जिनन्दा................

(१०) गागर अमृत की भर......

तर्ज- (जल भरि भरी लाओ अपनी सखियों को बुलाओ)

गागर अमृत की भर लाई, माता श्री जिनवाणी आई
सुन जिनवर वचन हर्षाओ रे हो ...5 हो सुन जिनवर

आओ अमर तत्व को ध्याओ, सिद्ध सरीखा निज को पाओ
सुन जिनवर वचन हर्षाओ रे हो हो हो सुन जिनवर...

जल निर्मल है मलको हटाओजी 3 आश्रव भाव अलग ही पाओजी-3
उज्ज्वल अविचल आतम पाओ अपना है अपने में आओ
सुन जिनवर...........

५ आओ जिनवाणी दर्पण निहारोजी 3 लोकालोक को अपने में पाओजी-2
भवसागर गोखुर में पाओ, आओ द्वादशांग मन लाओ
सुन जिनवर...............

आतम ज्ञान में मन को लगाओजी-3 निज आतम में आनन्द पाओजी-3
रत्नत्रय रंग में रंग जाओ, ध्यावो गावो और अपनाओ
सुन जिनवर वचन हरषाओ रे
हो हो हो सुन जिनवर.............

(११) ऋषभ पधारे भैय्या .....

ऋषभ पधारे भैय्या आज, बाजे रे बाजे शहनाई–2
म्हारा प्रभुजी अयोध्या वाला, मरुदेवी का प्यारा 2 लाल
गाओ – रे गाओ। सब भाई
आदि प्रभु आदी तीर्थंकर, स्वर्गों से पधारे है आज
नाचो रे नाचो सब भाई
नाभिराय राजा के नंदन, वन्दन शत शत बार
जय–जय बोलो सब भाई
म्हारा प्रभुजी अन्तरदृष्टि, सर्वज्ञ अरु वीतराग
बजाओ भाई शहनाई
आदि प्रभुजी की मनहर मूरत, समवशरण आयो आज
जयकार करो सब भाई
देव–देवियां रत्न बरसावे, केशर की छोड़ो पिचकारी
आओ रे आओ सब भाई
धन्य हो गये ते परमाणु जिन, प्रभु की देह रचाई
नाचो रे नाचो सब भाई
देव दुदुंभी स्वर्गों में बाजे, हमने धरती पे धूम मचाई
जय–जय बोला सब भाई

(१२) श्री आदीश्वर भक्ति...

आदीश्वर स्वामी, वन्दूँ मैं बारम्बार।
धन्य घड़ी प्रभु दर्शन पाये, वन्दूँ बारम्बार ॥टेक ॥

कर्मभूमि की आदि में, मुक्तिमार्ग अविकार।
दर्शायो आनन्दमय, कियो परम-उपकार ॥१ ॥

परम-शान्तमुद्रा अहो, भेदज्ञान दर्शाय।
दिव्यध्वनि सुनि आपकी, विभ्रम सर्व पलाय ॥२ ॥

भव्य अनेकों तिर गये, निजस्वरूप को साध।
इस अशरण संसार में, आपहि तारण हार ॥३ ॥

मुक्ति मार्ग प्रभु आपका, हमें आज भी प्राप्त।
भेदज्ञानियों से अहो, निज में ही हे आप्त ॥४ ॥

प्रभुता प्रभुवर आप सम, दीखे अन्तजर माहिं।
होय परम निर्ग्रन्थता, भाव सहज उमगाहिं ॥५ ॥

नहीं प्रयोजन जगत से, चाह न रही लगार।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, सहजरूप सुखकार ॥६ ॥

(१३) अनन्त चतुष्टयवंत हुये......

अनन्त चतुष्टयवंत हुये, कैवल्य भानु उदित हुआ
प्रभु मुक्ति रमा के कंत हुऐ, अब ज्ञान कल्याणक आ गया
अनन्त चतुष्ट...........................

1. समवशरण में स्वर्णकमल पर, पदमासन विराजित है
ओंकारमयी वाणी सुनने, बारह सभाऐं सुशोभित हैं
प्रभु अतिशय महिमावंत हुए, अब ज्ञान कल्याणक आ गया
अनंत चतुष्टय............

2. चार घातिया कर्म नाश, अरिहंत अवस्था आई है
ओंकारध्वनि अमृत वर्षा की, मंगल घड़िया लाई हैं
प्रभु आज श्री अरिहंत हुये, अब ज्ञान कल्याणक आ गया
अनंत चतुष्टय............

3. भूत भविष्यत वर्तमान सब, वर्तमानवत् जान रहे
कैवल्य कला की महिमा से, किंचित न अपना मान रहे
केवल ज्ञानी भगवंत हुये, अब ज्ञान कल्याणक आ गया
अनंत चतुष्टय............

(१४) श्री अरहंत छवि ......

श्री अरहंत छवि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है ।।टेक ।।

वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है।
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु ध्यान महान बढ़ाया है ।। 1 ।।

रूप सुधाकर अंजलि भर भर, पीवत अति सुख पाया है।
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद सची पति गाया है ।। 2 ।।

तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै मांहि समाया है।
भ्रमतम दुःख आताप नस्यो सब, सुख सागर बढ़ि आया है ।। 3 ।।

प्रगटी उर सन्तोष चन्द्रिका निज स्वरूप दर्शाया है।
धन्य-धन्य तुम छवि जिनेश्वर, देखत ही सुख पाया है। ।। 4 ।।

(१५) हे जिन तेरो सुजस ....

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत हैं मुनिजन ज्ञानी ।। टेक ।।

दुर्जय मोह महाभट जाने, निज वस कीने जग प्रानी।
सो तुम ध्यान कृपान पान गहि, तत् छिन थिति हानी ।।1 ।।

सुप्त अनादि अविद्या निद्रा जिन जन निज सुधि बिसरानी।
है सचेत तिन निज निधि पाई श्रवण सुनी जब तुम वानी ।। 2 ।।

मङ्गलमय तू जग में उत्तम, तू ही शरण शिव मग दानी।
तुम पद सेवा परम औषधि जन्म जरामृत गद हानी ।। 3 ।।

तुमरे पञ्च कल्याणक मांही त्रिभुवन मोद दशा ठानी।
विष्णु विदम्बर जिष्णु दिगम्बर बुध शिव कहि ध्यावत ध्यानी ॥4॥
सर्व दर्व गुण परिजय परिणति, तुम सुबोध में नहिं छानी।
तातें 'दौल' दास उर आशा, प्रगट करी निज रस सानी॥ 5॥

(१६) निरखत जिनचन्द्र-वदन......

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई ॥टेक॥

प्रगटी निज-आन की पिछान ज्ञान-भान की।
कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई॥ निरखत ॥1॥

शाश्वत आनन्द स्वाद पायौ विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई॥ निरखत॥ 2॥

साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई॥ निरखत॥ 3॥

धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्ते जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई॥ निरखत॥ 4॥

(१७) सर्वज्ञता का धाम......

तर्ज (चौदहवीं का चाँद)

सर्वज्ञता का धाम हो या ज्योतिवान हो
तुम तो प्रभु तुम्हीं में दे दीप्यमान हो

तीन छत्र सिर पे तेरे सुन्दर सजे हुए।
भामंडल की प्रभा से भविजन खिले हुए
चर्चाएँ ध्रुवधाम की तुम तीर्थनाथ हो
सर्वज्ञता का धाम...............

मूरत है तेरी शान्तिमय गणधर करे नमन।
शत इन्द्र तेरी शान पर गद्‌गद् हुए है मन
पावेंगे कब तुम्हें प्रभु तुम शुद्ध ज्ञान दो
सर्वज्ञता का धाम...............

हम अपनी भूल से सभी व्याकुल महा दुखी
धर्मी का ध्यान करने से हो जायेंगे सुखी
कर्मों का नाश हो मेरे और मुक्ति वास हो
सर्वज्ञता का धाम...............

(१८) जय श्री ऋषभ ....

जय श्री ऋषभ जिनंदा! नाश तौ करो स्वामी मेरे दुखदंदा ॥टेक. ॥

मातु मरुदेवी प्यारे, पिता नाभिके दुलारे।
वंश तो इक्ष्वाक, जैसे नभवीच चंदा ॥१ ॥जय श्री. ॥

कनक वरन तन, मोहत भविक जन।
रवि शशि कोटि लाजैं, लाजै मकरन्दा ॥२ ॥जय श्री. ॥

दोष तौ अठारा नासे, गुन छियालीस भासे।
अष्ट-कर्म काट स्वामी, भये निरफंदा ॥३ ॥जय श्री. ॥

चार ज्ञानधारी गनी, पार नाहिं पावै मुनी।
'दौलत' नमत सुख चाहत अमंदा ॥४ ॥जय श्री. ॥

(१९) तेरी शीतल-शीतल मूरत लख

तेरी शीतल-शीतल मूरत लख,
कहीं भी नजर ना जमें, प्रभू शीतल।
सूरत को निहारें पल-पल तब,
छबि दूजी नजर ना जमें! प्रभू शीतल॥ टेक॥

भव दु:ख दाह सही है घोर, कर्म बली पर चला न जोर।
तुम मुख चन्द्र निहार मिली अब, परम शान्ति सुख शीतल ढोर
निज पर का ज्ञान जगे घट में भव बंधन भीड़ थमें प्रभू शीतल ॥१ ॥

सकल ज्ञेय के ज्ञायक हो, एक तुम्ही जग नायक हो।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु तुम, निज स्वरूप शिवदायक हो।
'सौभाग्य' सफल हो नर जीवन, गति पंचम धाम धमे प्रभु शीतल ॥२ ॥

१०

मोक्षकल्याणक खण्ड

(१) देखो जी आदीश्वर स्वामी...

(योग निरोध के समय)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है;
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है॥ टेक॥

जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है;
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा-दृष्टि सुहाया है॥ 1॥

कंचन वरन चले मन रंच न, सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है;
जास-पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नसाया है॥ 2॥

शुद्ध उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है;
श्यामलि अलकावलि सिर सोहें, मानो धुआँ उड़ाया है॥ 3॥

जीवन-मरन अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है;
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, दौल तास जस गाया है॥ 4॥

(२) अशरीरी सिद्ध भगवान...

अशरीरी सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्ही मेरे;
अविरुद्ध शुद्ध चिद्घन, उत्कर्ष तुम्ही मेरे ॥ टेक ॥

सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान अगुरुलघु अवगाहन;
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन।
हे गुण अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे ॥ 1 ॥

रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल;
कुल गोत्र रहित निश्कुल, मायादि रहित निश्चल।
रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे ॥ 2 ॥

रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो;
स्वाश्रित शाश्वत–सुख भोग, शुद्धातम–विलासी हो।
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे ॥ 3 ॥

भाविजन तुम–सम–निज–रूप, ध्याकर तुम–सम होते;
चैतन्य पिण्ड शिव–भूप, होकर सब दुःख खोते।
चैतन्यराज सुखखान, दुःख दूर करो मेरे ॥ 4 ॥

११

प्रासङ्गिक खण्ड

(१) धन्य धन्य आज घड़ी ......

धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है।
जिन-चरणों की भक्ति करके आनन्द अपार है॥ टेक॥

खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं।
दर्शन के हेतु देखो, जनता अकुलाई हैं॥
चारों और देख लो भीड़ बेशुमार है॥ 1॥

भक्ति से नृत्यगान कोई हैं कर रहे।
आतम सुबोध कर पापों से डर रहे॥
पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है॥ 2॥

जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है।
छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है।
देख लो सौभाग्य खुला आज मुक्ति द्वार है॥ 3॥

महावीर के सन्देशों को जीवन में अपनाऐंगे।
भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर महावीर बन जाऐंगे॥
सत्य अहिंसा अनेकान्त ही जिनवाणी का सार है॥ 4॥

(२) अपना ही रङ्ग मोहे....

अपना ही रङ्ग मोहे रङ्ग दो प्रभुजी,
आतम का रङ्ग मोह रङ्ग दो प्रभुजी।
रङ्ग दो रङ्ग दो रङ्ग दो प्रभुजी॥ टेक॥

ज्ञान में मोह की धूल लगी है,
धूल लगी है प्रभु धूल लगी है॥
इसके मुझको छुड़ा दो प्रभुजी॥ 1॥

सच्ची श्रद्धा रङ्ग अनुपम,
रङ्ग अनुपम प्रभु रङ्ग अनुपम।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी॥ 2॥

रत्नत्रय रङ्ग तुमरा सरीखा,
तुमरा सरीखा, तुमरा सरीखा।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी॥ 3॥

सेवक शरण गही जिनवर की,
सेवक शरण गही आतम की।
जनम-मरण दु:ख मिटा दो प्रभुजी॥ 4॥

(३) रङ्ग मां.........

रङ्ग मां.........रङ्ग मां.........रङ्ग मां रे,
प्रभु थारा ही रङ्ग मा रङ्गि गयो रे ॥ टेक ॥

आया मङ्गल दिन मङ्गल अवसर,
भक्ति मां थारी हूँ नाच रह्यो रे ॥ 1 ॥

गाओ रे गाना आज ध्रुवधाम का,
आतमदेव बुला रह्यो रे ॥ 2 ॥

आतमदेव की अन्तर में देख्या,
सुख–सरोवर उछल रह्योरे ॥ 3 ॥

भाव भरी ने हम भावना ये भायें,
आप समान बनाय लीज्यो रे ॥ 4 ॥

समयसार में कुन्द–कुन्द देव,
भगवान कहकर जगाय रह्यो रे
प्रभु पामर बनी ने क्यों सोय रह्यो रे ॥ 5 ॥

आज हमारो उपयोग पलट्यो
चैतन्य–चैतन्य भास रह्यो रे ॥ 6 ॥

(४) गा रे भैया, गा रे भैया......

गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा।
प्रभु गुण गा तू समय न गंवा ॥ टेक॥

किसको समझे अपना प्यारे,
स्वारथ के हैं रिश्ते सारे।
फिर क्यों प्रीति लगाये, ओ भैयाजी ॥ 1 ॥ गा रे भैया गा........।

दुनियाँ के सब लोग निराले,
बाहर उजले अन्दर काले।
फिर क्यों मोह बढ़ाये, ओ बाबूजी ॥ 2 ॥ गा रे भैया गा........।

मिट्टी की यह नश्वर काया,
जिसमें आतमराम समाया।
उसका ध्यान लगा ले, ओ दादाजी ॥ 3 ॥ गा रे भैया गा........।

स्वारथ की दुनियाँ को तजकर,
निश-दिन प्रभु का नाम जपा कर।
सम्यगदर्शन पाले, ओ काकाजी ॥ 4 ॥ गा रे भैया गा........।

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
निर्मल भेदज्ञान प्रगटा कर।
मुक्ति-वधू को पा ले, ओ लालाजी ॥ 5 ॥ गा रे भैया गा........।

(५) जय जिन-शासन.......

जय जिन-शासन सुखकार रे रङ्ग केशरियो,
जय भवदधि तारणहार रे रङ्ग केशरियो।
रङ्ग केशरियो, रङ्ग केशरियो, रङ्ग केशरियो रङ्ग केशरियो ॥ टेक ॥

जय वीतराग-विज्ञान रे रङ्ग केशरियो।
जय शुद्धातम गुणखान रे रङ्ग केशरियो ॥ 1 ॥
जय सम्यग्दर्शन-ज्ञान रे रङ्ग केशरियो।
सम्यक्-चारित्र महान रे रङ्ग केशरियो ॥ 2 ॥

जय कुन्द-कुन्द मुनिराज रे रङ्ग केशरियो,
जय समयसार सरताज रे रङ्ग केशरियो ॥ 3 ॥

जय अमृतचन्द महान रे रङ्ग केशरियो,
जय आत्मख्याति गुणखान रे रङ्ग केशरियो ॥ 4 ॥

जय नवतत्त्वों का सार रे रङ्ग केशरियो
शुद्धातम ज्योति महान रे रङ्ग केशरियो ॥ 5 ॥

(६) आयो आयो रे हमारो ......

आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग कि हम आए पूजन को।
पूजन को प्रभु दर्शन को, पावन प्रभु-पद पर्शन को ॥ टेक ॥
जिनवर की अन्तर्मुख मुद्रा आतम दर्श कराती।
मोह महामल प्रक्षालन कर शुद्ध स्वरूप दिखाती ॥ 1 ॥
भव्य अकृत्रिम चैत्यालय की जग में शोभा भारी।
मङ्गल ध्वज ले सुरपति आए शोभा जिसकी न्यारी ॥ 2 ॥
अनेकान्तमय वस्तु समझ जिन शासन ध्वज लहरावें।
स्याद्वाद शैली से प्रभुवर मुक्ति मार्ग समझावें ॥ 3 ॥

(७) आओ रे आओ रे .....

आओ रे आओ रे ज्ञानानन्द की डगरिया।
तुम आओ रे आओ, गुण गाओ रे गाओ।
चेतन रसिया आनन्द रसिया ॥ टेक ॥
बड़ा अचम्भा होता है, क्यों अपने से अनजान रे।
पर्यायों के पार देख ले, आप स्वयं भगवान रे ॥ 1 ॥
दर्शन-ज्ञान स्वभाव में, नहीं ज्ञेय का लेश रे।
निज में निज को जान कर तजो ज्ञेय का वेश रे ॥ 2 ॥
मैं ज्ञायक मैं ज्ञान हूँ, मैं ध्याता मैं ध्येय रे।
ध्यान-ध्येय में लीन हो, निज ही निज का ज्ञेय हैं ॥ 3 ॥

(८) लहर-लहर लहराये..........

लहर-लहर लहराये, केशरिया झण्डा जिनमत का।
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी।
यह सबका मन हरषाये, केशरिया झण्डा जिनमत का
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी॥ टेक॥

फर फर फर फर करता झण्डा, गगन-शिखा पर डोले-2
स्वस्तिक का यह चिन्ह अनूठा, भेद हृदय के खोले-2
यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा॥ 1॥

इसकी शीतल छाया में हम पढ़ें रतन जिनवाणी-2
सत्य अहिंसा प्रेम मार्ग पर, बने देश लासानी-2
५ यह सत्पथ पर पहुँचायें, केशरिया झण्डा॥ 2॥

(९) चाल म्हारा भयाला तू.....

चाल म्हारा भयाला तू, जयपुर शहर में आज रे।
वीर प्रभु का दर्शन करके, सफल करो अवतार रे॥
चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ टेक॥

शुद्धातम की बात बतावे, हरेक जीव को शुद्ध बतावे।
पाओ आतम ज्ञान रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में॥ 1॥

आतम चर्चा जहाँ है चलती, भेद-ज्ञान की कला है मिलती।
एक यही सुखकार रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में॥ 2॥

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हर्षा-हर्षा।
वन्दों वीर महान रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ 3 ॥

चारों ओर है आनन्द छाया, मन में भक्ति-भाव जगाया।
हर्षित सब नर-नार रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ 4 ॥

अवसर बड़ा सुहाना आया, देख-देख कर मन हर्षाया।
करलो आतम-ज्ञान रे, चाल-म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ 5 ॥

मंगल उत्सव आज यहाँ पर, मंगल पंचकल्याणक यहाँ पर।
आओ सब नर-नार रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ 6 ॥

पञ्च कल्याणक हुआ सुखकारी, हर्षित हैं सारे नर-नारी।
खुशियाँ अपरम्पार रे, चाल म्हारा भायला अलीगढ़ शहर में ॥ 7 ॥

(१०) शिखर पे कलश ....

शिखर पे कलश चढ़ाओ म्हारा साथी।
मोक्ष-महल में आओ म्हारा साथी ॥ टेक ॥

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
आतम में अपनापन लाकर।
समकित नींव भराओ म्हारा साथी ॥ 1 ॥

नय-प्रमाण दीवार बनाओ,
अनेकान्त का रङ्ग चढ़ाओ।
चारित्र छत डलवाओ मेरे साथी ॥ 2 ॥

रत्नत्रय का शिखर बनाओ,
केवलज्ञान का कलश चढ़ाओ।
मोक्षमहल में आओ म्हारा साथी ॥ 3 ॥

(११) करलो इन्द्रध्वज ....

करलो इन्द्रध्वज का पाठ आई मङ्गल घड़ी।
आई मङ्गल घड़ी आई सुखद घड़ी, करलो इन्द्रध्वज ॥ टेक ॥
मध्यलोक के चारशतक अट्ठावन जिनगृह पूजो।
सभी अकृत्रिम शाश्वत जिन-चैत्यालय नित पूजो ॥ 1 ॥
५ विविध चिन्ह की ध्वजा चढ़ाओ गाओ मङ्गलचार।
इस विधान का उत्तम फल है पुण्य अटूट अपार ॥ 2 ॥
इन्द्रों सम अन्तरमन सज्जित करके लो वसु द्रव्य।
निज भावों की ध्वजा चढ़ाओ हो जावोगे धन्य ॥ 3 ॥

(१२) इन्द्रध्वज मण्डल .....

इन्द्रध्वज मण्डल भला गया।
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ॥ टेक ॥

मध्यलोक के भव्य जिनालय, शाश्वत जिनप्रतिमा सुखकारी।
शुद्धातम के दर्श कराती, अन्तर्मुख छवि लगती प्यारी ॥
जिनपूजन का अवसर आ गया, देखो देखो जी...... ॥ 1 ॥

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरितमय, जग को मुक्ति मार्ग बताती।
ज्ञान भिन्न है, राग भिन्न है, भविजन को सन्देश सुनाती॥
भेद-विज्ञान हमें भा गया, देखो देखो देखो जी...... ॥ 2 ॥

वस्तु कथन्चित नित्य-अनित्य अनेकान्त की महिमा न्यारी।
स्याद्वाद शैली पर मोहित होते हैं, मुनि सुर नर-नारी॥
यह जिनशासन हमें भा गया, देखो देखो देखो जी...... ॥ 3 ॥

(१३) गगन मण्डल में ....

गगन मण्डल में उड़ जाऊँ
तीन लोक के तीर्थक्षेत्र सब वंदन कर आऊँ॥

प्रथम श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर मैं जाऊँ।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर चरण पूज ध्याऊँ॥ 1 ॥

अजित आदि श्री पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा गाऊँ।
शाश्वत तीर्थराज के दर्शन करके हषाऊँ॥ 2 ॥

फिर मंदारगिरि पावापुर वासुपूज्य ध्याऊँ।
हुए पञ्च कल्याणक प्रभु के पूजन कर आऊँ॥ 3 ॥

उर्जयंत गिरनार शिखर पर्वत पर फिर जाऊँ।
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र को वन्दूँ सुख पाऊँ॥ 4 ॥

फिर पावापुर महावीर निर्वाण पुरी जाऊँ।
जल मन्दिर में चरण पूजकर नाचूँ हर्षाऊँ॥ 5 ॥

फिर कैलाश शिखर अष्टापद आदिनाथ ध्याऊँ।
ऋषभदेव निर्वाण धरा पर शुद्ध भाव लाऊँ॥ 6॥
पञ्च महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊँ।
सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी मैं हो आऊँ॥ 7॥
तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज घर आऊँ।
शुद्धात्म से कर प्रतीति मैं समकित उपजाऊँ॥ 8॥
फिर रत्नत्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊँ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिव पद प्रगटाऊँ॥ 9॥

५ (१४) भावना रथ पर ....

भावना रथ पर चढ़ जाऊँ।
मध्यलोक तेरह द्वीपों के दर्शन कर आऊँ॥
भावना रथ पर चढ़ जाऊँ॥ टेक॥

स्वर्ण थाल में वसु विधि प्रासुक द्रव्य सजा लाऊँ।
चार शतक अठ्टावन जिनगृह, पूजन कर आऊँ॥ 1॥
पञ्ममेरु गजदन्त वृक्ष वक्षारों पर जाऊँ।
गिरि विजयार्थ कुलाचल वन्दूँ, नाचूँ हर्षाऊँ॥ 2॥
इष्वाकारों मानुषोत्तर के जिन गृह ध्याऊँ।
नन्दीश्वर कुन्डल व रुचक गिरि, पूजन कर आऊँ॥ 3॥
जिन पूजन का सर्वोत्तम फल, भेद ज्ञान लाऊँ।
शुद्धातम का अनुभव करके, सिद्ध स्वपद पाऊँ॥ 4॥

(१५) ये शाश्वत सुख का प्याला...

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला;
ध्रुव अखण्ड है, आनन्द-कन्द है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिण्ड है।
ध्रुव की फेरो माला। कोई.... ॥ 1 ॥

मङ्गलमय है मङ्गलकारी, सत् चित् आनन्द का है धारी;
ध्रुव का हो उजियारा। कोई.... ॥ 2 ॥

ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावें, जन्म-मरण का दुःख मिटावे;
ध्रुव का धाम निराला। कोई.... ॥ 3 ॥

ध्रुव की धुनी मुनि रमावें, ध्रुव के आनन्द में रम जावें;
ध्रुव का स्वाद निराला। कोई.... ॥ 4 ॥ ५

ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह पावें;
ध्रुव का हो मतवाला। कोई.... ॥ 5 ॥

(१६) देवों और मानवों में...

देवों और मानवों में चर्चा ये चल पड़ी,
कौन पालकी का हकदार रे... कौन पालकी का हकदार है ॥ टेक ॥

दिव्य शक्ति के धारी हम हैं, पालकी लेकर आये हम हैं;
सदा निरोगी यौवनमय तन, गगन विहारी यह वैक्रियतन।
पहले हाथ लगायेंगे, पालकी के हम हकदार रे ॥ 1 ॥

यह तन तो जड़ पुद्गल का है, इसमें भी क्षण-भङ्गुरता है;
दिव्य-शक्तियाँ भी पुद्गल की इनमें शक्ति नहीं आतम की;
करो न अब तकरार रे... पालकी के हम हकदार रे॥ 2॥

वस्त्राभूषण हम ले आये, पन्द्रहमास रतन बरसाये;
पञ्च कल्याणक महामहोत्सव, भूतल पर आ हमीं मनाये;
न्याय से करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 3॥

जड़ रत्नों की क्या है महिमा, यह तो तीर्थङ्कर की गरिमा;
पुण्य उदय से ही तुम आओ, क्यों न अन्य का उत्सव मनायो;
मन में करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 4॥

समवशरण भी हम ही बनायें, दिव्यध्वनि का योग बनायें;
मोक्ष कल्याणक में भी आयें, पहले पालकी क्यों न उठायें;
क्यों नहीं करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 5॥

भव्यजीव के पुण्य उदय से, तीर्थङ्कर का वचन योग है;
क्या तीर्थङ्कर सम हो सकते, क्या संयम धारण कर सकते।
अतः नहीं हकदार रे... पालकी के हम हकदार रे॥ 6॥

धन्य-धन्य यह मानव जीवन संयम धारण कर सकते नर;
हे मानव सुर वैभव ले लो क्षणभर को मानव तन दे दो।
तुम सच्चे हकदार हो... पालकी के तुम हकदार हो॥ 7॥

(१७) मुनिवर आज मेरी...

मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं;
चलते-फिरते.... चलते-फिरते सिद्ध प्रभु आये हैं ॥ टेक ॥

हाथ कमण्डल बगल में पीछी है, मुनिवर पे सारी दुनिया रीझी है;
नगन दिगम्बर हो... नगर दिगम्बर मुनिवर आये हैं ॥ 1 ॥

अत्र अत्र तिष्ठो हे मुनिवर! भूमि शुद्धि हमने कराई है;
आहार कराके... आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं ॥ 2 ॥

प्रासुक जल से चरण पखारे हैं, गन्धोदक पा भाग्य संवारे हैं;
शुद्ध भोजन के... शुद्ध भोजन के ग्रास बनाये हैं ॥ 3 ॥

नगन दिगम्बर मुद्राधारी है, वीतरागी मुद्रा अति प्यारी है;
धन्य हुए ये... धन्य हुए ये नयन हमारे हैं ॥ 4 ॥

नगन दिगम्बर साधु बड़े प्यारे हैं, जैन धरम के ये ही सहारे हैं;
ज्ञान के सागर... ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं ॥ 5 ॥

(१८) धन्य-धन्य हे गौतम गुरु...

धन्य-धन्य हे गौतम गुरु पुरुषार्थ तुम्हारा;
निश्चय भक्ति करी प्रभु की भव का लिया किनारा ॥ टेक ॥

शिष्य पाँच सौ पाँच पाये इस गौरव में भरमाये;
जिनशासन के तीव्र विरोधी मोह महातम छाये।
कहाँ छिपी थी महायोग्यता जिससे किया उजारा ॥ 1 ॥

काललब्धि जब आई इन्द्र निमित्त बन आया;
जिनशासन के सारभूत इक मङ्गल छन्द सुनाया।
मङ्गलमय भवितव्य दिशा में तुमने चरण बढ़ाया॥ 2॥

वीरप्रभु के समवसरण का मानस्तम्भ निहारा;
मिथ्या मद गल गया तुम्हारा वेश दिगम्बर धारा।
योग्य शिष्य थे वीर प्रभु के झेली जिन-श्रुतधारा॥ 3॥

अनेकान्त वस्तु बताई स्याद्वाद के द्वारा;
वीरप्रभुजी मुक्ति पधारे तुमने केवल धारा।
धन्य-धन्य निर्वाण महोत्सव जग में हुआ उजारा॥ 4॥

(१९) सावन की पहली ....

दिव्यध्वनि वीरा खिराई आज शुभ दिन
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम;
आत्म स्वभावं परभाव भिन्नम्,
आपूर्णमाद्यंत - विमुक्तमेकम्।

मेरे प्रभु विपुलाचल पर आये, वैशाखी दसमी को घातिया खिपाये;
क्षण में लोकालोक लखाये, किन्तु न प्रभु उपदेश सुनाये।
वाणी की काललब्धि आई नहीं उस दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 1॥

इन्द्र अवधिज्ञान उपयोग लगाये, समवसरण में गणधर न पाये;
इन्द्रभूति गौतम में योग्यता लखाये, वीर प्रभु के दर्शन को आये।

कालल‍ब्धि लेकर के आई आज गौतम;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 2॥

मेरे प्रभु ऊँकार ध्वनि को खिराये, गौतम द्वादश अङ्ग रचाये;
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सत् समझाये, तन चेतन भिन्न-भिन्न बताये।
भेद-विज्ञान सुहायो आज शुभ दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 3॥

य एव मुक्ता नयपक्षपातं स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यम्;
विकल्प जाल च्युत शान्तचित्तास्त एवं साक्षातमृतं पिबंति।
स्वानुभूति की कला सिखाई आज शुभदिन;
धन्य-धन्य सावन की पहल एकम॥ 4॥

(२०) जीयरा... जीयरा...

जीयरा... जीयरा...
जीयरा... जीयरा... जीयरा...
जीवराज उड़ के जाओ सम्मेदशिखर में;
भाव सहित वन्दन करो, पार्श्व चरण में॥ टेक॥

आज सिद्धों से अपनी बात हो के रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलाकात हो के रहेगी;
रङ्ग रहित राग रहित भेद रहित जो,
मोह रहित लोभ रहित शुद्ध बुद्ध जो। जीयरा... ॥ 1॥

ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है,
सारी उपमाएँ जिनसे आज शरमाई हैं;
अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनन्तवीर्य मय,
अनन्तसूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी है। जीयरा. ॥ 2॥

अहो! शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है,
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है;
शुरु करें आज यहाँ आत्म साधना,
चतुर्गति में हो कभी जन्म-मरण ना। जीयरा. ॥ 3 ॥

(२१) अभिनन्दन.........

श्री जिनेन्द्र के परमभक्ति देवेन्द्र तुम्हारा है अभिनन्दन;
मात्र एक भव धारण करके, काटोगे भव-भव के बन्धन॥
पूर्व जन्म में प्रचुर साधना, जब तुम रमते थे चेतन में;
पूर्व जन्म में परम दिगम्बर, मुनि बन विचरण करते वन में।
५ विषय भोग विषसम लगते थे, चेतन का आनन्द निराला;
अन्तर्मुख परिणति में भर-भर, पीते शाश्वतसुख का प्याला।
तुम्हें न आकर्षित करना था, कनक-कामिनी का चिर यौवन;
श्री जिनेन्द्र के परमभक्त देवेन्द्र तुम्हारा है अभिनन्दन॥ 1॥
किन्तु रही साधना अधूरी, मोह शत्रु का हो न सका क्षय;
यद्यपि निर्झर झरते सुख के, किन्तु न हो पाया वह अक्षय।
भोग विमुखता के विकल्प से बाँधी ऐसी पुण्य प्रकृतियाँ;
वे भी भोग उदय में आये, इन्द्रिय सुख की बहती नदियाँ।
फिर भी नहीं रुचि है उनमें, दृष्टि में बस बसता चेतन;
श्री जिनेन्द्र के परमभक्त देवेन्द्र तुम्हारा है अभिनन्दन॥ 2॥
यद्यपि अव्रत गुणस्थान में, किन्तु न रमता भोगों में मन;
पञ्च-परमगुरु पद पंकज की, भक्तिसुरभि से सुरभित चेतन।

तीर्थङ्कर के अन्तिम भव में, पञ्चकल्याणक उत्सव करते;
प्रभु के मङ्गल जन्मोत्सव पर, अद्भुत ताण्डव नृत्य रचाते।
किन्तु ताल की एक थाप पर, करते सब जिनमन्दिर वन्दन;
श्री जिनेन्द्र के परमभक्त देवेन्द्र तुम्हारा है अभिनन्दन॥ 3॥
द्वादशाङ्ग के पाठी हो तुम, ऐसा अद्भुत है श्रुतज्ञान;
सदा निरखता है अपने में, नित्य अतीन्द्रिय केवलज्ञान।
मात्र एक भव धारण करके, आप लहेंगे मुक्ति महान;
तुमसे पहले सिद्ध बनेगी, शची तुम्हारी है गुणखान।
महामहोत्सव की शुभ बेला में, यह मङ्गलमय अभिनन्दन;
मात्र एक भव धारण करके काटोगे भव-भव के बन्धन॥ 4॥

(२२) शासन ध्वज लहराओ

शासन ध्वज लहाओ मेरा साथी;
पञ्च कल्याण रचाओ म्हारा साथी।
आओ रे आओ आओ म्हारा साथी;
जीवन सफल बनाओ म्हारा साथी॥ टेक॥

स्वर्गपुरी से सुरपति आये, अनेकान्तमय ध्वज ले आये;
स्याद्वयाद का रङ्ग भरकर, सबका संशय तिमिर मिटाये।
परिणति में लहराओ म्हारा साथी॥ 1॥

मङ्गल स्वस्तिक चिह्न बनाओ, चार गति का दुःख नशाओ;
शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर, भेदज्ञान की ज्योति जलाओ।
मोक्ष महल में आओ म्हारा साथी॥ 2॥

गुण अनन्तमय निर्मल आतम, अनेकान्त कहते परमातम;

धर्म-युगल जो रहे विरोधी रहते निज आतम।
निज स्वरूप रस पाओ म्हारा साथी ॥ 3 ॥

मंगल स्वर्ण-कलश ले आओ, इस पर स्वस्तिक
चिह्न बनाओ;
माता के कर कमलों द्वारा, मंगल वेदी पर पधराओ।
नाँदी विधान रचाओ म्हारा साथी ॥ 4 ॥

(२३) विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा .....

तर्ज (गोरी तेरा गाँव बड़ा प्यारा)

विश्व तीर्थ बड़ा प्यारा अजब है नजारा **आओ यहाँ रे-2**
५ यहाँ पर मंदिर बना न्यारा, देश का पियारा सुनो जरा रे
दूर दूर से आये मनीषी जिनवचनामृत कहने
जड़ चेतन का चिह्न बताकर मोह अंधेरा हरने।
सही शिव मार्ग बताने को, जैन ग्रंथ देखो, गुरू कहोरे-2
जिनवाणी के लाल बनो तुम, बन जाओ प्रभु जैसे
सम्यक श्रद्धा गर हो जाये भटकोगे तुम कैसे
कुन्द-कुन्द कहान के ये सपने, कैसे होंगे अपने, सोचो जरा रे-2
एक शुद्ध में सदा अरूपी, भगवन का कहना है
मान लें भैय्या बात प्रभु की, भव सागर तिरना है
ले लो अब आत्म का सहारा, तीर्थ बड़ा प्यारा, आओ यहाँ रे
विश्वतीर्थ.............. यहाँ पर...............

(२४) मेरा ज्ञान उपवन ....

मेरा ज्ञान उपवन सहज खिल गया है
मुझे अब तो समकित सदन मिल गया है
सदा मोह मिथ्यात्व ने दुख दिया था
स्वयं के स्वबल से स्वधन मिल गया है-मेरा ज्ञान...

मेरे स्वास उच्छवास पर में रमे थे
निजातम से सुरमित सुमन मिल गया है-मेरा ज्ञान...

नया तीत होने का उद्यम करूंगा
अनेकान्त नय का भवन मिल गया है-मेरा ज्ञान...

समर्पित गुरूदेव के प्रति निरन्तर
उन्हीं की कृपा से ये धन मिल गया है

(२५) आज मैं परम पदारथ पायौ............

आज मैं परम पदारथ पायौ, प्रभुचरनन चित लायौ ।।टेक ।।
अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं, सहज कल्पतरु छायौ ।।१ ।।
ज्ञानशक्ति तप ऐसी जाकी, चेतनपद दरसायो ।।२ ।।
अष्टकर्म रिपु जोधा जीते, शिव अंकूर जमायौ ।।३ ।।
दौलतराम निरख निज प्रभो को उरु आनन्द न समायो ।।४ ।।

(२६) अहो भगवंत का दर्श......

अहो भगवंत का दर्श परम आनंद दाता है
द्रव्य दृष्टि से जा देखे प्रभु निज में ही पाता है
देखकर स्वयं की प्रभुता, अक्षय चैतन्यमय वैभव
सहज ही तृप्ति होता है मोह मिथ्या पलाता है
अहो...

परम ध्रुवरूप के सन्मुख परिणति स्वांग सम दीखे
सर्व परभावों से न्यारा, एक ज्ञायक दिखाता है।
अहो.........

५ सहज आत्मानुभव होवे मुक्ति मारग प्रकट होता
विशुद्धि त्यौं-त्यौं बढ़ती है, ज्यौं-ज्यौं ज्ञायक में रमता है
अहो..........

दशा निर्ग्रंथ होती है चौकड़ी तीन जहाँ नाशे
स्वाभाविक ज्ञान आनन्दमय साधु जीवन सुहाता है
अहो..........

महा आनन्दमय चैतन्य में रमते-चढ़े श्रेणी
वैभाविक कर्म सब विनशे स्वयं ही प्रभु कहाता है
अहो..........

(२७) रंग बरसेगा ......

रंग बरसेगा आ हां रंग बरसेगा आत्म रंग बरसेगा।
भगवान आत्मा ध्यान लगाये लगन लगी शिव नारी॥ रंग
मात तुम्हारी जिनवाणी कहिये जग में तारन हारी॥रंग
वहन तुम्हारी ज्ञान चेतना ज्योति जगावन हारी॥रंग
आत्म का अनुभव जब कीना बन गये सम्यक धारी॥रंग
सम्यक दर्शन ज्ञान चरन तप ये जिए के हितकारी॥रंग
भेद ज्ञान आतम ने कीना जग से हो गई न्यारी॥रंग
आत्म के दिन मन्दिर में करे कीर्तन भारी॥रंग
महिला मण्डल हर्ष–2 कर गावे आनन्द मंगलकारी॥रंग ५
उमंग–2 आत्म, गुन गावे जिन चरणन बलिहारी॥रंग
मोद मनावे ज्ञान बढ़ावे नाचे दे दे ताली॥रंग

(२८) श्री जिनवर पद ....

श्री जिनवर पद ध्यावे जे नर, श्री जिनवर पद ध्यावे है॥ टेक॥

तिनकी कर्म कालिमा विनशे, परम ब्रह्म हो जावे है।
उपल अग्नि संयोग पाय जिमि, कंचन विमल कहावे है॥ 1॥

चन्द्रोज्जवल जस तिनको जग में, पण्डित जन नित गावें हैं।
जैसे कमल सुगन्ध दशों दिश, पवन सहज फैलावें हैं॥ 2॥

तिनहि मिलन को मुक्ति सुन्दरी, चित अभिलाषा लावे है।
कृषि में तृण जिमि सहज उपजियो, स्वर्गादिक सुख पावे हैं॥ 3॥
जनम मरा मृत दावानल ये, भाव सलिल तें बुझावें है।
''भागचन्द'' कहा तांई वरने, तिनहि इन्द्र शिर नावे है॥ 4॥

(२९) ऊँचे-ऊँचे शिखरों ......

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला रे, यह तीरथ हमारा।
तीरथ हमारा हमें लागे प्यारा॥ टेक॥
श्री जिनवर से भेंट करावें, जग को मुक्ति मार्ग दिखावें।
५ मोह का नाश करावे रे, यह तीरथ हमारा॥ 1॥
शुद्धातम से प्रीति लगावे, जड़-चेतन को भिन्न बतावे।।
भेद-विज्ञान करावे रे यह तीरथ हमारा॥ 2॥

तन-चेतन विवहार एकसे,
निहचै भिन्न-भिन्न हैं दोई।
तनकी थुति विवहार जीवथुति,
नियतदृष्टि मिथ्या थुति सोइ॥
जिन सो जीव-जीव जो जिनवर,
तन जिन एक न मानै कोइ।
ता कारन तन की संस्तुति सौं,
जिनवर की संस्तुति नहि होइ॥
-समयसार, नाटक, पृष्ठ 48

(३०) हम आनन्दित .....

हम आनन्दित हैं–4
अपनी मंजिल मोक्ष है आहाहा ऽऽ मोक्ष है ओ हो हो मोक्ष है।
चेतन की ही कहानी है, ज्ञायक की आभा है।
जन्मों से हमने इसको अब तक नहीं निहारा है
निज के दर्शन के खातिर, हम शमशीर उठा लेंगे।2
चिर ज्योतिर्मय सारे हैं हम लेकिन झिलमिल एक है
आ हा हा ऽऽ एक हैं ओ हो हो ऽऽ एक हैं।
रत्नत्रय के साधन हैं यहाँ और अवसर भी है यहाँ।
जिनवर प्रभु की भक्ति है यहाँ, अरहन्त की मिली सभा
ज्ञान ही अपना धाम हैं, ज्ञान ही दर्शन वाला है
गुण मय सारे हीरे है हम, लेकिन जगमग एक है
आ हा हा एक है ओ हो तो ऽऽ एक है।
हम आनन्दित हैं..................

(३१) हम करें ध्वज...........

तर्ज (निर्बल से लड़ाई बलवान की)

हम करें ध्वज वन्दना महान की
जिसमें लिखी सारी गाथाऐं कल्याण की हम करें............
छाई घोर अंधियारी, मिथ्या मल्ल है विकारी 2
पुण्य धर्म के नाम पे चल पड़ा, ऽ ऽ ऽ

ऐसे भ्रम को मिटाने, सम्यक ज्योति को जगाने 2
समय सार महाग्रंथ का उदय हुआ, ऽ ऽ ऽ
चला शान्ती का पवन मिटी मोह की तपन
मुनि कुन्द के वचन ये प्रमाण की
जिसमें लिखी............हम करे ध्वज................

मंगल उत्सव आया भारी हमने की हर्षित तैयारी
ध्वजा रोहण सानन्द सम्पन्न हुआ, ऽ ऽ ऽ
कर लो जिनवर की पूजन, सुन लो विद्वत् वचन 2
सारे परभावों से जीव को जुदा किया ऽ ऽ ऽ
झण्डा केशरिया महान, जिनवाणी को करो प्रणाम 2
५ परमारथ की पूरी खान प्रदान की ऽ ऽ ऽ
जिसमें लिखी सारी गाथाएं कल्याण की
हम करें............... जिसमें................

(३२) मानुष जनम ....

मानुष जनम सफल भयो आज श्रवन सफल जिनवचन
समाज ॥ मानुष ॥

भाल सफल जु दयाल तिलकतैं, नैन सफल देखे जिनराज।
जीभ सफल जिनवानि गानतैं, हाथ सफल करि पूजन
आज ॥मानुष ॥१ ॥

पाँय सफल जिन भौन गौनतैं, काय सफल नाचैं बल गाज।
वित्त सफल जो प्रभु कों लागै, चित्त सफल प्रभु ध्यान
इलाज ॥मानुष ॥२ ॥

चिन्तामणि चिंतित-वर-दाईं, कलपवृक्ष कलपनतैं काज।
देत अचिंत अकल्प महासुख, 'द्यानत' शक्ति
गरीबनिबाज ॥मानुष ॥३ ॥

(३३) लहरायेगा-लहरायेगा........

लहरायेगा-लहरायेगा झंडा श्री महावीर का।
फहरायेगा-फहरायेगा झंडा श्री महावीर का॥
अखिल विश्व का जो है प्यारा,
जैन जाति का चमकित तारा।
हम युवकों का पूर्ण सहारा, झंडा श्री महावीर का ॥१ ॥

सत्य अहिंसा का है नायक,
शांति सुधारस का है दायक।
दीनजनों का सदा सहायक, झंडा श्री महावीर का ॥२ ॥

साम्यभाव दर्शाने वाला,
प्रेमक्षीर बरसाने वाला।
जीव मात्र हर्षाने वाला, झंडा श्री महावीर का ॥३ ॥

भारत का 'सौभाग्य' बढ़ाता,
स्वावलंब का पाठ पढ़ाता।
वन्दे वीरम् नाद गुंजाता, झंडा श्री महावीर का ॥४ ॥

(३४) कितना सुन्दर.......

कितना सुन्दर, कितना सुखमय, अहो सहज जिनपंथ है।
धन्य धन्य स्वाधीन निराकुल, मार्ग परम निर्ग्रन्थ है।।टेक।।

श्री सर्वज्ञ प्रणेता जिसके, धर्म पिता अति उपकारी।
तत्वों का शुभ मर्म बताती, माँ जिनवाणी हितकारी।
अंगुली पकड़ सिखाते चलना, ज्ञानी गुरु निर्ग्रन्थ हैं।।धन्य।।१।।

देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा ही, समकित का सोपान है।
महाभाग्य से अवसर आया, करो सही पहिचान है।।
पर की प्रीति महा दुखःदायी, कहा श्री भगवंत है।।धन्य।।२।।

निर्णय में उपयोग लगाना ही, पहला पुरुषार्थ है।
तत्व विचार सहित प्राणी ही, समझ सके परमार्थ है।।

१२

वैराग्य/उपदेश भक्ति खण्ड

(१) वीर प्रभु का है कहना...

वीर प्रभु का है कहना, राग में जीव तू मत फँसना॥ टेक॥

अनादि काल से रुलता है, दृष्टि पर में करता है;
अब ना गलती करना, राग में जीव तू मत फँसना॥ 1॥

तन–मन्दिर में देव हैं तू, ज्ञायक को पहिचान ले तू;
समयसार में तू रमना, राग में जीव तू मत फँसना॥ 2॥

तू तो गुणों का सागर है, पूर्णानन्द महाप्रभु है;
निज में ही दृष्टि करना, राग में जीव तू मत फँसना॥ 3॥

गुण पर्याय में भेद न कर, त्रैकालिक में दृष्टि कर;
मोक्षपुरी में है चलना, राग में जीव तू मत फँसना॥ 4॥

(२) सुन रे जिया ...

सुन रे जिया चिरकाल गया,
तूने छोड़ा न अब तक प्रमाद, जीवन थोड़ा रहा॥ टेक॥

जिनवाणी कहती है तेरी कथा, तूने भूल करी सही भारी व्यथा;
अब करले स्वयं की पहिचान, जीवन थोड़ा रहा॥ 1॥

जीव तत्त्व है तू, परम उपादेय, अजीव सभी हैं ज्ञान के ज्ञेय;
निज को निज, पर को पर जान, जीवन थोड़ा रहा॥ 2॥
आस्रव बन्ध ये भाव विकारी, चेतन ने पाया दुःख इनसे भारी;
मिथ्यात्व को ले पहिचान, जीवन थोड़ा रहा॥ 3॥
संवर-निर्जरा शुद्धभाव है, मोक्ष तत्त्व पूर्ण बन्ध अभाव है;
इनको ही हित रूप मान, जीवन थोड़ा रहा॥ 4॥

(३) जिया कब ...

जिया कब तक घूमेगा संसार में,
५ चलो चलो न चेतन-दरबार में॥ टेक॥
अनादि काल से घूम रहा है, पर में तू सुख को खोज रहा है;
जहाँ सुख का नहीं है ठिकाना। चलो चलो न...॥ 1॥
सिद्ध समान स्वभाव है चेतन, जड़ कर्मों से भिन्न है चेतन;
स्व सन्मुख पर्याय प्रगटाओ ना। चलो चलो न...॥ 2॥
अब तक जीवन ऐसा बिताया, संसार को ही तूने बढ़ाया;
आज पुण्य उदय है हमारा। चलो चलो न...॥ 3॥
मृत्यु महोत्सव की तैयारी करले, ममता को तजकर समता को धरले;
तेरे पास है सुख का खजाना। चलो चलो न...॥ 4॥
आनन्द सागर अन्तर में उछले, आनन्द-आनन्द की लहर है डोले;
उस सागर में डुबकी लगाओ ना। चलो चलो न...॥ 3॥

(४) मोहे भावे न भैया...

मोहे भाव न भैया थारो देश, रहूँगा मैं तो निज–घर में ॥ टेक ॥

मोहे न भावे यह महल अटारी, झूँठी लागे मोहे दुनिया सारी;
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूँगा मैं तो निज–घर में ॥ 1 ॥

हमें यहाँ अच्छा नहीं लगता, यहाँ हमारा कोई न दिखता;
मोहे लागे यहाँ परदेश, रहूँगा मैं तो निज–घर में ॥ 2 ॥

श्रद्धा ज्ञान चारित्र निवासा, अनन्त गुण परिवार हमारा;
मैं तो जाऊँगा सुख के धाम, रहूँगा मैं तो निज–घर में ॥ 3 ॥

कब पाऊँगा निज में थिरता, मैं तो उसके लिए तरसता;
मैं तो धारूँ दिगम्बर भेष, रहूँगा मैं तो निज–घर में ॥ 4 ॥ ५

(५) ओ जाग रे चेतन जाग...

ओ जाग रे चेतन जाग, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं;
तूने किससे करी है प्रीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं ॥ टेक ॥

पर–द्रव्यों में सुख नहीं है, तज इनकी अभिलाषा;
धन शरीर परिवार अरु बान्धव, सब दुःख की परिभाषा;
तेरी दृष्टि ही है विपरीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं ॥ 1 ॥

स्वर्ग कभी तू नर्क कभी तू, देव तिर्यंच में गया था;
मग्न रहा बाह्य क्रिया–काण्डों में, ध्रुव का न आश्रय लिया था;
कैसे मिलते तुझे तेरे मीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं ॥ 2 ॥

अपने स्वरूप को न ध्याया कभी भी, अपने स्वरूप में आ जा;
पर के गाने गाता रहा तू, निज का आनन्द कैसे पाता;
प्रभु पाने की नहीं है ये रीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं॥ 3॥

(६) सोते-सोते में निकल गयी...

सोते-सोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी;
सारी जिन्दगी तेरी प्यारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही निकल गयी॥ टेक॥

जन्म लेते ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया,
५ आँखे भी न खुलने पायी, भूख-भूख चिल्लाया;
रोते-रोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी॥ 1॥

खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया,
धर्म कर्म का मर्म न जाना, विषय भोग लपटाया;
भोगों भोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी॥ 2॥

धीरे-धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग डोले काया;
सबके सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया।
रोगों रोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी॥ 3॥

जिसको तू अपना समझा था, वह दे बैठा धोखा;
प्राण गये फिर जल जायेगा ये माटी का खोका।
खोका ढोने में निकल गयी सारी जिन्दगी॥ 4॥

(७) सजधज के जिस दिन...

सजधज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी;
ना सोना काम आयेगा, ना चाँदी आयेगी ॥ टेक ॥

छोटा–सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे;
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे;
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी ॥ 1 ॥

पर छोड़ के पंछी तू पिंजरा छोड़ के उड़ जा;
माया–महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा;
धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनायेगी ॥ 2 ॥

(८) देख तेरी पर्याय की हालत...

देख तेरी पर्याय की हालत क्या हो गयी भगवान;
तू तो गुण अनन्त की खान;
चिदानन्द चैतन्यराज क्यों अपने से अनजान;
तुझमें वैभव भरा महान ॥ टेक ॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, श्री जिनवर के दर्शन पाया;
जिनने निज को निज में ध्याया, शाश्वत सुखमय वैभव पाया;
इसलिए श्री जिन कहते हैं, कर लो भेद–विज्ञान ॥ 1 ॥

तन–चेतन को भिन्न पिछायो, रत्नत्रय की महिमा जानो;
निज को निज पर को पर जानो, राग भाव से मुक्ति न मानो;
सप्त तत्त्व की यही प्रतीति देगी मुक्ति महान ॥ 2 ॥

(९) अपूर्व अवसर...

अपूर्व अवसर ऐसा किस दिन आयेगा,
कब होऊँगा बाह्यान्तर निर्ग्रंथ जब;
सम्बन्धों का बन्धन तीक्ष्ण छेदकर,
विचरूँगा कब महत्पुरुष के पन्थ जब॥ 1॥

उदासीन वृत्ति हो सब परभाव से,
यह तन केवल संयम हेतु होय जब;
किसी हेतु से अन्य वस्तु चाहूँ नहीं,
तन में किञ्चित भी मूर्छा नहीं होय जब॥ 2॥

दर्श मोह क्षय से उपजा है बोध जो,
तन से भिन्न मात्र चेतन का ज्ञान जब;
चारित्र-मोह का क्षय जिससे हो जायेगा,
वर्ते ऐसा निज स्वरूप का ध्यान जब॥ 3॥

आत्म लीनता मन-वचन-काया योग की,
मुख्यरूप से रही देह पर्यन्त जब;
भयकारी उपसर्ग परिषह हो महा,
किन्तु न होवेगा स्थिरता का अन्त जब॥ 4॥

संयम ही के लिए योग की वृत्ति हो,
निज आश्रय से, जिन आज्ञा अनुसार जब;
वह प्रवृत्ति भी क्षण-क्षण घटती जायेगी,
होऊँ अन्त में निजस्वरूप में लीन जब॥ 5॥

पञ्च विषय में राग-द्वेष कुछ हो नहीं,
अरु प्रमाद से होय न मन को क्षोभ जब;
द्रव्य-क्षेत्र अरु काल-भाव प्रतिबन्ध बिन
वीतलोभ हो विचरूँ उदयाधीन जब॥ 6॥

क्रोध भाव के प्रति हो क्रोध स्वभावता,
मान भाव प्रति दीनभावमय मान जब;
माया के प्रति माया साक्षी भाव की,
लोभ भाव प्रति हो निर्लोभ समान जब॥ 7॥

बहु उपसर्ग कर्ता के प्रति भी क्रोध नहीं,
वन्दे चक्री तो भी मान न होय जब;
देह जाय पर माया नहीं हो राम में
लोभ नहीं हो प्रबल सिद्धि निदान जब॥ 8॥

नग्नभाव मुण्डभाव सहित अस्नानता,
अदन्तधोवन आदि परम प्रसिद्ध जब;
केश-रोम-नख आदि अङ्ग श्रृंगार नहीं,
द्रव्य-भाव संयममय निर्ग्रन्थ सिद्ध जब॥ 9॥

शत्रु-मित्र के प्रति वर्ते समदर्शिता,
मान-अमान में वर्ते वही स्वभाव जब;
जन्म-मरण में हो नहीं न्यून-अधिकता,
भव-मुक्ति में भी वर्ते समभाव जब॥ 10॥

एकाकी विचरूँगा जब शमशान में,
गिरि पर होगा बाघ सिंह संयोग जब;

अडोल आसन और न मन में क्षोभ हो,
जानूँ पाया परम मित्र संयोग जब॥ 11॥

घोर तपश्चर्या में, तन संताप नहीं,
सरस अशन में भी हो नहीं प्रसन्न मन;
रजकण या ऋद्धि वैमानिक देव की,
सब में भासे पुद्गल एक स्वभाव जब॥ 12॥

ऐसे प्राप्त करूँ जय चारित्र मोह पर,
पाऊँगा तब करण अपूरव भाव जब;
क्षायिक श्रेणी पर होऊँ-आरूढ़ जब,
अनन्यचिन्तन अतिशय शुद्धस्वभाव जब॥ 13॥

मोह स्वयंभूरमण उदधि को तैर कर,
प्राप्त करूँगा क्षीणमोह गुणस्थान जब;
अन्त समय में पूर्णरूप वीतराग हो,
प्रगटाऊँ निज केवलज्ञान निधान जब॥ 14॥

चार घातिया कर्मों का क्षय हो जहाँ,
हो भवतरु का बीज समूल विनाश जब;
सकल ज्ञेय का ज्ञाता दृष्टा मात्र हो,
कृत्यकृत्यप्रभु वीर्य अनन्तप्रकाश जब॥ 15॥

चार अघाति कर्म जहाँ वर्ते प्रभो,
जली जेवरीवत् हो आकृति मात्र जब;
जिनकी स्थिति आयुकर्म आधीन है,
आयुपूर्ण हो तो मिटता तन-पात्र जब॥ 16॥

मन-वच-काया अरु कर्मों की वर्गणा,
छूटे जहाँ सकल पुद्‌गल सम्बन्ध जब;
यही अयोगी गुणस्थान तक वर्तता,
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अबन्ध जब॥ 17॥

इक परमाणु मात्र की न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक विहीन अडोल स्वरूप जब;
शुद्ध निरञ्जन चेतन मूर्ति अनन्य मय,
अगुरुलघु अमूर्त सहज पदरूप जब॥ 18॥

पूर्व प्रयोगादिक कारक के योग से,
ऊर्ध्वगमन सिद्धालय में सुस्थित जब;
सादि अनन्त अनन्त समाधि सुख में,
अनन्तदर्शन ज्ञान अनन्त सहित जब॥ 19॥

जो पद झलके श्री जिनवर के ज्ञान में,
कह न सके पर वह भी श्री भगवान जब;
उस स्वरूप को अन्य वचन से क्या कहूँ,
अनुभवगोचर मात्र रहा वह ज्ञान जब॥ 20॥

यही परमपद पाने को धर ध्यान जब,
शक्ति विहीन अवस्था मनरथरूप जब;
तो भी निश्चय रायचन्द्र के मन रहा,
प्रभु आज्ञा से होऊँ वही स्वरूप जब॥ 21॥

(१०) वीर प्रभु के ये बोल ....

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले,
तुझ ही में डोले हाँ तुझ ही में डोले,
मन की तू घुण्डी को खोल, खोल खोल
खोल.............
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ टेक ॥

क्यों जाता गिरनार क्यों जाता काशी,
घट ही में है तेरे घट-घट का वासी,
अन्तर का कोना टटोल, टोल टोल टोल..................
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ 1 ॥

चारों कषायों को तूने है पाला,
आतम प्रभु को जो करती है काला,
इनकी तू सङ्गति को छोड़, छोड़ छोड़ छोड़.........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ 2 ॥

पर में जो ढूड़ा न भगवान पाया,
संसार को ही तूने बढ़ाया,
देखो निजातम की ओर, ओर ओर ओर.............
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ 3 ॥

मस्तों की दुनियाँ में तू मस्त हो जा,
आतम के रङ्ग में ऐसा तू रम जा,
आतम को आतम में घोल, घोल घोल घोल..............
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ 4 ॥

भगवान बनने की ताकत है तुझमें,
तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं,
ऐसी तू मान्यता को छोड़ छोड़ छोड़..........
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥ 5 ॥

(११) करले आतम ज्ञान .....

करले आतम ज्ञान परमातम बन जइये।
करले भेद-विज्ञान रे ज्ञानी बन जइये ॥ टेक ॥

जग झूठा और रिश्ते झूठे, रिश्ते झूठे नाते झूठे।
सांचो है आतमराम, परमातम बन जइये ॥ 1 ॥

कुन्दकुन्द आचार्य देव ने आतम तत्त्व बताया है।
शुद्धातम को जान, परमातम बन जइये ॥ 2 ॥

देह भिन्न है आतम भिन्न है, ज्ञान भिन्न है।
आतम को ही पहिचान, परमातम बन जइये ॥ 3 ॥

कुन्दकुन्द के ही प्रताप से, कहान गुरु के ही प्रताप से।
ध्रुव की धूम मची है रे,
ध्रुव का ध्यान लगाय, परमातम बन जइये ॥ 4 ॥

(१२) आत्मा हूँ आत्मा हूँ .....

आत्मा हूँ आत्मा हूँ आत्मा।
मैं सदा ज्ञायक-स्वभावी आत्मा.................. ॥ टेक ॥

शस्त्र से भी, मैं कभी कटता नहीं।
अग्नि से भी, मैं कभी जलता नहीं॥
जल गलाये तो कभी गलता नहीं॥ मैं सदा............ ॥ 1 ॥

चर्म चक्षु से कभी दिखता नहीं।
मूर्ख नर अज्ञान वश जाने नहीं।
ज्ञानियों की साध्य-साधक आत्मा॥ मैं सदा.......... ॥ 2 ॥

५ क्रोध माया मान से भी भिन्न हूँ।
लोभ अरु रागादि से भी भिन्न हूँ।
भाव कर्मों से रहित मैं आत्मा॥ मैं सदा............ ॥ 3 ॥

गोरा काला जो भी दिखता चाम है।
मोटा पतला होना उसका काम है।
सब शरीरों से रहित मैं आत्मा॥ मैं सदा............ ॥ 4 ॥

(१३) जैनधर्म है हमको प्यारा....

जैनधर्म है हमको प्यारा हम इसके अनुयायी है।
राग-भाव में धर्म मानना सबसे बड़ी हैरानी है॥
ज्ञान-दीप ले चल-चल, बनकर रहो अचल-अचल।
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र कर॥ टेक॥

चारों गतियों से टकराये, नरकों के दु:ख झेले हैं।
थावर विकलत्रय पशुगति, आदिक के पहने चोले हैं।
जिनवर सच्चा बोल रहा है, तत्त्व सभी आजाद हैं॥ 1॥

हम हैं शाश्वत आदि-अन्त बिन हम भगवन-सम-ज्ञानी है।
हम निज से हैं निज के कारण, निज के कर्तावान हैं।
उपादान से कार्य हमारा, पर करता अभिमान है॥ 2॥

(१४) ज्ञाता दृष्टा राही हूँ.....

ज्ञाता दृष्टा राही हूँ अतुल सुखों का ग्राही हूँ।
बोलो मेरे सङ्ग, आनन्दघन आनन्दघ॥ टेक॥

आत्मा में रमूंगा मैं क्षण-क्षण में,
चाहे मेरा ज्ञान जाने निज पर को।
अपने को जाने बिना लूँगा नहीं दम,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दु:ख में, दु:ख में सुख में एक राह पर चल— ॥ 1॥

धूप हो या गर्मी बरसात हो जहाँ,
अनुभव की धारा बहाऊँगा वहाँ।
विषयों का फिर नहीं होगा जनम,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दुःख में, दुःख में सुख में एक राह पर चल— ॥ 2 ॥

गुण अनन्त का स्वामी हूँ मैं मुझमें ये रतन,
गणधर भी हार गये कर वर्णन।
अनुपम और अद्‌भुत है मेरा ये चमन,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दुःख में, दुःख में सुख में एक राह पर चल— ॥ 3 ॥

(१५) करलो आतम-ज्ञान......

करलो आतम-ज्ञान, करलो भेद-विज्ञान।
आत्मस्वभाव में तू जमना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ टेक॥
पुण्य-उदय से यह भव पाया फिर भी विषयों में ललचाया।
विषय तजो निज हित करना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ 1॥

मैं त्रिकाल नहीं पर का स्वामी, सदा भिन्न चेतन जगनामी।
निज शाश्वत सुख को वरना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ 2॥

कार्य विकल्पों से नहीं होता, मूर्ख व्यर्थ ही बोझा ढोता।
निर्विकल्प निज को लखना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ 3॥

अक्षय पूर्ण स्वयं निज आतम, निर्विकल्प शाश्वत परमातम।
ऐसी श्रद्धा अब करना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ 4॥

प्रभुवर अब कुछ भी नहीं चाहूँ निज स्वभाव में ही रम जाऊँ।
ज्ञाता-दृष्टा अब रहना, फिर ना ये नर-तन धरना॥ 5॥

(१६) सन्त साधु बनके....

सन्त साधु बनके विचरूँ वह घड़ी कब आयेगी।
चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी॥ टेक॥

आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुःखी संसार से।
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी॥ 1॥

हाथ मैं पीछी कमण्डल, ध्यान आतम राम का।
छोड़कर घरबार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी॥ 2॥

पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परिषह भी सहूँ।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी॥ 3॥

बाह्य उपाधि त्याग कर निज तत्त्व का चिन्तन करूँ।
निर्विकल्प होवे समाधि वह घड़ी कब आयेगी॥ 4॥

भव-भ्रमण का नाश होवे इस दुःखी संसार से।
विचरूँ मैं निज आत्मा में, वह घड़ी कब आयेगी॥ 5॥

(१७) चन्द क्षण जीवन .....

चन्द क्षण जीवन के तेरे रह गये,
और तो विषयों में सारे बह गये ॥ टेक ॥

चक्रवर्ती भी न बच पाये यहाँ,
मृत्यु के उपरान्त जाएगा कहाँ ?
मौत की आँधी में तृण सम उड़ गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 1 ॥

अपनी रक्षा को बनाये कई महल,
किन्तु मृत्यु की रहे बेला अचल।
तास के पत्तों के घर सम ढह गये। चन्द क्षण..... ॥ 2 ॥

जाने कब जाना पड़े तन छोड़कर,
इष्ट मित्रों से सदा मुँह मोड़कर।
जानकर अनजान क्यों तुम बन गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 3 ॥

श्रद्धा मोती न मिला राही तुझे,
कंकरों का ही भरोसा है तुझे।
ज्ञान के सागर की तह तुम न गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 4 ॥

लक्ष्य था शिवपुर में जाने का बड़ा,
जिस समय माँ गर्भ में था तू पड़ा।
लक्ष्य क्यों अपना भुलाकर रह गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 5 ॥

छोड़ धन-दौलत सिकन्दर चल दिया।
आत्मा का हित जरा भी नहीं किया।
हीरे-मोती के खजाने रह गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 6 ॥

क्या तू लेकर आया था, क्या जायेगा।
तन भी एकदिन खाक में मिल जायेगा।
देह भी है ज्ञेय, ज्ञानी कह गये ॥ चन्द क्षण..... ॥ 7 ॥

ज्ञान का अन्दर समुन्दर बह रहा,
खोज सुख की मूढ़ बाहर का रहा।
क्यों चिदानन्द व्यर्थ में दुख सह रहे ॥ चन्द क्षण..... ॥ 8 ॥

(१८) जब तेरी डोली ....

जब तेरी डोली निकारी जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ॥ टेक ॥

उन हकीमों से यूँ कह दो बोलकर
जो दवा करते किताबें खोलकर।
ये दवा हरगिज न खाली जायेगी।
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ॥ 1 ॥

जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया
मरते दम लुकमान भी यूँ कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी।
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ॥ 2 ॥

ये मुसाफिर क्यों परसता हैं यहाँ
यह किराये का मिला तुझको मकां।

कोठरी खाली करा ली जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ॥ 3 ॥
चेत कर ओ भाई तुम प्रभु को भजो,
मोह रूपी नींद से जल्दी जगो,
आत्मा परमात्मा हो जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ॥ 4 ॥

(१९) तू जाग रे चेतन प्राणी.......

५ तू जाग रे चेतन प्राणी कर आतम की अगवानी।
जो आतम को लखते हैं उनकी है अमर कहानी॥ टेक॥
है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक जिसमें हैं ज्ञेय झलकते।
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहिं ज्ञेय महकते॥
मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी मेरी चैतन्य निशानी॥ 1॥
अब समकित सावन आया, चिन्मय आनन्द बरसता।
भीगा है कण-कण मेरा हो गई अखण्ड सरसता॥
समकित की मधु चितवन में झलकी है मुक्ति निशानी॥ 2॥
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शान्ति बरसती इनमें।
मानों आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें॥
मैं हू शिवपुर का वासी भव-भव की खतम कहानी॥ 3॥

(२०) देखो तो दिखाई देता है

तर्ज (जिस देश में गंगा बहती है)

देखो तो दिखाई देता हैजहाँ सहज ही आनन्द झरता है
हम उस ज्ञान के धारी हैं–2 जहाँ जगत प्रकाशित होता है।
व्यवहार में जब जीव जगता है तो निश्चय से सो जाता है।

जो जगता है परमारथ में संसार सभी कट जाता है।
जन–जन के लिए जिनवाणी माँ, अमृत सा पेय पिलाती है।
हम उस ज्ञान के धारी हैं–2 जहाँ जगत प्रकाशित होता है।
पर्याय बिना ना द्रव्य कोई, ना द्रव्य बिना पर्याय रहे–2

पर्याय झुके निज धाम लखो, सुख वीर्य सदा झरता ही रहे 2
ज्ञेयों से लिया कुछ नहीं हमने, ज्ञेयों को तो हम जानते हैं
हम उस ज्ञान के धारी हैं–2 जहाँ जगत प्रकाशित होता है।
निर्मम से मिली सम्यदृष्टि, शुद्धातम को पूजा हमने–2

हैं अन्य अन्य पर द्रव्य सभी उपयोग को भी जाना हमने 2
सिर्फ हम ही नहीं सारे जिनवर, अनन्त जिनागम कहता है
हम उस ज्ञान के धारी हैं–2 जहाँ जगत प्रकाशित होता है।

(२१) जीव तू अप्पा लगता है

तर्ज (कभी तू छलिया लगता है)

जीव तू अप्पा लगता है जीव तू ज्ञाता लगता है
जीव तू सिद्ध लगता है जीव स्वयंभू लगता है
तू जिस नय से समझे उस नय से पूरा है
मैं हूँ प्रमाण से पूर्ण सिद्ध, टूटा न जोड़ा है
जीव तू.........

आत्म प्रदेशों बीच में मलिनता न कोई
शुद्धात्म ही चाहूँगा, बनूँ मुक्ति राही-2
द्रव्य नाम नो कर्म को हथकड़ी लगेगी
चेतन सिंह जागा तो शक्तियाँ जगेगी-2
जीव तू नित्य लगता है जीव तू अनित्य लगता है
जीव तू भिन्न लगता है, जीव अभिन्न लगता है।
तू जिस नय से समझे......

स्यादवाद सिद्धान्तों को मान हम लेंगें
हम तो जग से भिन्न है, नाता तोड़ देंगे-2
निर्विकल्प दशा से मोक्ष की मंजिल
अतिन्द्रिय ज्ञान में भाये, हैं ये सब मिल-2
जीव तू अनुपम लगता है, जीव तू उज्ज्वल लगता है
जीव तू पावन लगता है जीव परमेश्वर लगता है
तू जिस नय से समझे..........

(२२) अपनो शुद्धातम.....

अपनो शुद्धातम भगवान देखो मंगलमयी।
मंगलमयी देखो, आनंदमयी ॥टेक॥

अक्षय अक्षातीत है, स्वसंवेदन गम्य।
परमानन्द उछलावता, अहो विकल्प अगम्य॥१॥

पर्याय दृष्टि का अरे, मत पकड़ो एकांत।
शुद्ध तत्व जाने बिना, होय न भव का अंत॥२॥

साक्षी में जिनराज की, जीवराज पहिचान।
होकर अन्तरमग्न हो, दशामाहिं भगवान॥३॥

तृप्त स्वयं में ही अहो, पर में नहीं उत्साह।
वे ही अन्तर आत्मा, मुक्तिपुरी के शाह॥४॥

(२३) प्रेम जब अनन्त हो गया,

तर्ज – (तुम तो ठहरे पर देसी..)

प्रेम जब अनन्त हो गया, रोम रोम सन्त हो गया।–2
ज्ञान चेतना जग गई, जीव भगवन्त हो गया॥
आतमा स्वभाव से महान, महान से महन्त हो गया।
साधना स्वभाव की जहाँ, साधुपन वहीं तो आयेगा।
शुद्ध स्वभाव का मनन जहाँ, मुनि वहीं शोभा पायेगा।
रत्नत्रय–2 लहर बहे, रत्न का करंड मिल गया॥टेक।

मोह भाव से न ज्ञान था, कौन हूँ मेरा है क्या स्वरूप?
राग-द्वेष ज्ञान के थे ज्ञेय, मैंने माना उनको आत्म रूप॥
भेदज्ञान-2 का गजब कमाल, आज मैं निहाल हो गया।टेक॥

शांति प्राप्ति के लिये किये, मैंने घोर अब तक तलकप्रयास।
छोड़ दी ग्रहस्थ जिंदगी, पाप-पुण्य छोड़ सुख बिलास॥
शांतिधाम-2 था स्वयं प्रभु, देखते प्रसन्न हो गया।टेक॥

गिलवा सिकवा कुछ नहीं रहा, जो भी होता होने योग्य ही।
कोई भी न कर्ता धर्ता है, जीव ज्ञान मात्र है सदैव॥
सब स्वतंत्रता से परणमित, देख मेरा मोक्ष हो गया।टेक॥

(२४) उठो रे सुज्ञानी जीव.......

उठो रे सुज्ञानी जीव, जिनगुण गाओ रे-3
निशि तो नसाई गई भानु को उद्योत भयो-2
ध्यान को लगाओ प्यारे नींद को भगाओ रे॥
उठो रे सुज्ञानी.......................

भववन चौरासी बीच, भ्रमे तो फिरत नीच-2
मोहजाल फन्द परयो, जन्म-मृत्यु पायो रे॥
उठो रे सुज्ञानी.......................

आरज पृथ्वी में आय, उत्तम जन्म पाये-2
श्रावक कुल को लहाये, मुक्ति क्यों न जाओ रे॥
उठो रे सुज्ञानी.......................

विषयनि राचि-राचि, बहुविधि पाप साचि-2
नरकनि जायके, अनेक दु:ख पायो रे॥
उठो रे सुज्ञानी.......................

पर को मिलाप त्यागि, आतम के जाप लागि-2
सुबुद्धि बताये गुरु, ज्ञान क्यों न लाओ रे॥
उठो रे सुज्ञानी.......................

(२५) चेतन है तू.....

चेतन है तू, ध्रुव ज्ञायक है तू।
अनन्त शक्ति का धारक है तू॥
सिद्धों का लघुनन्दन कहा, ५
मुक्तिपुरी का नायक है तू।
चेतन है तू....................

चार कषाय, दु:ख से भरी, तू इनसे दूर रहे,
पापों में जावे न मन दृष्टि निज में ही रहे।
चलो चलें अब मुक्ति की ओर,
पञ्चम गति के लायक है तू॥
चेतन है तू....................

श्री जिनवर से राह मिली, उस पर सदा चलना,
माँ जिनवाणी शरण सदा, बात हृदय रखना।
मुनिराजों संग केलि करे-2
मुक्ति वधु का नायक है तू॥
चेतन है तू....................

(२६) चलो रे भाई.......

(चलो रे भाई अपने वतन में चले)

चला रे भाई अपने वतन में चले
अपने वतन में तन ही नहीं है
तन ही नहीं है मन भी नहीं है
राग और द्वेष की दुविधा नहीं है
विषय कषायों का ताप नहीं है
दर्शन मोह को सुविधा नहीं है
सुख सरोवर बहे-चलो रे भाई अपने वतन में चले...

सिद्धों से होगी रिश्तेदारी
मंगलमय परिणति अविकारी
५ सादि अनंत सहज सुखकारी
सुख अनंत लहे-चलोरे भाई अपने वतन में चले...

मुनियों का मार्ग भाने लगा है
रत्नत्रय का रंग आने लगा है
सिद्ध ही होंगे चारों और - चलो रे भाई अपने वतन में चले...

मुक्ति के मार्ग में, मैं भी चलूँगा
वन खण्डादि में अचल रहूँगा
चाहे उपसर्ग आ जाये- चलो रे भाई अपने वतन में चले....

मोक्ष महल में हम सब मिलेंगे
मोक्ष महल में मैं भी रहूँगा
चार गति में अब ना रुलूँगा
वीतरागी वाणी सुहाय-चलो रे भाई अपने वतन में चले...

(२७) तू ही शुद्ध है.....

तू ही शुद्ध है, तू ही बुद्ध है, तू ही गुण अनंत की खान है
सुन चेतना अब जागना

कोई कर्म तुझको छुआ नहीं, तुझे कुछ भी तो हुआ नहीं (2)
तू ही ज्ञेय, ज्ञाता ज्ञान है, अंतर में तू भगवान है
सुन चेतना अब जागना....................

निःकलंक है निष्काम है, निर्वेद है निर्विकार है (2)
निर्दोष है, निष्पाप है, निर्लोभ निराकार है
सुन चेतना अब जागना....................

मेरे ज्ञान में सब ज्ञान है, तू सूर्य रश्मि खान है
उपयोग में उपयोग है, तू बन रहा अन्जान है
सुन चेतना अब जागना....................

तेरी आत्मा ध्रुव सिद्ध जो, परमात्मा से कम नहीं (2)
तू एक ज्ञायक भव बस, परिपूर्ण प्रभुतावान है
सुन चेतना अब जागना....................

(२८) अरहंत सुमर मन बावरे............

अरहंत सुमर मन बावरे अन्तर प्रभु लौ लाव रे॥ अरहंत॥

नरभव पाय अकारथ खोवै, विषय भोग जु बढ़ाव रे।
प्राण गये पछितैहै मनवा, छिन छिन छीजै आव रे ॥अरहंत॥१ ॥

जुवती तन धन सुत मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे।
यह संसार सुपन की माया, आँख मीचि दिखराव रे ॥अरहंत॥२ ॥

ध्याव ध्याव रे अब है दावरे, नाहीं मंगल गाव रे।
'द्यानत' बहुत कहाँ लौं कहिये, फेर न कछू उपाव रे ॥अरहंत॥३ ॥

(२९) लगी ला नाभिनंदनसों............

लगी लो नाभिनंदन सों।
जपत जेम चकोर चकई, चन्द भरता को॥

जाउ तन-धन जाउ जोवन, प्रान जाउ न क्यों।
एक प्रभु की भक्ति मेरे, रहो ज्यों की त्यों॥१ ॥

और देव अनेक सेवे, कछु न पायो हौं।
ज्ञान खोयो गाँठिको, धन करत कुवनिज ज्यों॥२ ॥

पुत्र-मित्र कलत्र ये सब, सगे अपनी गों।
नरक कूप उद्धरन श्रीजिन, समझ 'भूधर' यों॥३ ॥

(३०) मैं ज्ञायक हूँ.........

ज्ञायक भावना (तर्ज : मैं ज्ञानानंद स्वामी)

मैं ज्ञायक हूँ, मैं ज्ञायक हूँ, मैं परमानंद विधायक हूँ।
निजमें ही मंगल रूप सदा, अतीन्द्रिय सुख का नायक हूँ॥
जीवत्व, प्रभुत्व, विभुत्व सहित, कर्तव्य और भोकतृत्व रहित।
अनबद्ध स्पृष्ट अनन्य सदा मै निज पर का प्रगटायक हूँ॥
निज पर्यायें भी सहज घरूँ, पर रूप नहीं किंचित होता।
पर का परिणमन स्वयं ही है, पर कार्य हेतु नहीं लायक हूँ॥
मैं ज्ञायक हूँ...

मैं देवच नहीं, तिर्यंच नहीं, नारक भी नहीं, मनुष्य नहीं।
हूँ नित्य निरंजन देव सदा, रागादि दाह का दाहक हूँ॥
मैं ज्ञायक हूँ...

नहीं कोई शत्रु जगत में है, अरु मित्र नहीं कोई मेरा।
मैं पर द्रव्यों से भिन्न सदा काया से रहित अकायक हूँ॥
मैं ज्ञायक हूँ...

मैं निराबाध लोकोत्तम हूँ, अनुपम शीतल चित्त शक्ति मयी।
है यद्यपि बल अनंत मुझमें, पर परको में असहायक हूँ॥
मैं ज्ञायक हूँ...

नहीं कोई सुंदर शरण मुझे, है व्यर्थ भटकना बाहर में।
नहीं कोई मुझे मुक्ति दाता, मैं निज को मुक्ति प्रदायक हूँ॥
मैं ज्ञायक हूँ...

(३१) अविनाशी आत्म महल.....

अविनाशी आत्म महल चैतन्य प्रकाशमयी
तहाँ शाश्वत वास रहे चैतन्य विलासमयी

आनंद आनंद उछले सर्वांग प्रदेशों में
अद्‌भुत तृप्ति मिलती अपने ही अंतर में
अद्‌भुत आतम वैभव दीखे चैतन्यमयी........अविनाशी

करना कुछ कमी नहीं परिपूर्ण स्वयं में ही
उपजे विनशे परिणति स्वयमेव स्वयं में ही
ध्रुव ज्ञायक तो ध्रुव ही रहता प्रभु ज्ञायक ही.....अविनाशी

जेब भेद ज्ञान जगत ध्रुव ज्ञायक दृष्टि हो
पक्षातिक्रांत सहज ही शुद्धातम अनुभव हो
अनुभूति में आवे सहज ही अनुभूति मयी....अविनाशी

काषायिक भाव मिटे वैराग्य सहज प्रगटे
भव-भव के बंधन की आपद क्षण में विघटे
ज्ञाता ज्ञाता ही रहे नित परमानंद मयी...अविनाशी

निग्रंथ दशा होवे मंगलमय संवेदन
परिणति विज्ञानधन हो श्रेणी आरोहण
निष्कर्म निरामय हो तिष्ठे फिर मुक्ति माँहि...अविनाशी